जन्म कुंडली

नमूना व्यक्ति

18/06/1995 07:45:00

Pune, Maharashtra, India

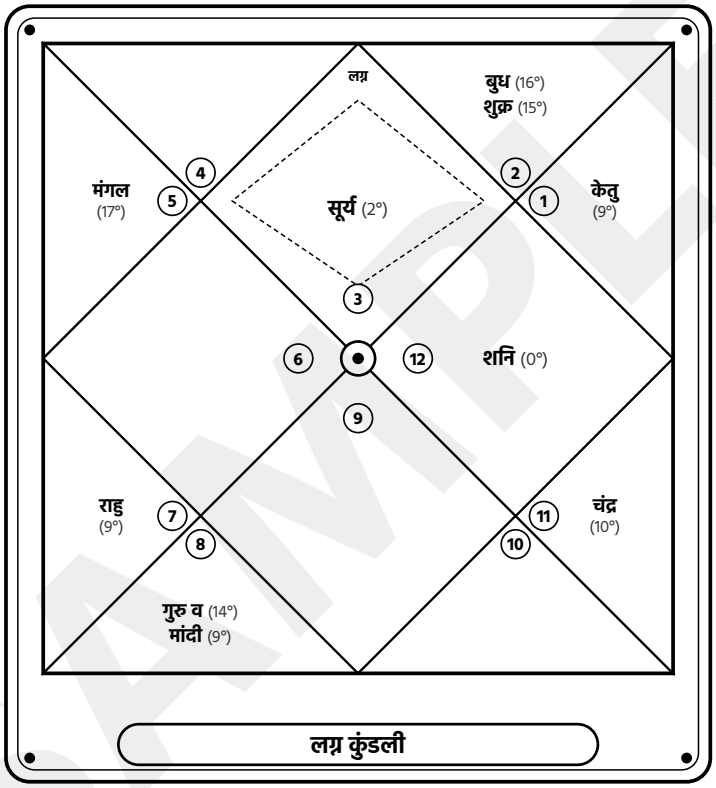

इस कुंडली में दोष:

चंद्र से मांगलिक दोष है (इसे सामान्यतः हल्का माना जाता है): मंगल आपके चंद्र से भाव 7 में है।

इनकी व्याख्या, उपायों सहित, आगे के पृष्ठों में दी गई है।

इस कुंडली की गणना सही करने में पूरी सावधानी बरती गई है। ज्योतिष व्याख्या की एक पारंपरिक पद्धति है, और यहाँ दी गई गणनाएँ तथा फलादेश बिना किसी भी प्रकार की गारंटी या वारंटी के, चाहे व्यक्त हो या निहित, दिए गए हैं। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले अपने विवेक का उपयोग करें, और चिकित्सा, कानूनी या आर्थिक मामलों में योग्य विशेषज्ञों से सलाह लें।

निर्मित: kyaboletaare.com

SAMPLE

जन्म विवरण

नाम	**नमूना व्यक्ति**	जन्म तिथि	**18/06/1995**
जन्म समय	**07:45:00**	स्थान	**Pune, Maharashtra, India**
अक्षांश / रेखांश	**18.5196 / 73.8554**	समय क्षेत्र	**UTC+05:30 IST**
जन्म का दिन	**रविवार**	सूर्योदय / सूर्यास्त	**06:00:17 / 19:12:48**
इष्टकाल (घटी)	**04:21:48**	अयनांश (लाहिड़ी)	**23:47:47**
लग्न	**मिथुन 25:50:01**	राशि (चंद्र राशि)	**कुंभ**
नक्षत्र	**शतभिषा (चरण 2)**	चंद्र राशि पाया	**रजत**
विंशोत्तरी शेष	**राहु 13 वर्ष 2 माह 10 दिन**		

जन्म के समय पंचांग

	जन्म के समय	आरंभ	समाप्ति
तिथि	**कृष्ण 6 (षष्ठी)**	17/06/1995 17:31	18/06/1995 16:05
नक्षत्र	**शतभिषा**	18/06/1995 01:31	19/06/1995 01:09
योग	**विष्कुंभ**	17/06/1995 10:57	18/06/1995 08:33
करण	**वणिज**	18/06/1995 04:42	18/06/1995 16:05
राशि	**कुंभ**	17/06/1995 14:00	19/06/1995 19:25

अवकहड़ा चक्र

वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युंजा	तत्व
शूद्र	मानव	अश्व	राक्षस	आदि	अंत्य	वायु

SAMPLE

निरयन ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	चरण	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	भाव	अवस्था
लग्न	मिथुन	25:50:01	पुनर्वसु	2	बुध	गुरु	केतु	1	-
सूर्य	मिथुन	02:36:43	मृगशिरा	3	बुध	मंगल	केतु	1	बाल
चंद्र	कुंभ	10:13:35	शतभिषा	2	शनि	राहु	गुरु	9	कुमार
मंगल	सिंह	17:38:50	पूर्वा फाल्गुनी	2	सूर्य	शुक्र	मंगल	3	युवा
बुध	वृषभ	16:02:25	रोहिणी	2	शुक्र	चंद्र	शनि	12	युवा
गुरु (व)	वृश्चिक	14:40:06	अनुराधा	4	मंगल	शनि	राहु	6	युवा
शुक्र	वृषभ	15:13:44	रोहिणी	2	शुक्र	चंद्र	गुरु	12	युवा
शनि	मीन	00:40:37	पूर्वा भाद्रपद	4	गुरु	गुरु	मंगल	10	मृत
राहु (व)	तुला	09:04:01	स्वाति	1	शुक्र	राहु	गुरु	5	कुमार
केतु (व)	मेष	09:04:01	अश्विनी	3	मंगल	केतु	गुरु	11	कुमार
यूरेनस (व)	मकर	05:56:35	उत्तराषाढ़ा	3	शनि	सूर्य	बुध	8	मृत
नेप्च्यून (व)	मकर	01:06:49	उत्तराषाढ़ा	2	शनि	सूर्य	राहु	8	मृत
प्लूटो (व)	वृश्चिक	04:40:32	अनुराधा	1	मंगल	शनि	शनि	6	मृत
मांदी	वृश्चिक	09:57:47	अनुराधा	2	मंगल	शनि	शुक्र	6	-
भाग्यबिंदु	मीन	03:26:53	उत्तरा भाद्रपद	1	गुरु	शनि	शनि	10	-

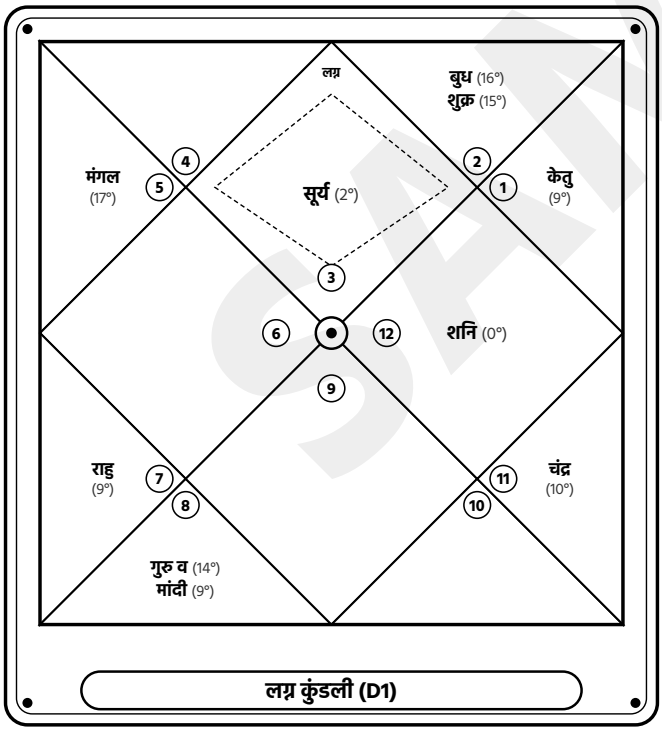

लग्न कुंडली (D1)

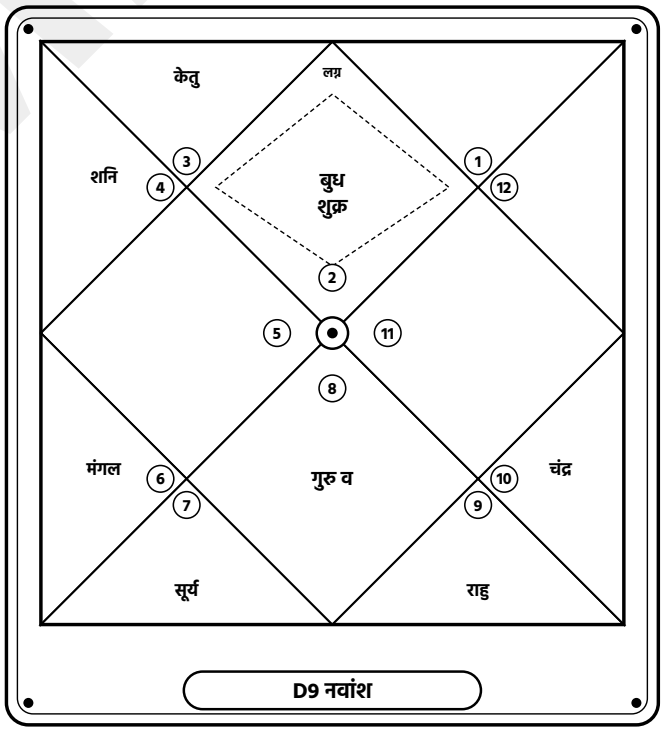

D9 नवांश

इस कुंडली में दोष:

चंद्र से मांगलिक दोष है (इसे सामान्यतः हल्का माना जाता है): मंगल आपके चंद्र से भाव 7 में है।

इनकी व्याख्या, उपायों सहित, आगे के पृष्ठों में दी गई है।

SAMPLE

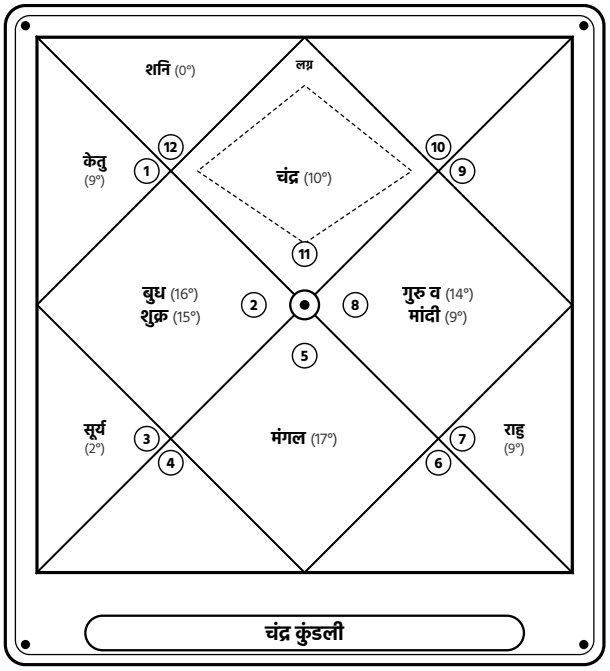

चंद्र कुंडली

वर्गोत्तम ग्रह: बुध, गुरु, शुक्र

SAMPLE

भाव चलित और के.पी. भाव-संधि

भाव	चलित आरंभ	चलित मध्य	के.पी. संधि	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी
1	मिथुन 09:59:59	मिथुन 25:50:01	मिथुन 25:50:01	बुध	गुरु	केतु
2	कर्क 09:59:59	कर्क 24:09:56	कर्क 20:58:34	चंद्र	बुध	शुक्र
3	सिंह 08:19:53	सिंह 22:29:51	सिंह 19:05:01	सूर्य	शुक्र	राहु
4	कन्या 06:39:48	कन्या 20:49:45	कन्या 20:49:45	बुध	चंद्र	शुक्र
5	तुला 06:39:48	तुला 22:29:51	तुला 24:06:36	शुक्र	गुरु	बुध
6	वृश्चिक 08:19:53	वृश्चिक 24:09:56	वृश्चिक 26:01:27	मंगल	बुध	राहु
7	धनु 09:59:59	धनु 25:50:01	धनु 25:50:01	गुरु	शुक्र	बुध
8	मकर 09:59:59	मकर 24:09:56	मकर 20:58:34	शनि	चंद्र	शुक्र
9	कुंभ 08:19:53	कुंभ 22:29:51	कुंभ 19:05:01	शनि	राहु	चंद्र
10	मीन 06:39:48	मीन 20:49:45	मीन 20:49:45	गुरु	बुध	शुक्र
11	मेष 06:39:48	मेष 22:29:51	मेष 24:06:36	मंगल	शुक्र	बुध
12	वृषभ 08:19:53	वृषभ 24:09:56	वृषभ 26:01:27	शुक्र	मंगल	राहु

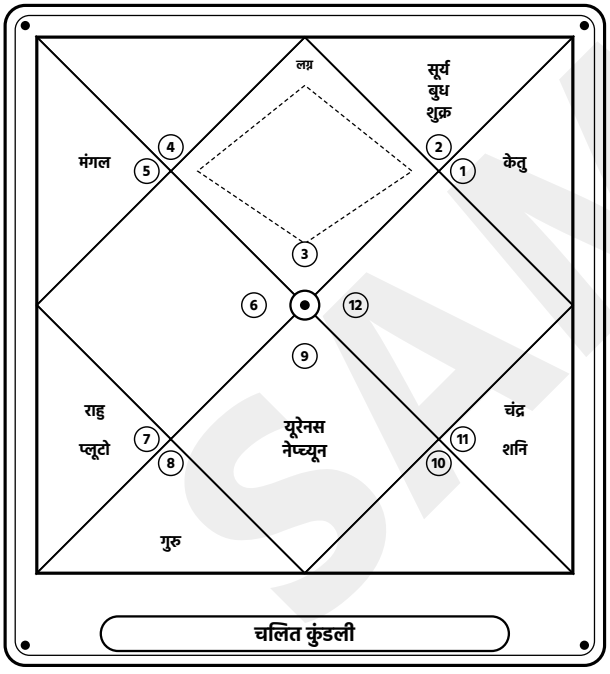

चलित कुंडली

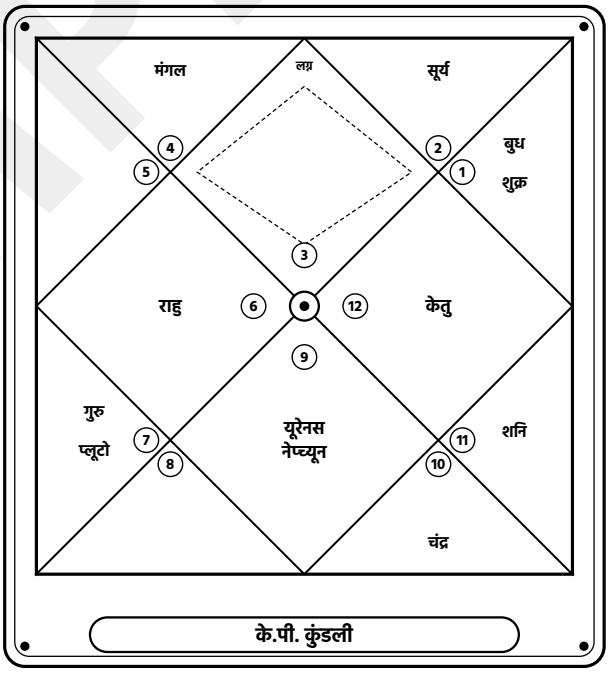

के.पी. कुंडली

SAMPLE

षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (1/4)

हर वर्ग कुंडली जीवन के किसी एक क्षेत्र को अधिक बारीकी से देखती है। D1 मुख्य जन्म कुंडली है; विवाह और भीतरी बल के लिए D9 (नवांश) और करियर के लिए D10 (दशमांश) देखी जाती है।

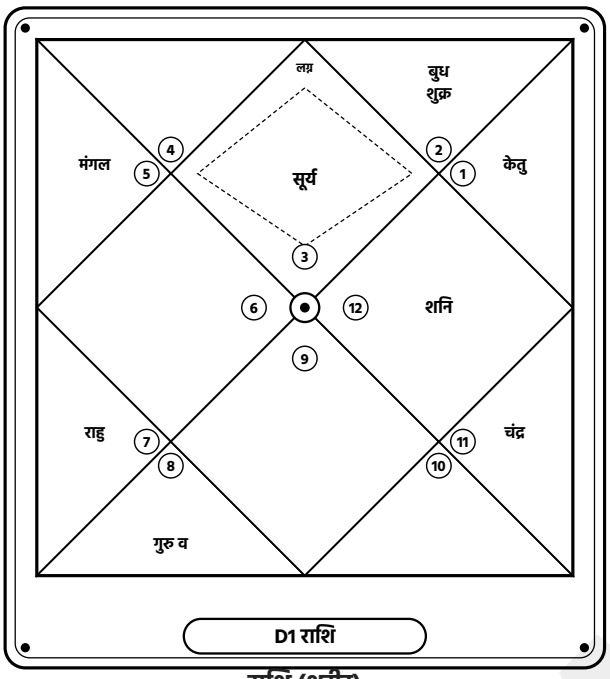

राशि (शरीर)

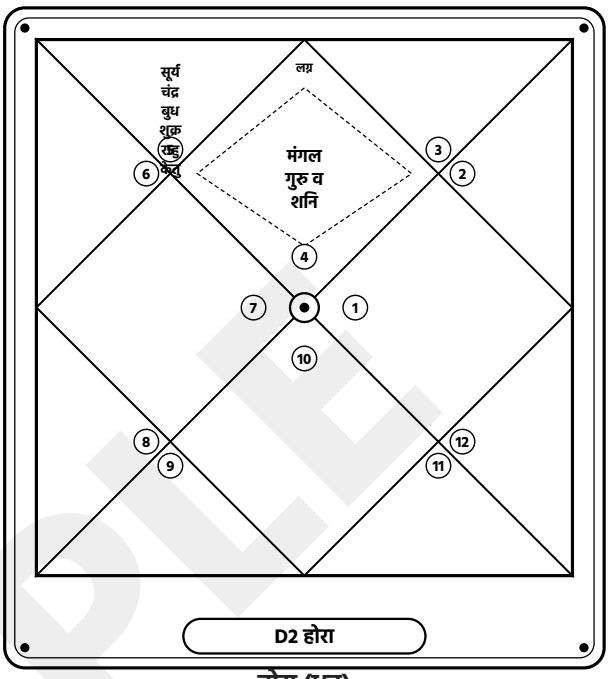

होरा (धन)

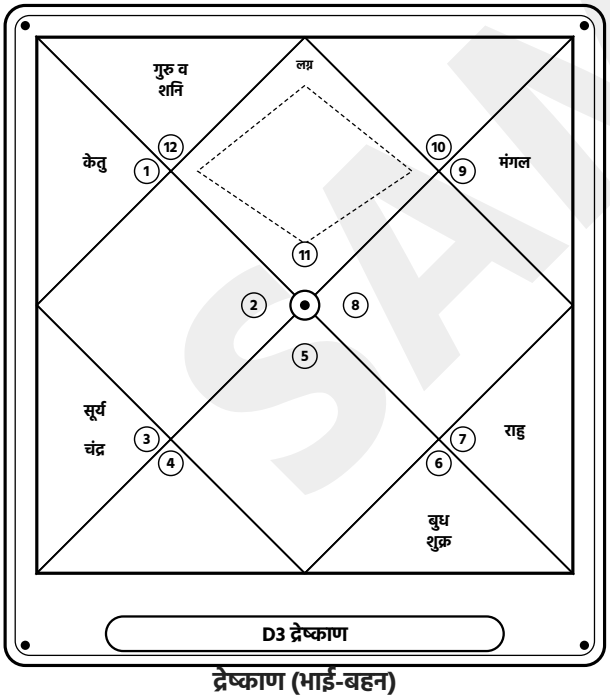

द्रेष्काण (भाई-बहन)

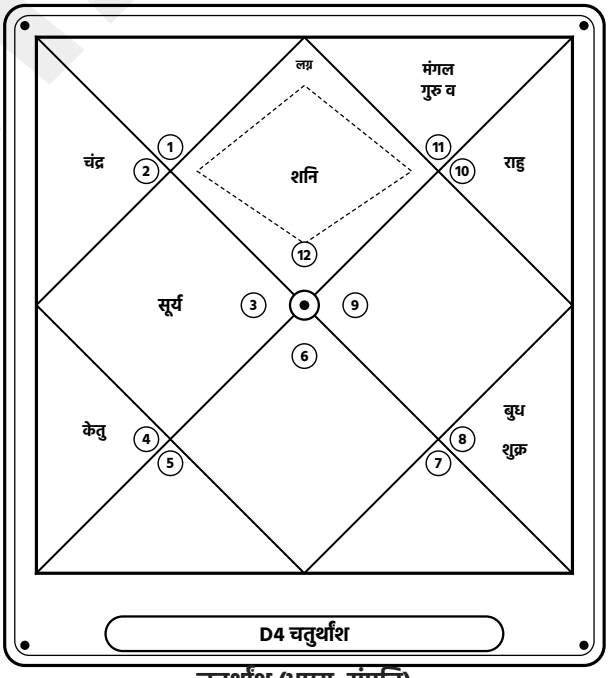

चतुर्थांश (भाग्य, संपत्ति)

SAMPLE

षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (2/4)

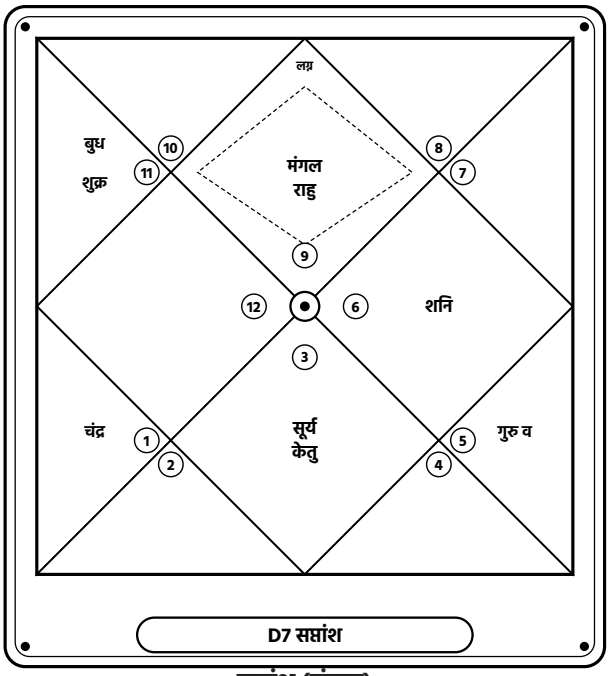

सप्तांश (संतान)

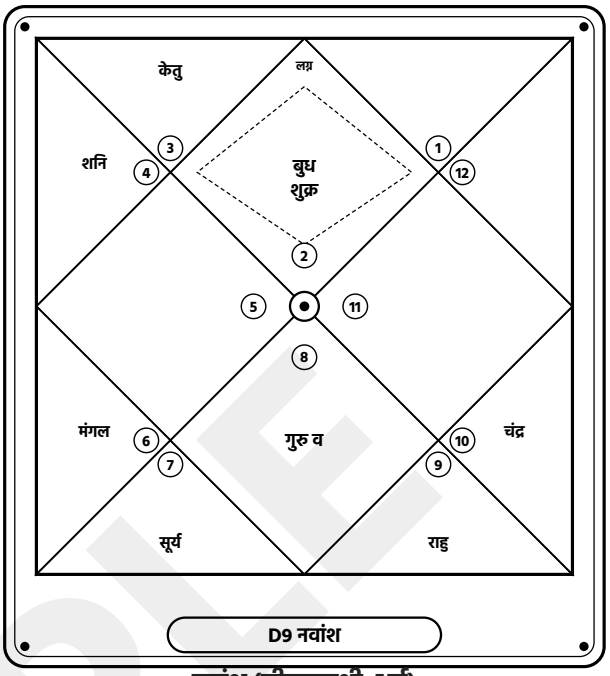

नवांश (जीवनसाथी, धर्म)

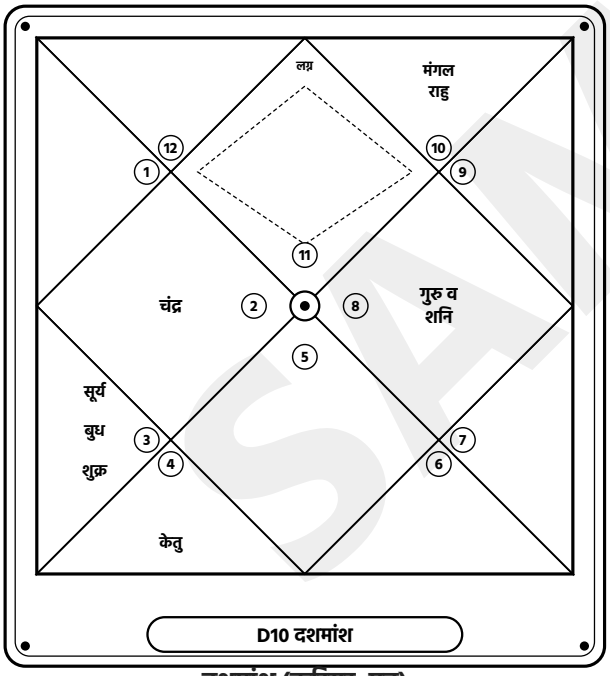

दशमांश (करियर, पद)

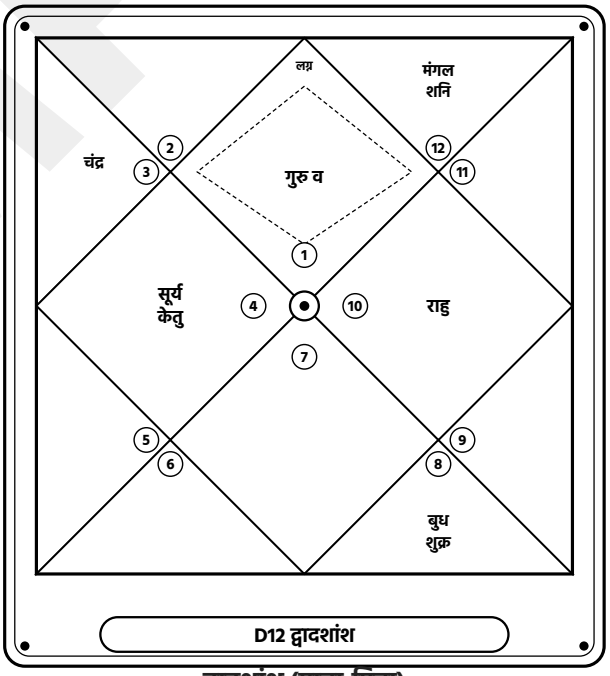

द्वादशांश (माता-पिता)

SAMPLE

षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (3/4)

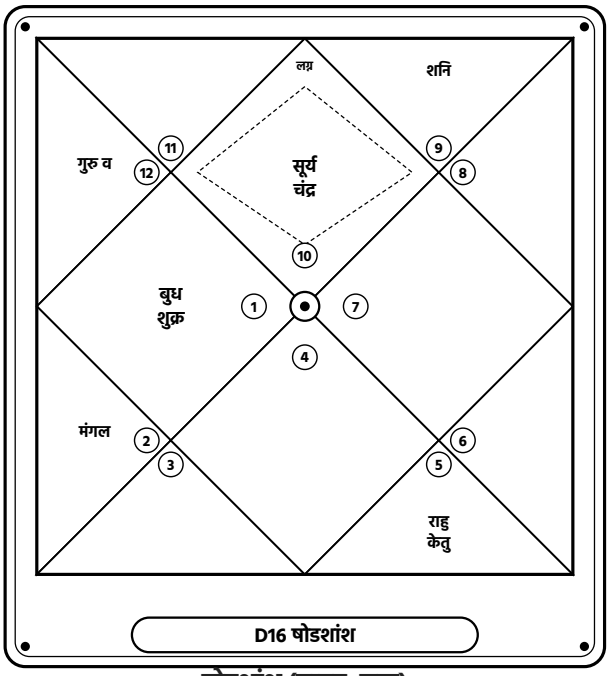

षोडशांश (वाहन, सुख)

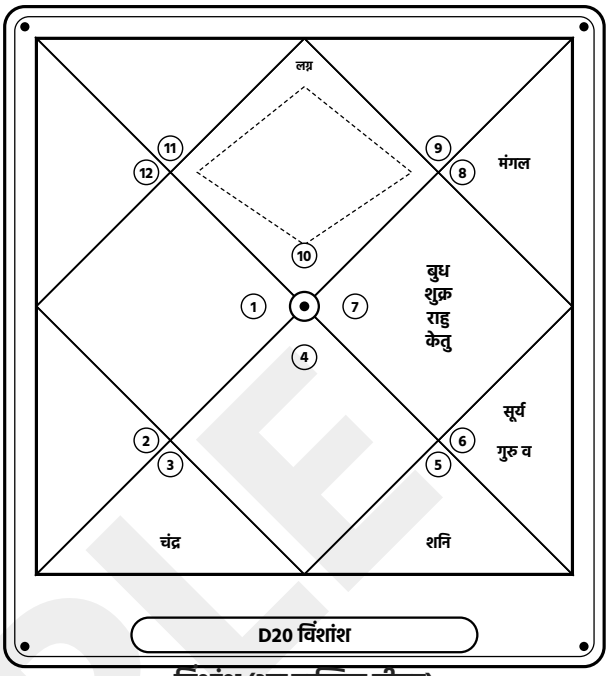

विंशांश (आध्यात्मिक जीवन)

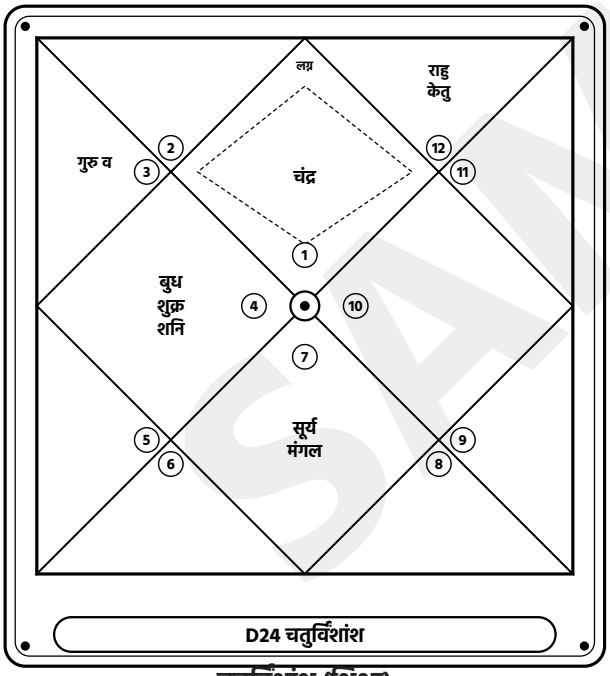

चतुर्विंशांश (शिक्षा)

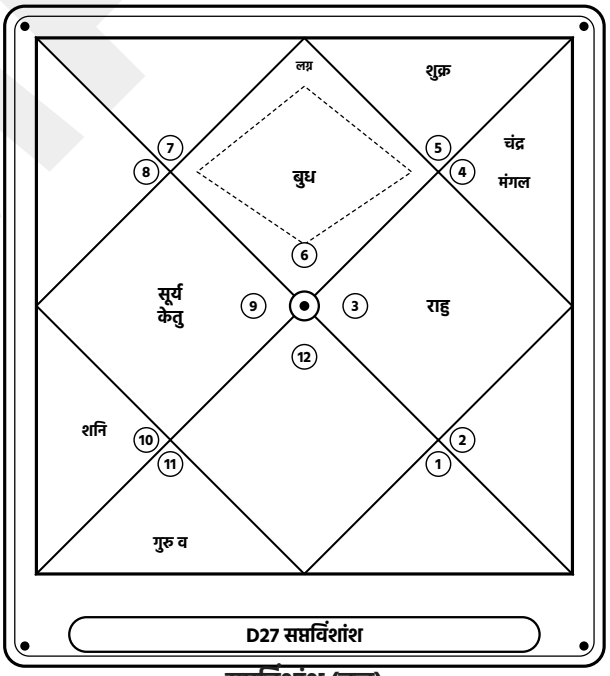

सप्तविंशांश (बल)

SAMPLE

षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (4/4)

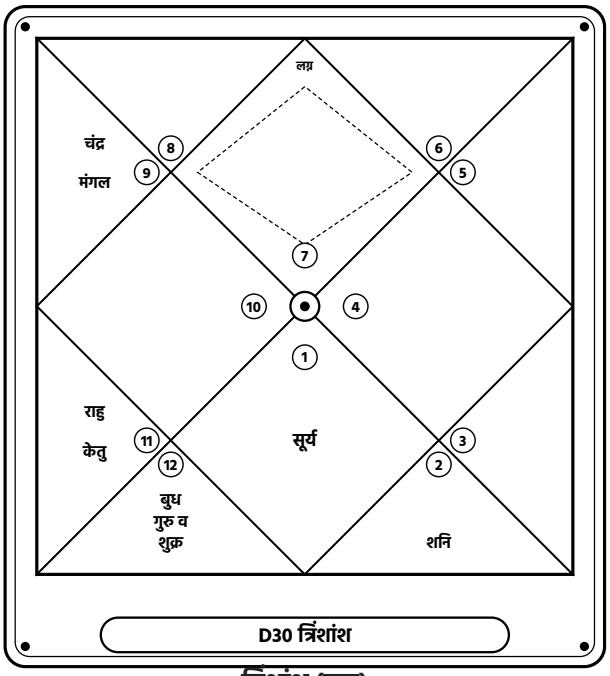

त्रिंशांश (कष्ट)

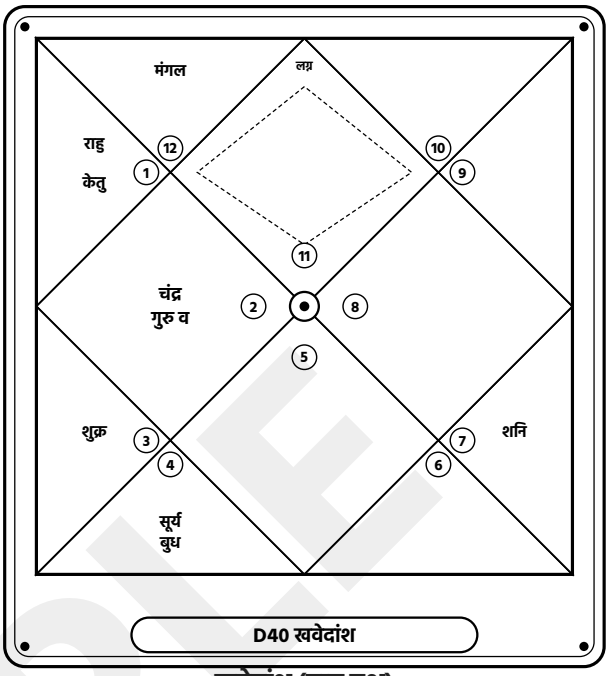

खवेदांश (मातृ पक्ष)

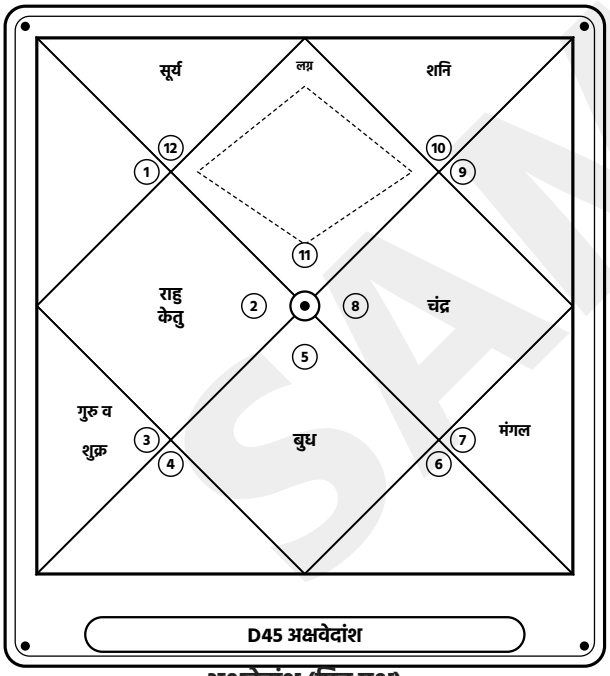

अक्षवेदांश (पितृ पक्ष)

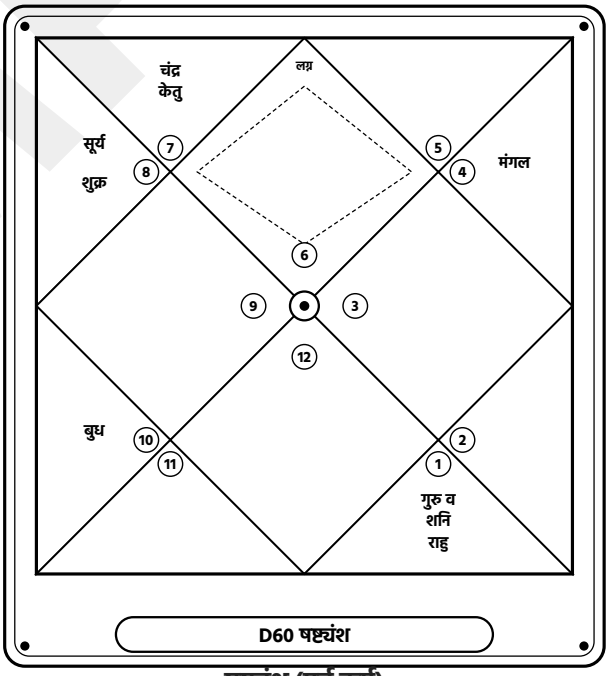

षष्ट्यंश (पूर्व कर्म)

SAMPLE

सोलह वर्ग कुंडलियाँ आपको क्या बताती हैं

जो ग्रह कई वर्ग कुंडलियों में अपनी या उच्च राशि में आता है, वह भरोसेमंद होता है: वह जिन बातों का कारक है, उनके फल जीवन के कई क्षेत्रों में स्थिर मिलते हैं। जो ग्रह अक्सर नीच राशि में आता है, उन क्षेत्रों में उसे अधिक धैर्य और सहारे की आवश्यकता होती है।

कुंडली	इसमें लग्न	स्व / उच्च राशि	नीच राशि
D1 राशि	मिथुन	शुक्र	–
D2 होरा	कर्क	सूर्य, गुरु	मंगल
D3 द्रेष्काण	कुंभ	बुध, गुरु	शुक्र
D4 चतुर्थांश	मीन	चंद्र	–
D7 सप्तांश	धनु	–	–
D9 नवांश	वृषभ	शुक्र	सूर्य
D10 दशमांश	कुंभ	चंद्र, मंगल, बुध	–
D12 द्वादशांश	मेष	–	–
D16 षोडशांश	मकर	गुरु	–
D20 विंशांश	मकर	मंगल, शुक्र	–
D24 चतुर्विंशांश	मेष	–	सूर्य
D27 सप्तविंशांश	कन्या	चंद्र, बुध, शनि	मंगल
D30 त्रिंशांश	तुला	सूर्य, गुरु, शुक्र	बुध
D40 खवेदांश	कुंभ	चंद्र, शनि	–
D45 अक्षवेदांश	कुंभ	शनि	चंद्र
D60 षष्ट्यंश	कन्या	–	मंगल, शनि

ग्रह	स्व / उच्च राशि में (16 में से)	नीच राशि में (16 में से)
सूर्य	2	2
चंद्र	4	1
मंगल	2	3
बुध	3	1
गुरु	4	0
शुक्र	4	1
शनि	3	1

चंद्र, गुरु, शुक्र सबसे अधिक वर्ग कुंडलियों (16 में से 4) में अपनी या उच्च राशि में है, इसलिए यह जिन बातों का स्वामी है उन्हें जीवन के कई क्षेत्रों में सहारा मिलता है।

मंगल 16 में से 3 कुंडलियों में नीच राशि में है। इसकी बातों में धैर्य, लगातार प्रयास और इस रिपोर्ट में दिए उपायों की आवश्यकता है।

वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि, जिससे अतिरिक्त बल मिलता है): बुध, गुरु, शुक्र।

SAMPLE

विंशोत्तरी अंतर्दशा

भोग्य दशा : राहु – 13 वर्ष, 2 माह, 10 दिन

राहु (18)
18/06/1995 – 27/08/2008

–			
S+	गुरु	03/10/1995	0
S*	शनि	09/08/1998	3
*	बुध	26/02/2001	5
s-	केतु	16/03/2002	6
*	शुक्र	16/03/2005	9
--	सूर्य	08/02/2006	10
--	चंद्र	10/08/2007	12
*	मंगल	27/08/2008	13

गुरु (16)
27/08/2008 – 27/08/2024

s	गुरु	15/10/2010	15
-	शनि	28/04/2013	17
--	बुध	04/08/2015	20
-	केतु	09/07/2016	21
--	शुक्र	11/03/2019	23
*	सूर्य	28/12/2019	24
S++	चंद्र	28/04/2021	25
S++	मंगल	04/04/2022	26
S+	राहु	27/08/2024	29

शनि (19)
27/08/2024 – 28/08/2043

S	शनि	31/08/2027	32
++	बुध	10/05/2030	34
s++	केतु	19/06/2031	36
++	शुक्र	19/08/2034	39
*	सूर्य	01/08/2035	40
*	चंद्र	01/03/2037	41
--	मंगल	10/04/2038	42
s*	राहु	14/02/2041	45
-	गुरु	28/08/2043	48

बुध (17)
28/08/2043 – 27/08/2060

	बुध	24/01/2046	50
+	केतु	21/01/2047	51
*	शुक्र	21/11/2049	54
S++	सूर्य	27/09/2050	55
S*	चंद्र	27/02/2052	56
S+	मंगल	23/02/2053	57
S*	राहु	12/09/2055	60
S-	गुरु	18/12/2057	62
+	शनि	27/08/2060	65

केतु (7)
27/08/2060 – 28/08/2067

s	केतु	24/01/2061	65
++	शुक्र	26/03/2062	66
*	सूर्य	01/08/2062	67
*	चंद्र	02/03/2063	67
*	मंगल	29/07/2063	68
-	राहु	15/08/2064	69
-	गुरु	22/07/2065	70
++	शनि	31/08/2066	71
+	बुध	28/08/2067	72

शुक्र (20)
28/08/2067 – 28/08/2087

s	शुक्र	28/12/2070	75
*	सूर्य	28/12/2071	76
*	चंद्र	28/08/2073	78
+	मंगल	28/10/2074	79
*	राहु	28/10/2077	82
S-	गुरु	28/06/2080	85
S++	शनि	28/08/2083	88
S*	बुध	28/06/2086	91
S++	केतु	28/08/2087	92

सूर्य (6)
28/08/2087 – 28/08/2093

	सूर्य	16/12/2087	92
*	चंद्र	16/06/2088	92
s++	मंगल	21/10/2088	93
--	राहु	15/09/2089	94
s*	गुरु	04/07/2090	95
s*	शनि	16/06/2091	95
+	बुध	22/04/2092	96
*	केतु	28/08/2092	97
*	शुक्र	28/08/2093	98

चंद्र (10)
28/08/2093 – 29/08/2103

	चंद्र	28/06/2094	99
-	मंगल	27/01/2095	99
--	राहु	28/07/2096	101
+	गुरु	27/11/2097	102
s+	शनि	29/06/2099	104
++	बुध	28/11/2100	105
*	केतु	29/06/2101	106
+	शुक्र	28/02/2103	107
*	सूर्य	29/08/2103	108

मंगल (7)
29/08/2103 – 29/08/2110

	मंगल	26/01/2104	108
*	राहु	12/02/2105	109
++	गुरु	19/01/2106	110
-	शनि	28/02/2107	111
*	बुध	25/02/2108	112
S*	केतु	23/07/2108	113
S+	शुक्र	22/09/2109	114
S++	सूर्य	28/01/2110	114
S*	चंद्र	29/08/2110	115

टिप्पणी: दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

विंशोत्तरी प्रत्यंतर दशा

महादशा – शनि : 27/08/2024 – 28/08/2043

S शनि 31/08/2027		
S	शनि	17/02/2025
S++	बुध	23/07/2025
S++	केतु	25/09/2025
S++	शुक्र	27/03/2026
S*	सूर्य	21/05/2026
S*	चंद्र	21/08/2026
S--	मंगल	24/10/2026
S*	राहु	07/04/2027
-	गुरु	31/08/2027

++ बुध 10/05/2030		
S	बुध	17/01/2028
S+	केतु	15/03/2028
*	शुक्र	26/08/2028
++	सूर्य	14/10/2028
*	चंद्र	04/01/2029
+	मंगल	02/03/2029
*	राहु	27/07/2029
s-	गुरु	06/12/2029
+	शनि	10/05/2030

s++ केतु 19/06/2031		
s	केतु	03/06/2030
s++	शुक्र	09/08/2030
s*	सूर्य	30/08/2030
s*	चंद्र	02/10/2030
s*	मंगल	26/10/2030
s-	राहु	26/12/2030
s-	गुरु	18/02/2031
s++	शनि	23/04/2031
s+	बुध	19/06/2031

++ शुक्र 19/08/2034		
s	शुक्र	29/12/2031
s*	सूर्य	25/02/2032
s*	चंद्र	31/05/2032
+	मंगल	06/08/2032
*	राहु	27/01/2033
-	गुरु	30/06/2033
++	शनि	30/12/2033
*	बुध	12/06/2034
++	केतु	19/08/2034

*** सूर्य** 01/08/2035		
	सूर्य	05/09/2034
*	चंद्र	04/10/2034
++	मंगल	24/10/2034
--	राहु	15/12/2034
*	गुरु	30/01/2035
*	शनि	26/03/2035
+	बुध	15/05/2035
*	केतु	04/06/2035
*	शुक्र	01/08/2035

*** चंद्र** 01/03/2037		
	चंद्र	18/09/2035
-	मंगल	22/10/2035
--	राहु	16/01/2036
+	गुरु	02/04/2036
+	शनि	03/07/2036
++	बुध	23/09/2036
*	केतु	27/10/2036
+	शुक्र	31/01/2037
*	सूर्य	01/03/2037

-- मंगल 10/04/2038		
	मंगल	25/03/2037
*	राहु	24/05/2037
++	गुरु	17/07/2037
-	शनि	19/09/2037
*	बुध	16/11/2037
*	केतु	09/12/2037
+	शुक्र	15/02/2038
++	सूर्य	07/03/2038
*	चंद्र	10/04/2038

s* राहु 14/02/2041		
	राहु	13/09/2038
s+	गुरु	30/01/2039
*	शनि	14/07/2039
s*	बुध	08/12/2039
s-	केतु	07/02/2040
s*	शुक्र	29/07/2040
s--	सूर्य	19/09/2040
s--	चंद्र	15/12/2040
s*	मंगल	14/02/2041

- गुरु 28/08/2043		
s	गुरु	17/06/2041
s-	शनि	11/11/2041
--	बुध	22/03/2042
-	केतु	15/05/2042
--	शुक्र	16/10/2042
*	सूर्य	01/12/2042
++	चंद्र	16/02/2043
++	मंगल	11/04/2043
+	राहु	28/08/2043

टिप्पणी: दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

विंशोत्तरी प्रत्यंतर दशा

महादशा – बुध : 28/08/2043 – 27/08/2060

बुध 24/01/2046		
	बुध	31/12/2043
+	केतु	20/02/2044
*	शुक्र	16/07/2044
++	सूर्य	29/08/2044
*	चंद्र	10/11/2044
+	मंगल	31/12/2044
*	राहु	12/05/2045
-	गुरु	06/09/2045
+	शनि	24/01/2046

+ केतु 21/01/2047		
	केतु	14/02/2046
++	शुक्र	15/04/2046
*	सूर्य	03/05/2046
*	चंद्र	03/06/2046
*	मंगल	24/06/2046
-	राहु	17/08/2046
-	गुरु	04/10/2046
++	शनि	01/12/2046
+	बुध	21/01/2047

*** शुक्र** 21/11/2049		
	शुक्र	12/07/2047
*	सूर्य	02/09/2047
*	चंद्र	27/11/2047
+	मंगल	27/01/2048
*	राहु	30/06/2048
-	गुरु	15/11/2048
++	शनि	28/04/2049
*	बुध	22/09/2049
++	केतु	21/11/2049

S++ सूर्य 27/09/2050		
	सूर्य	06/12/2049
S*	चंद्र	01/01/2050
S++	मंगल	19/01/2050
S--	राहु	07/03/2050
S*	गुरु	17/04/2050
S*	शनि	06/06/2050
S+	बुध	19/07/2050
S*	केतु	07/08/2050
S*	शुक्र	27/09/2050

S* चंद्र 27/02/2052		
S	चंद्र	09/11/2050
S-	मंगल	10/12/2050
S--	राहु	25/02/2051
S+	गुरु	05/05/2051
S+	शनि	26/07/2051
S++	बुध	07/10/2051
S*	केतु	07/11/2051
S+	शुक्र	01/02/2052
S*	सूर्य	27/02/2052

S+ मंगल 23/02/2053		
S	मंगल	19/03/2052
S*	राहु	12/05/2052
S++	गुरु	30/06/2052
S-	शनि	26/08/2052
S*	बुध	16/10/2052
S*	केतु	06/11/2052
S+	शुक्र	06/01/2053
S++	सूर्य	24/01/2053
S*	चंद्र	23/02/2053

S* राहु 12/09/2055		
S	राहु	13/07/2053
S+	गुरु	14/11/2053
S*	शनि	10/04/2054
S*	बुध	20/08/2054
S-	केतु	14/10/2054
S*	शुक्र	18/03/2055
S--	सूर्य	03/05/2055
S--	चंद्र	20/07/2055
S*	मंगल	12/09/2055

S- गुरु 18/12/2057		
S	गुरु	01/01/2056
S-	शनि	11/05/2056
S--	बुध	05/09/2056
S-	केतु	23/10/2056
S--	शुक्र	10/03/2057
S*	सूर्य	21/04/2057
++	चंद्र	29/06/2057
++	मंगल	16/08/2057
+	राहु	18/12/2057

+ शनि 27/08/2060		
	शनि	23/05/2058
++	बुध	09/10/2058
++	केतु	06/12/2058
++	शुक्र	18/05/2059
s*	सूर्य	07/07/2059
s*	चंद्र	27/09/2059
s--	मंगल	23/11/2059
s*	राहु	18/04/2060
s-	गुरु	27/08/2060

टिप्पणी: दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

अष्टोत्तरी अंतर्दशा

भोग्य दशा : गुरु – 10 वर्ष, 11 माह, 21 दिन

गुरु (19)
18/06/1995 – 09/06/2006

–			
–			
S--	**शुक्र**	01/08/1996	1
S*	**सूर्य**	22/08/1997	2
++	**चंद्र**	12/04/2000	4
s++	**मंगल**	08/09/2001	6
s--	**बुध**	04/09/2004	9
-	**शनि**	09/06/2006	10

राहु (12)
09/06/2006 – 09/06/2018

	राहु	09/10/2007	12
*	**शुक्र**	07/02/2010	14
s--	**सूर्य**	09/10/2010	15
s--	**चंद्र**	08/06/2012	16
*	**मंगल**	29/04/2013	17
*	**बुध**	20/03/2015	19
*	**शनि**	29/04/2016	20
+	**गुरु**	09/06/2018	22

शुक्र (21)
09/06/2018 – 09/06/2039

S	**शुक्र**	09/07/2022	27
S*	**सूर्य**	08/09/2023	28
S*	**चंद्र**	09/08/2026	31
S+	**मंगल**	28/02/2028	32
*	**बुध**	19/06/2031	36
++	**शनि**	30/05/2033	37
-	**गुरु**	07/02/2037	41
*	**राहु**	09/06/2039	43

सूर्य (6)
09/06/2039 – 09/06/2045

s	**सूर्य**	09/10/2039	44
s*	**चंद्र**	08/08/2040	45
s++	**मंगल**	18/01/2041	45
s+	**बुध**	29/12/2041	46
*	**शनि**	20/07/2042	47
*	**गुरु**	09/08/2043	48
--	**राहु**	09/04/2044	48
*	**शुक्र**	09/06/2045	49

चंद्र (15)
09/06/2045 – 09/06/2060

	चंद्र	10/07/2047	52
-	**मंगल**	19/08/2048	53
++	**बुध**	29/12/2050	55
S+	**शनि**	19/05/2052	56
S+	**गुरु**	08/01/2055	59
S--	**राहु**	08/09/2056	61
+	**शुक्र**	09/08/2059	64
s*	**सूर्य**	09/06/2060	64

मंगल (8)
09/06/2060 – 09/06/2068

s	**मंगल**	11/01/2061	65
*	**बुध**	16/04/2062	66
-	**शनि**	12/01/2063	67
++	**गुरु**	09/06/2064	68
*	**राहु**	29/04/2065	69
+	**शुक्र**	19/11/2066	71
++	**सूर्य**	30/04/2067	71
*	**चंद्र**	09/06/2068	72

बुध (17)
09/06/2068 – 09/06/2085

s	**बुध**	11/02/2071	75
+	**शनि**	08/09/2072	77
-	**गुरु**	05/09/2075	80
*	**राहु**	26/07/2077	82
S*	**शुक्र**	15/11/2080	85
S++	**सूर्य**	26/10/2081	86
S*	**चंद्र**	06/03/2084	88
S+	**मंगल**	09/06/2085	89

शनि (10)
09/06/2085 – 10/06/2095

S	**शनि**	13/05/2086	90
-	**गुरु**	15/02/2088	92
s*	**राहु**	27/03/2089	93
s++	**शुक्र**	07/03/2091	95
*	**सूर्य**	26/09/2091	96
*	**चंद्र**	14/02/2093	97
--	**मंगल**	12/11/2093	98
++	**बुध**	10/06/2095	99

टिप्पणी: दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

अष्टोत्तरी प्रत्यंतर दशा

महादशा – शुक्र : 09/06/2018 – 09/06/2039

S शुक्र 09/07/2022		
	शुक्र	26/03/2019
*	सूर्य	17/06/2019
*	चंद्र	10/01/2020
S+	मंगल	29/04/2020
S*	बुध	20/12/2020
S++	शनि	07/05/2021
S-	गुरु	25/01/2022
S*	राहु	09/07/2022

S* सूर्य 08/09/2023		
S	सूर्य	02/08/2022
S*	चंद्र	30/09/2022
S++	मंगल	01/11/2022
S+	बुध	07/01/2023
S*	शनि	15/02/2023
S*	गुरु	01/05/2023
S--	राहु	18/06/2023
S*	शुक्र	08/09/2023

S* चंद्र 09/08/2026		
S	चंद्र	03/02/2024
S-	मंगल	22/04/2024
S++	बुध	07/10/2024
S+	शनि	14/01/2025
S+	गुरु	20/07/2025
S--	राहु	15/11/2025
S+	शुक्र	11/06/2026
S*	सूर्य	09/08/2026

S+ मंगल 28/02/2028		
S	मंगल	20/09/2026
S*	बुध	18/12/2026
S-	शनि	09/02/2027
S++	गुरु	20/05/2027
*	राहु	22/07/2027
+	शुक्र	10/11/2027
S++	सूर्य	11/12/2027
S*	चंद्र	28/02/2028

*** बुध** 19/06/2031		
	बुध	05/09/2028
+	शनि	26/12/2028
-	गुरु	26/07/2029
s*	राहु	07/12/2029
*	शुक्र	30/07/2030
s++	सूर्य	05/10/2030
s*	चंद्र	22/03/2031
s+	मंगल	19/06/2031

++ शनि 30/05/2033		
s	शनि	24/08/2031
s-	गुरु	27/12/2031
s*	राहु	15/03/2032
s++	शुक्र	31/07/2032
*	सूर्य	09/09/2032
*	चंद्र	16/12/2032
--	मंगल	07/02/2033
++	बुध	30/05/2033

- गुरु 07/02/2037		
	गुरु	22/01/2034
+	राहु	21/06/2034
--	शुक्र	10/03/2035
*	सूर्य	24/05/2035
++	चंद्र	28/11/2035
++	मंगल	07/03/2036
--	बुध	05/10/2036
-	शनि	07/02/2037

*** राहु** 09/06/2039		
	राहु	13/05/2037
*	शुक्र	25/10/2037
--	सूर्य	12/12/2037
--	चंद्र	09/04/2038
*	मंगल	11/06/2038
*	बुध	23/10/2038
s*	शनि	10/01/2039
s+	गुरु	09/06/2039

महादशा – सूर्य : 09/06/2039 – 09/06/2045

s सूर्य 09/10/2039		
	सूर्य	16/06/2039
*	चंद्र	03/07/2039
++	मंगल	12/07/2039
s+	बुध	31/07/2039
s*	शनि	11/08/2039
s*	गुरु	02/09/2039
s--	राहु	15/09/2039
s*	शुक्र	09/10/2039

s* चंद्र 08/08/2040		
s	चंद्र	20/11/2039
s-	मंगल	13/12/2039
s++	बुध	30/01/2040
s+	शनि	27/02/2040
s+	गुरु	20/04/2040
s--	राहु	24/05/2040
s+	शुक्र	22/07/2040
s*	सूर्य	08/08/2040

s++ मंगल 18/01/2041		
s	मंगल	20/08/2040
s*	बुध	15/09/2040
s-	शनि	30/09/2040
s++	गुरु	29/10/2040
s*	राहु	16/11/2040
s+	शुक्र	17/12/2040
s++	सूर्य	26/12/2040
s*	चंद्र	18/01/2041

s+ बुध 29/12/2041		
s	बुध	13/03/2041
s+	शनि	14/04/2041
s-	गुरु	14/06/2041
s*	राहु	22/07/2041
s*	शुक्र	27/09/2041
++	सूर्य	16/10/2041
*	चंद्र	03/12/2041
+	मंगल	29/12/2041

*** शनि** 20/07/2042		
	शनि	16/01/2042
-	गुरु	21/02/2042
*	राहु	16/03/2042
++	शुक्र	24/04/2042
*	सूर्य	05/05/2042
*	चंद्र	03/06/2042
--	मंगल	18/06/2042
++	बुध	20/07/2042

*** गुरु** 09/08/2043		
	गुरु	25/09/2042
+	राहु	07/11/2042
--	शुक्र	21/01/2043
*	सूर्य	12/02/2043
++	चंद्र	06/04/2043
++	मंगल	05/05/2043
--	बुध	04/07/2043
-	शनि	09/08/2043

-- राहु 09/04/2044		
	राहु	05/09/2043
*	शुक्र	23/10/2043
--	सूर्य	05/11/2043
--	चंद्र	09/12/2043
*	मंगल	27/12/2043
*	बुध	03/02/2044
*	शनि	26/02/2044
+	गुरु	09/04/2044

*** शुक्र** 09/06/2045		
	शुक्र	01/07/2044
*	सूर्य	24/07/2044
*	चंद्र	21/09/2044
+	मंगल	23/10/2044
*	बुध	29/12/2044
++	शनि	06/02/2045
-	गुरु	22/04/2045
*	राहु	09/06/2045

टिप्पणी: दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

अष्टोत्तरी प्रत्यंतर दशा

महादशा – चंद्र : 09/06/2045 – 09/06/2060

चंद्र 10/07/2047		
	चंद्र	22/09/2045
-	मंगल	18/11/2045
++	बुध	18/03/2046
+	शनि	27/05/2046
+	गुरु	08/10/2046
--	राहु	01/01/2047
+	शुक्र	28/05/2047
*	सूर्य	10/07/2047

- मंगल 19/08/2048		
	मंगल	09/08/2047
*	बुध	12/10/2047
-	शनि	18/11/2047
++	गुरु	29/01/2048
*	राहु	14/03/2048
+	शुक्र	01/06/2048
++	सूर्य	23/06/2048
*	चंद्र	19/08/2048

++ बुध 29/12/2050		
	बुध	01/01/2049
+	शनि	22/03/2049
S-	गुरु	21/08/2049
*	राहु	25/11/2049
S*	शुक्र	11/05/2050
S++	सूर्य	28/06/2050
S*	चंद्र	26/10/2050
S+	मंगल	29/12/2050

S+ शनि 19/05/2052		
S	शनि	14/02/2051
S-	गुरु	14/05/2051
S*	राहु	10/07/2051
S++	शुक्र	16/10/2051
S*	सूर्य	13/11/2051
S*	चंद्र	23/01/2052
S--	मंगल	29/02/2052
S++	बुध	19/05/2052

S+ गुरु 08/01/2055		
S	गुरु	05/11/2052
S+	राहु	20/02/2053
S--	शुक्र	26/08/2053
S*	सूर्य	19/10/2053
S++	चंद्र	02/03/2054
S++	मंगल	12/05/2054
S--	बुध	11/10/2054
S-	शनि	08/01/2055

S-- राहु 08/09/2056		
S	राहु	17/03/2055
S*	शुक्र	13/07/2055
S--	सूर्य	16/08/2055
S--	चंद्र	09/11/2055
S*	मंगल	24/12/2055
S*	बुध	28/03/2056
S*	शनि	24/05/2056
S+	गुरु	08/09/2056

+ शुक्र 09/08/2059		
S	शुक्र	03/04/2057
*	सूर्य	01/06/2057
*	चंद्र	27/10/2057
+	मंगल	14/01/2058
*	बुध	01/07/2058
++	शनि	07/10/2058
-	गुरु	13/04/2059
s*	राहु	09/08/2059

s* सूर्य 09/06/2060		
s	सूर्य	26/08/2059
s*	चंद्र	07/10/2059
s++	मंगल	30/10/2059
s+	बुध	17/12/2059
s*	शनि	14/01/2060
s*	गुरु	08/03/2060
s--	राहु	10/04/2060
s*	शुक्र	09/06/2060

टिप्पणी: दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

शनि साढ़ेसाती और ढैया

आपकी चंद्र राशि **कुंभ** है। साढ़ेसाती तब चलती है जब शनि आपकी चंद्र राशि से पिछली राशि, आपकी चंद्र राशि और उससे अगली राशि से गुज़रता है (लगभग साढ़े सात वर्ष)। ढैया या छोटी पनौती तब चलती है जब शनि आपकी चंद्र राशि से चौथी और आठवीं राशि से गुज़रता है (हर बार लगभग ढाई वर्ष)।

प्रकार	शनि की राशि	से	तक	पाया	सबसे प्रभावी समय
साढ़ेसाती	मीन	02/06/1995	10/08/1995	रजत	
साढ़ेसाती	कुंभ	10/08/1995	16/02/1996	लौह	
साढ़ेसाती	मीन	16/02/1996	17/04/1998	स्वर्ण	02/05/1996 – 12/02/1997
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	07/06/2000	23/07/2002	स्वर्ण	15/05/2001 – 29/05/2001
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	08/01/2003	07/04/2003	स्वर्ण	
ढैया (छोटी पनौती)	कन्या	10/09/2009	15/11/2011	ताम्र	02/12/2009 – 08/09/2010
ढैया (छोटी पनौती)	कन्या	16/05/2012	04/08/2012	रजत	
साढ़ेसाती	मकर	24/01/2020	29/04/2022	लौह	14/01/2021 – 30/01/2021
साढ़ेसाती	कुंभ	29/04/2022	12/07/2022	रजत	
साढ़ेसाती	मकर	12/07/2022	17/01/2023	स्वर्ण	
साढ़ेसाती	कुंभ	17/01/2023	29/03/2025	ताम्र	05/04/2023 – 20/01/2024
साढ़ेसाती	मीन	29/03/2025	03/06/2027	रजत	13/03/2026 – 28/03/2026
साढ़ेसाती	मीन	20/10/2027	23/02/2028	लौह	
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	08/08/2029	05/10/2029	रजत	
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	17/04/2030	31/05/2032	लौह	28/06/2030 – 04/04/2031
ढैया (छोटी पनौती)	कन्या	22/10/2038	05/04/2039	स्वर्ण	
ढैया (छोटी पनौती)	कन्या	13/07/2039	28/01/2041	रजत	04/10/2039 – 21/06/2040
ढैया (छोटी पनौती)	कन्या	06/02/2041	26/09/2041	ताम्र	
साढ़ेसाती	मकर	06/03/2049	10/07/2049	रजत	
साढ़ेसाती	मकर	04/12/2049	25/02/2052	रजत	22/02/2050 – 10/12/2050
साढ़ेसाती	कुंभ	25/02/2052	14/05/2054	स्वर्ण	12/02/2053 – 28/02/2053
साढ़ेसाती	मीन	14/05/2054	02/09/2054	ताम्र	
साढ़ेसाती	कुंभ	02/09/2054	05/02/2055	ताम्र	
साढ़ेसाती	मीन	05/02/2055	07/04/2057	ताम्र	22/04/2055 – 31/01/2056
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	28/05/2059	11/07/2061	ताम्र	04/05/2060 – 18/05/2060
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	13/02/2062	07/03/2062	रजत	
ढैया (छोटी पनौती)	कन्या	30/08/2068	04/11/2070	लौह	15/11/2068 – 28/08/2069
साढ़ेसाती	मकर	15/01/2079	12/04/2081	लौह	03/05/2079 – 22/01/2080
साढ़ेसाती	कुंभ	12/04/2081	03/08/2081	ताम्र	
साढ़ेसाती	मकर	03/08/2081	07/01/2082	रजत	
साढ़ेसाती	कुंभ	07/01/2082	20/03/2084	रजत	26/03/2082 – 09/01/2083
साढ़ेसाती	मीन	20/03/2084	21/05/2086	ताम्र	04/07/2084 – 19/03/2085
साढ़ेसाती	मीन	10/11/2086	08/02/2087	स्वर्ण	
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	18/07/2088	31/10/2088	रजत	

SAMPLE

ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	05/04/2089	19/09/2090	लौह	17/06/2089 – 19/03/2090
ढैया (छोटी पनौती)	वृषभ	25/10/2090	21/05/2091	ताम्र	

SAMPLE

तारा चक्र

तारा	नक्षत्र	स्वामी
जन्म	शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति	राहु
संपत	पूर्वा भाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा	गुरु
विपत	उत्तरा भाद्रपद, पुष्य, अनुराधा	शनि
क्षेम	रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा	बुध
प्रत्यरि	अश्विनी, मघा, मूल	केतु
साधक	भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा	शुक्र
वध	कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा	सूर्य
मित्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण	चंद्र
अति-मित्र	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा	मंगल

मंगल दोष

कहाँ से गिना	मंगल का भाव	मंगल दोष
लग्न	3	नहीं
चंद्र	7	**हाँ**
शुक्र	4	**हाँ**

परंपरा से मंगल दोष तब देखा जाता है जब मंगल भाव 1, 2, 4, 7, 8 या 12 में हो। विवाह से पहले इसे जीवनसाथी की कुंडली से मिलाया जाता है; यदि दोनों कुंडलियों में यह दोष हो, तो इसे संतुलित माना जाता है।

SAMPLE

लाल किताब

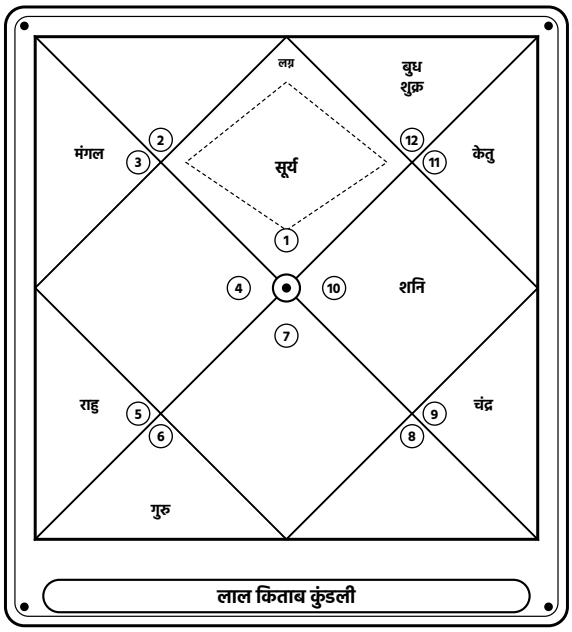

ग्रह	भाव	पक्का घर	स्थिति	सोया हुआ
सूर्य	1	1 ✓	उच्च	हाँ
चंद्र	9	4	-	
मंगल	3	3 ✓	-	
बुध	12	7	नीच	
गुरु	6	2	-	
शुक्र	12	7	उच्च	
शनि	10	10 ✓	-	
राहु	5	12	-	
केतु	11	6	-	

सोए हुए भाव: 2, 4, 8

लाल किताब 35 वर्षीय दशा

ग्रह	वर्ष	से	तक	आयु
गुरु	6	18/06/1995	18/06/2001	0–6
सूर्य	2	18/06/2001	18/06/2003	6–8
चंद्र	1	18/06/2003	18/06/2004	8–9
शुक्र	3	18/06/2004	18/06/2007	9–12
मंगल	6	18/06/2007	18/06/2013	12–18
बुध	2	18/06/2013	18/06/2015	18–20
शनि	6	18/06/2015	18/06/2021	20–26
राहु	6	18/06/2021	18/06/2027	26–32
केतु	3	18/06/2027	18/06/2030	32–35
गुरु	6	18/06/2030	18/06/2036	35–41
सूर्य	2	18/06/2036	18/06/2038	41–43
चंद्र	1	18/06/2038	18/06/2039	43–44
शुक्र	3	18/06/2039	18/06/2042	44–47
मंगल	6	18/06/2042	18/06/2048	47–53
बुध	2	18/06/2048	18/06/2050	53–55
शनि	6	18/06/2050	18/06/2056	55–61
राहु	6	18/06/2056	18/06/2062	61–67
केतु	3	18/06/2062	18/06/2065	67–70

SAMPLE

अष्टकवर्ग

पाराशर की शास्त्रीय तालिकाओं के अनुसार हर ग्रह द्वारा हर राशि को दिए गए शुभ अंक (बिंदु)। किसी राशि का योग (सर्वाष्टकवर्ग) 0 से 56 तक होता है; 28 औसत है।

ग्रह	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	8	2	3	4	2	6	3	5	3	3	3	6	**48**
चंद्र	4	4	2	4	7	4	2	6	4	4	4	4	**49**
मंगल	5	1	3	2	4	4	5	4	3	1	1	6	**39**
बुध	6	5	5	4	2	7	4	5	3	4	3	6	**54**
गुरु	2	4	7	3	6	6	4	3	4	4	7	6	**56**
शुक्र	4	4	6	6	3	5	5	1	4	7	3	4	**52**
शनि	6	2	3	4	2	3	4	1	4	4	1	5	**39**
सर्वाष्टक	**35**	**22**	**29**	**27**	**26**	**35**	**27**	**25**	**25**	**27**	**22**	**37**	**337**

SAMPLE

शुभ बातें

मूलांक	**9**
भाग्यांक	**3**
मित्र अंक	**1, 3, 6, 9**
आयु के शुभ वर्ष	**18, 21, 27, 30, 36, 39, 45, 48**
शुभ दिन	**बुधवार, शुक्रवार, शनिवार**
शुभ ग्रह	**शुक्र, बुध, शनि**
सावधानी वाले ग्रह	**मंगल, गुरु, सूर्य**
मित्र राशियाँ	**वृषभ, तुला, मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ**
जीवन रत्न (लग्नेश)	**पन्ना**
उसी ग्रह के अन्य रत्न	**हरा टूरमलीन, पेरिडॉट**
भाग्य रत्न (नवमेश)	**नीलम**
विद्या और संतान का रत्न (पंचमेश)	**हीरा**
देवता	**विष्णु**
धातु	**कांस्य**
रंग	**हरा**
दिशा	**उत्तर**
समय	**सुबह**
अनाज	**मूँग**
मंत्र	**ॐ बुधाय नमः**

अंक ज्योतिष

मूलांक (जन्मांक)	**9** (मंगल)
भाग्यांक	**3**
जीवन पथ अंक	**3**
शिखर अंक	**6** (आयु 0–33) **6** (आयु 34–42) **3** (आयु 43–51) **3** (आयु 52–)
व्यक्तिगत वर्ष	2025: **6** 2026: **7** 2027: **8** 2028: **9** 2029: **1** 2030: **2** 2031: **3** 2032: **4** 2033: **5** 2034: **6** 2035: **7** 2036: **8**

रत्न मार्गदर्शन

हमारी अपनी अंक-पद्धति: हर ग्रह 50 से शुरू होता है और आपके लग्न के लिए उसकी भूमिका, राशि-बल, भाव और सूर्य से निकटता के अनुसार घटाया-बढ़ाया जाता है। 55 या अधिक अंक वाले ग्रहों के रत्न पहने जा सकते हैं; बाकी ग्रहों के लिए उनकी वस्तुओं का दान सुझाया जाता है। रत्न पहनने से पहले किसी जानकार से सलाह लें और रत्न की जाँच कर लें।

ग्रह	रत्न	शुभ %	अशुभ %	सलाह	रुद्राक्ष
सूर्य	माणिक (रूबी)	38	62	**दान करें**	1 या 12 मुखी
चंद्र	मोती	58	42	**धारण करें**	2 मुखी
मंगल	मूँगा	40	60	**दान करें**	3 मुखी
बुध	पन्ना	68	32	**धारण करें**	4 मुखी
गुरु	पुखराज	40	60	**दान करें**	5 मुखी
शुक्र	हीरा	75	25	**धारण करें**	6 मुखी
शनि	नीलम	78	22	**धारण करें**	7 मुखी

SAMPLE

राहु	गोमेद	66	34	**धारण करें**	8 मुखी
केतु	लहसुनिया (कैट्स आई)	60	40	**धारण करें**	9 मुखी

SAMPLE

वर्षफल (वार्षिक कुंडली)

वर्षफल वह वार्षिक कुंडली है जो हर वर्ष उस क्षण के लिए बनाई जाती है जब सूर्य ठीक अपनी जन्म-स्थिति पर लौटता है। इसका लग्न (वर्ष लग्न), मुंथा (एक बिंदु जो जन्म लग्न से हर वर्ष एक राशि आगे बढ़ता है) और वार्षिक मुद्दा दशा, जीवन के उस वर्ष के मुख्य विषय दिखाते हैं।

वर्षफल 2026–2027 (जीवन का 32वाँ वर्ष)

वर्ष प्रारंभ: **18/06/2026 06:30** वर्ष लग्न: **मिथुन 09:07:08** मुंथा: **मकर 25:50:01** (भाव 8)

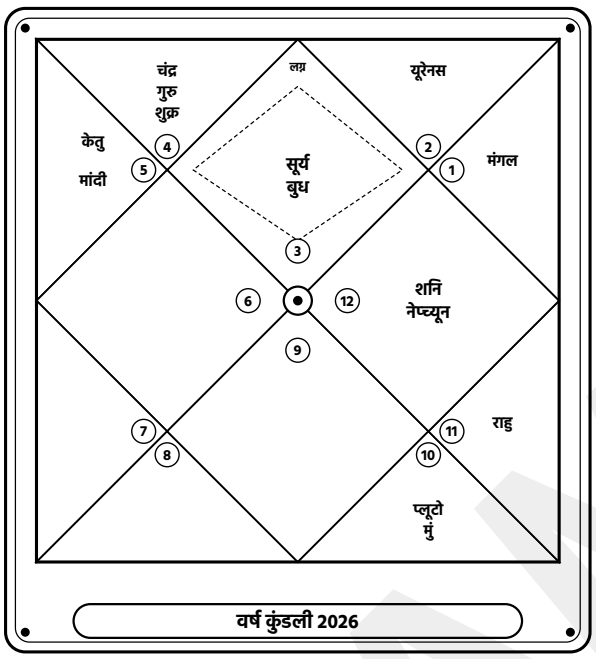

मुद्दा दशा	से	तक
शनि	18/06/2026	01/07/2026
बुध	01/07/2026	22/08/2026
केतु	22/08/2026	12/09/2026
शुक्र	12/09/2026	12/11/2026
सूर्य	12/11/2026	30/11/2026
चंद्र	30/11/2026	31/12/2026
मंगल	31/12/2026	21/01/2027
राहु	21/01/2027	17/03/2027
गुरु	17/03/2027	04/05/2027
शनि	04/05/2027	18/06/2027

ग्रह	राशि	अंश	भाव	नक्षत्र
सूर्य	मिथुन	02:36:43	1	मृगशिरा
चंद्र	कर्क	13:38:19	2	पुष्य
मंगल	मेष	28:01:34	11	कृत्तिका
बुध	मिथुन	26:58:50	1	पुनर्वसु
गुरु	कर्क	03:12:29	2	पुनर्वसु
शुक्र	कर्क	11:06:24	2	पुष्य
शनि	मीन	19:16:15	10	रेवती
राहु	कुंभ	09:02:31	9	शतभिषा
केतु	सिंह	09:02:31	3	मघा

आठवें भाव में मुंथा स्वास्थ्य, अचानक खर्च और जोखिम भरे कामों में सावधानी माँगता है।

वर्ष — एक-एक अवधि

शनि (18/06/2026 – 01/07/2026): वर्ष कुंडली के भाव 10 में, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

बुध (01/07/2026 – 22/08/2026): वर्ष कुंडली के भाव 1 में, जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

SAMPLE

केतु (22/08/2026 – 12/09/2026): वर्ष कुंडली के भाव 3 में, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह समय प्रयास से सुधरता है; जितनी मेहनत करेंगे, परिणाम उतने ही धीरे-धीरे बढ़ेंगे।

शुक्र (12/09/2026 – 12/11/2026): वर्ष कुंडली के भाव 2 में, जो धन, परिवार और वाणी का भाव है। यह समय धन, परिवार और वाणी से जुड़े मिले-जुले परिणाम लाता है।

सूर्य (12/11/2026 – 30/11/2026): वर्ष कुंडली के भाव 1 में, जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

चंद्र (30/11/2026 – 31/12/2026): वर्ष कुंडली के भाव 2 में, जो धन, परिवार और वाणी का भाव है। यह समय धन, परिवार और वाणी से जुड़े मिले-जुले परिणाम लाता है।

मंगल (31/12/2026 – 21/01/2027): वर्ष कुंडली के भाव 11 में, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह समय प्रयास से सुधरता है; जितनी मेहनत करेंगे, परिणाम उतने ही धीरे-धीरे बढ़ेंगे।

राहु (21/01/2027 – 17/03/2027): वर्ष कुंडली के भाव 9 में, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

गुरु (17/03/2027 – 04/05/2027): वर्ष कुंडली के भाव 2 में, जो धन, परिवार और वाणी का भाव है। यह समय धन, परिवार और वाणी से जुड़े मिले-जुले परिणाम लाता है।

शनि (04/05/2027 – 18/06/2027): वर्ष कुंडली के भाव 10 में, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

SAMPLE

वर्षफल 2027–2028 (जीवन का 33वाँ वर्ष)

वर्ष प्रारंभ: **18/06/2027 12:35** वर्ष लग्न: **कन्या 02:33:02** मुंथा: **कुंभ 25:50:01** (भाव 6)

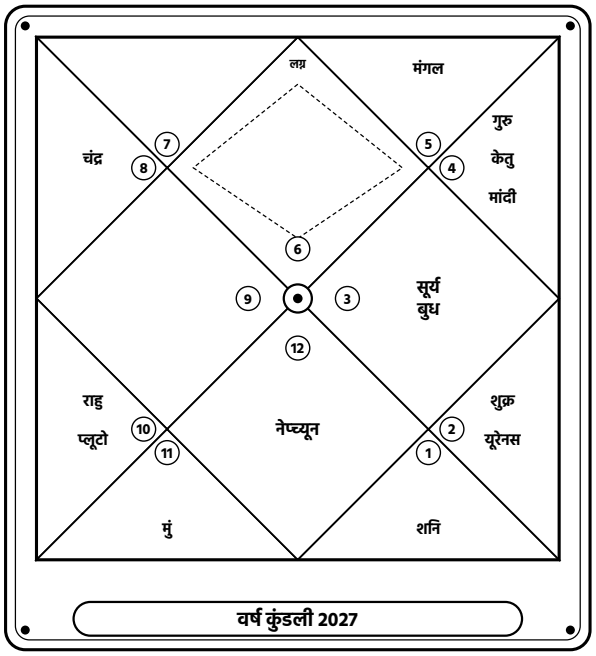

मुद्दा दशा	से	तक
बुध	18/06/2027	10/07/2027
केतु	10/07/2027	31/07/2027
शुक्र	31/07/2027	30/09/2027
सूर्य	30/09/2027	18/10/2027
चंद्र	18/10/2027	18/11/2027
मंगल	18/11/2027	09/12/2027
राहु	09/12/2027	02/02/2028
गुरु	02/02/2028	22/03/2028
शनि	22/03/2028	18/05/2028
बुध	18/05/2028	17/06/2028

ग्रह	राशि	अंश	भाव	नक्षत्र
सूर्य	मिथुन	02:36:43	10	मृगशिरा
चंद्र	वृश्चिक	24:22:48	3	ज्येष्ठा
मंगल	सिंह	21:11:58	12	पूर्वा फाल्गुनी
बुध (व)	मिथुन	10:10:26	10	आर्द्रा
गुरु	कर्क	28:42:41	11	आश्लेषा
शुक्र	वृषभ	17:40:39	9	रोहिणी
शनि	मेष	01:22:31	8	अश्विनी
राहु	मकर	19:41:07	5	श्रवण
केतु	कर्क	19:41:07	11	आश्लेषा

छठे भाव में मुंथा स्वास्थ्य, कर्ज़ और विवादों में सावधानी माँगता है; परिश्रम से जीत मिलती है।

वर्ष — एक-एक अवधि

बुध (18/06/2027 – 10/07/2027): वर्ष कुंडली के भाव 10 में, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

केतु (10/07/2027 – 31/07/2027): वर्ष कुंडली के भाव 11 में, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह समय प्रयास से सुधरता है; जितनी मेहनत करेंगे, परिणाम उतने ही धीरे-धीरे बढ़ेंगे।

शुक्र (31/07/2027 – 30/09/2027): वर्ष कुंडली के भाव 9 में, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

सूर्य (30/09/2027 – 18/10/2027): वर्ष कुंडली के भाव 10 में, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

चंद्र (18/10/2027 – 18/11/2027): वर्ष कुंडली के भाव 3 में, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह

SAMPLE

समय प्रयास से सुधरता है; जितनी मेहनत करेंगे, परिणाम उतने ही धीरे-धीरे बढ़ेंगे।

मंगल (18/11/2027 – 09/12/2027): वर्ष कुंडली के भाव 12 में, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह समय सावधानी और धैर्य माँगता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के कठिन भाव में है।

राहु (09/12/2027 – 02/02/2028): वर्ष कुंडली के भाव 5 में, जो संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

गुरु (02/02/2028 – 22/03/2028): वर्ष कुंडली के भाव 11 में, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह समय प्रयास से सुधरता है; जितनी मेहनत करेंगे, परिणाम उतने ही धीरे-धीरे बढ़ेंगे।

शनि (22/03/2028 – 18/05/2028): वर्ष कुंडली के भाव 8 में, जो अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु का भाव है। यह समय सावधानी और धैर्य माँगता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के कठिन भाव में है।

बुध (18/05/2028 – 17/06/2028): वर्ष कुंडली के भाव 10 में, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

SAMPLE

वर्षफल 2028–2029 (जीवन का 34वाँ वर्ष)

वर्ष प्रारंभ: **17/06/2028 18:52** वर्ष लग्न: **वृश्चिक 28:53:26** मुंथा: **मीन 25:50:01** (भाव 5)

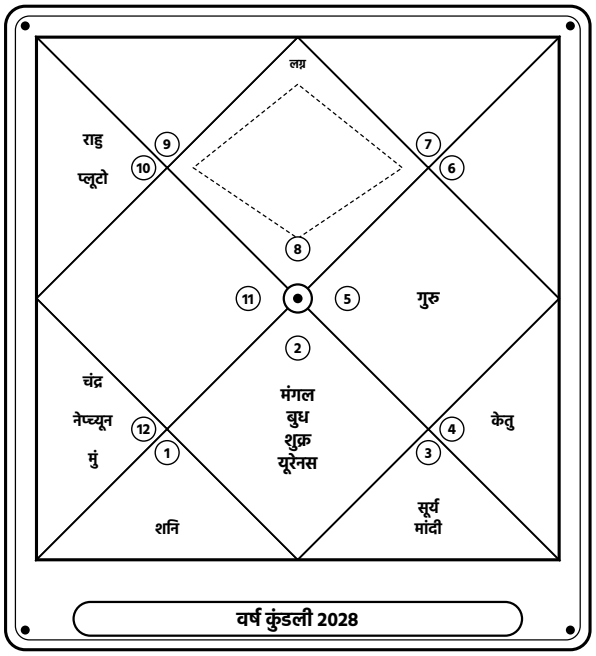

मुद्दा दशा	से	तक
बुध	17/06/2028	21/06/2028
केतु	21/06/2028	12/07/2028
शुक्र	12/07/2028	11/09/2028
सूर्य	11/09/2028	30/09/2028
चंद्र	30/09/2028	30/10/2028
मंगल	30/10/2028	20/11/2028
राहु	20/11/2028	14/01/2029
गुरु	14/01/2029	04/03/2029
शनि	04/03/2029	01/05/2029
बुध	01/05/2029	18/06/2029

ग्रह	राशि	अंश	भाव	नक्षत्र
सूर्य	मिथुन	02:36:43	8	मृगशिरा
चंद्र	मीन	29:00:08	5	रेवती
मंगल	वृषभ	12:42:42	7	रोहिणी
बुध	वृषभ	13:54:43	7	रोहिणी
गुरु	सिंह	25:01:35	10	पूर्वा फाल्गुनी
शुक्र (व)	वृषभ	09:29:22	7	कृत्तिका
शनि	मेष	13:30:09	6	भरणी
राहु	मकर	00:19:42	3	उत्तराषाढ़ा
केतु	कर्क	00:19:42	9	पुनर्वसु

पाँचवें भाव में मुंथा पढ़ाई, रचनात्मकता और संतान की प्रगति के लिए अनुकूल है; सट्टे से बचें।

वर्ष — एक-एक अवधि

बुध (17/06/2028 – 21/06/2028): वर्ष कुंडली के भाव 7 में, जो विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

केतु (21/06/2028 – 12/07/2028): वर्ष कुंडली के भाव 9 में, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

शुक्र (12/07/2028 – 11/09/2028): वर्ष कुंडली के भाव 7 में, जो विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

सूर्य (11/09/2028 – 30/09/2028): वर्ष कुंडली के भाव 8 में, जो अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु का भाव है। यह समय सावधानी और धैर्य माँगता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के कठिन भाव में है।

चंद्र (30/09/2028 – 30/10/2028): वर्ष कुंडली के भाव 5 में, जो संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता का भाव है। वर्ष का यह

SAMPLE

भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

मंगल (30/10/2028 – 20/11/2028): वर्ष कुंडली के भाव 7 में, जो विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

राहु (20/11/2028 – 14/01/2029): वर्ष कुंडली के भाव 3 में, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह समय प्रयास से सुधरता है; जितनी मेहनत करेंगे, परिणाम उतने ही धीरे-धीरे बढ़ेंगे।

गुरु (14/01/2029 – 04/03/2029): वर्ष कुंडली के भाव 10 में, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

शनि (04/03/2029 – 01/05/2029): वर्ष कुंडली के भाव 6 में, जो प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु का भाव है। यह समय सावधानी और धैर्य माँगता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के कठिन भाव में है।

बुध (01/05/2029 – 18/06/2029): वर्ष कुंडली के भाव 7 में, जो विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार का भाव है। वर्ष का यह भाग सामान्यतः सहायक रहता है, क्योंकि ग्रह वर्ष कुंडली के मज़बूत भाव में है।

SAMPLE

एक नज़र में आपकी कुंडली

लग्न / चंद्र राशि / नक्षत्र	**मिथुन / कुंभ / शतभिषा**
तत्व संतुलन	वायु 3 पृथ्वी 2 जल 2 अग्नि 1
राशि स्वभाव संतुलन	चर 0 स्थिर 5 द्विस्वभाव 3
सबसे मज़बूत सहायक	**शनि, शुक्र, बुध**
सावधानी वाले ग्रह	**मंगल, गुरु, सूर्य**
योग	गजकेसरी योग, सुनफा योग, वाशि योग, अमला योग, राजयोग, विमल योग (विपरीत राजयोग)
चल रही दशा	**शनि – शनि (31/08/2027 तक)**

आपकी कुंडली में प्रधान तत्व है वायु तत्व, जो बुद्धि, संवाद और मिलनसारिता देता है। जिन ग्रहों को सबसे मज़बूत सहायक बताया गया है, उनकी दशाएँ, रंग, दिन और रत्न आपको सबसे अधिक सहारा देते हैं।

SAMPLE

एक नज़र में आपकी कुंडली

यह पृष्ठ आपकी पूरी कुंडली को निष्कर्षों में समेटता है। हर निष्कर्ष भावों, उनके स्वामियों, उनमें बैठे या उन्हें देखने वाले ग्रहों, अष्टकवर्ग अंकों, स्वाभाविक कारकों और विभाजित चार्टों को तौलता है। ये निष्कर्ष प्रवृत्तियाँ और ज़रूरी प्रयास बताते हैं; ये गारंटी नहीं हैं, और प्रयास व अच्छे निर्णयों से हर बात सुधर सकती है।

जीवन का क्षेत्र	निष्कर्ष	अंक (10 में से)	आगे की सबसे अच्छी अवधि
करियर और व्यवसाय	बहुत मज़बूत	8.6	शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32)
धन और आर्थिक स्थिति	बहुत मज़बूत	8.3	शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32)
विवाह और साझेदारी	मज़बूत	6.2	शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48)
संतान	मध्यम	4.9	शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39)
शिक्षा और विद्या	मध्यम	4.6	बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)
स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति	प्रयास ज़रूरी	3.7	बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)
घर, संपत्ति और वाहन	मज़बूत	6.7	बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)
यात्रा और विदेश से संबंध	प्रबल संकेत	7.8	बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54)
आध्यात्मिक जीवन	मौजूद	4.6	शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32)

आपकी कुंडली करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, घर, संपत्ति और वाहन के लिए सबसे मज़बूत है। जिन क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रयास और धैर्य चाहिए वे हैं शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति।

आपकी मुख्य शक्तियाँ

- आपकी कुंडली में राजयोग है: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं। जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।
- आपके लग्न के स्वामी बुध बलवान हैं (मित्र राशि, भाव 12), जो स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सफलता का ठोस आधार देता है।
- आपकी कुंडली में गजकेसरी योग है: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है। चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।
- आपकी कुंडली में अमला योग है: गुरु लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में है। लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर बनता है। यह बेदाग प्रतिष्ठा, नैतिक आचरण और अच्छे कामों से स्थायी यश देता है।
- आपकी कुंडली में विमल योग (विपरीत राजयोग) है: भाव 12 का स्वामी शुक्र भाव 12 में है। बारहवें भाव के स्वामी के कठिन भाव में होने पर बनता है। यह अच्छा आचरण, आत्मनिर्भरता और बचत देता है, तथा खर्च घटाता है।
- भाव 4 (घर, माता) का अष्टकवर्ग आधार बहुत मज़बूत है, इसलिए उसके विषय विशेष बल हैं।

किस पर ध्यान चाहिए

- आपके लग्न के स्वामी बुध कठिन भाव 12 में हैं, इसलिए स्वास्थ्य और आत्मविश्वास की रक्षा करनी होगी; नियमित आदतें और पर्याप्त आराम मदद करते हैं।
- भाव 9 (भाग्य, पिता) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।
- भाव 12 (खर्च, विदेश) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।

आपका सबसे बलवान ग्रह

शनि आपकी कुंडली का सबसे बलवान ग्रह है (सम राशि, भाव 10, 100 में से 78)। इसकी अपनी दशा (27/08/2024 से 28/08/2043 तक) और उससे जुड़ी अंतर्दशाएँ आपके सबसे उपयोगी और सहायक समय हैं।

SAMPLE

जो अवधि अभी चल रही है

शनि – शनि 31/08/2027 तक। कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

अगले 12 वर्षों की मुख्य अवधियाँ

अवधि	तिथियाँ	आयु	स्वर	मुख्य केंद्र
शनि – शनि	22/11/2026 – 31/08/2027	31–32	शुभ	आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय
शनि – बुध	31/08/2027 – 10/05/2030	32–34	शुभ	यात्रा और विदेश से संबंध, आध्यात्मिक जीवन
शनि – केतु	10/05/2030 – 19/06/2031	34–36	शुभ	आध्यात्मिक जीवन
शनि – शुक्र	19/06/2031 – 19/08/2034	36–39	शुभ	आध्यात्मिक जीवन, संतान
शनि – सूर्य	19/08/2034 – 01/08/2035	39–40	अधिकतर अनुकूल	करियर और व्यवसाय, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति
शनि – चंद्र	01/08/2035 – 01/03/2037	40–41	शुभ	आध्यात्मिक जीवन, धन और आर्थिक स्थिति
शनि – मंगल	01/03/2037 – 10/04/2038	41–42	शुभ	करियर और व्यवसाय, आध्यात्मिक जीवन
शनि – राहु	10/04/2038 – 14/02/2041	42–45	शुभ	संतान, आध्यात्मिक जीवन

SAMPLE

आपकी जीवन-कथा

यह अध्याय आपकी पूरी कुंडली को एक कहानी की तरह पढ़ता है: आप कौन हैं, आपका जीवन चरण-दर-चरण कैसे खुलता है, जीवन के बड़े विषय और मोड़, और जीवन आपसे क्या माँगता है। यह इस रिपोर्ट की बाकी गणनाओं पर ही आधारित है और सरल शब्दों में लिखा गया है। कुंडली प्रवृत्तियाँ दिखाती है, तय घटनाएँ नहीं: आपका प्रयास, चरित्र और निर्णय हमेशा मायने रखते हैं।

आप कौन हैं

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ और आपका चंद्र कुंभ राशि में, शतभिषा नक्षत्र में है।

आपके लग्न के स्वामी बुध भाव 12 में बैठे हैं। बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

आपका चंद्र, यानी मन, भाव 9 में बैठा है। नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

मिथुन वायु तत्व की द्विस्वभाव राशि है, जिसका स्वामी बुध है। आप जिज्ञासु, हाज़िरजवाब और बातूनी हैं, और नई चीज़ें आसानी से सीखते हैं। आपको पढ़ना, यात्रा, बातचीत और विविधता पसंद है, और आप प्रायः किसी प्रश्न के दोनों पहलू देख पाते हैं। इसका दूसरा पहलू बेचैनी है: एक साथ बहुत सी रुचियाँ आपकी ऊर्जा बिखेर सकती हैं, और आप आसपास के लोगों की अपेक्षा से अधिक बार अपना मन बदल सकते हैं।

आपकी कुंडली का सबसे बलवान ग्रह शनि है; इसके गुण (कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब) आपकी स्वाभाविक प्रतिभाएँ हैं। जिस ग्रह के लिए सबसे अधिक प्रयास चाहिए वह सूर्य है; इसके विषय (आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) वहाँ हैं जहाँ जीवन आपसे अधिक मेहनत और धैर्य माँगता है।

आपकी कुंडली के वरदान

- आपकी कुंडली में राजयोग है: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं। जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।
- आपके लग्न के स्वामी बुध बलवान हैं (मित्र राशि, भाव 12), जो स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सफलता का ठोस आधार देता है।
- आपकी कुंडली में गजकेसरी योग है: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है। चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।

किस पर ध्यान चाहिए

- आपके लग्न के स्वामी बुध कठिन भाव 12 में हैं, इसलिए स्वास्थ्य और आत्मविश्वास की रक्षा करनी होगी; नियमित आदतें और पर्याप्त आराम मदद करते हैं।
- भाव 9 (भाग्य, पिता) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।
- भाव 12 (खर्च, विदेश) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।

आयु के अनुसार आपका जीवन

जीवन विंशोत्तरी पद्धति की मुख्य दशाओं (महादशाओं) से होकर चलता है। नीचे हर चरण में दिखाया गया है कि वह किन आयु-वर्षों को घेरता है, रोज़मर्रा के जीवन में क्या सामने आता है, और उसके भीतर सबसे अच्छी तथा सबसे कठिन उप-दशाएँ कौन-सी हैं।

SAMPLE

आयु 0 से 13: राहु महादशा (18/06/1995 से 27/08/2008 तक)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 5 सामने आता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)।

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 0–3), बुध (आयु 3–5)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 9–10), मंगल (आयु 12–13)।

आयु 13 से 29: गुरु महादशा (27/08/2008 से 27/08/2024 तक)

इस चरण का स्वर मिश्रित है। इस चरण में भाव 6 सामने आता है। भाव 7 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)।

छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर; कठिन पक्ष में, कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 15–17), बुध (आयु 17–20)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 23–24), मंगल (आयु 25–26)।

आयु 29 से 48: शनि महादशा (27/08/2024 से 28/08/2043 तक) (अभी चल रही है)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 10 सामने आता है। भाव 8 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 29–32), शुक्र (आयु 36–39)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 39–40), मंगल (आयु 41–42)।

आयु 48 से 65: बुध महादशा (28/08/2043 से 27/08/2060 तक)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 12 सामने आता है। भाव 1 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)।

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है।

SAMPLE

विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध (आयु 48–50), शुक्र (आयु 51–54)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 54–55), मंगल (आयु 56–57)।

आयु 65 से 72: केतु महादशा (27/08/2060 से 28/08/2067 तक)

इस चरण का स्वर अधिकतर अनुकूल है। इस चरण में भाव 11 सामने आता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 70–71), बुध (आयु 71–72)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 66–67), मंगल (आयु 67–68)।

आयु 72 से 92: शुक्र महादशा (28/08/2067 से 28/08/2087 तक)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 12 सामने आता है। भाव 5 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)।

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 85–88), बुध (आयु 88–91)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 75–76), मंगल (आयु 78–79)।

आपके जीवन के बड़े विषय

करियर और व्यवसाय (बहुत मज़बूत). करियर आपकी कुंडली के बेहतर समर्थित क्षेत्रों में से है: वास्तविक उन्नति, ज़िम्मेदारी और मान-सम्मान की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32)।

धन और आर्थिक स्थिति (बहुत मज़बूत). धन अच्छी तरह समर्थित है: आपकी कुंडली कमाने और जमा करने की अच्छी क्षमता दिखाती है, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32)।

घर, संपत्ति और वाहन (मज़बूत). घर, संपत्ति और वाहन अच्छी तरह समर्थित हैं: घर में सुख और संपत्ति में लाभ की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

शिक्षा और विद्या (मध्यम). शिक्षा मध्यम रूप से समर्थित है: परिणाम नियमित दिनचर्या और सही विषय पर निर्भर करते हैं। आगे का

SAMPLE

सबसे अच्छा समय: बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (प्रयास ज़रूरी). स्वास्थ्य पर सचेत ध्यान चाहिए: नियमित जाँच, आराम और अनुशासित दिनचर्या सामान्य से अधिक मायने रखती है, विशेषकर परीक्षा वाली अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

जीवन के मोड़

गुरु लगभग हर बारह वर्ष में अपनी जन्म राशि में लौटता है: आयु 11 (2006), आयु 23 (2018), आयु 35 (2030), आयु 47 (2042), आयु 58 (2053), आयु 70 (2065), आयु 82 (2077)। ये विकास, शुभकामना और नए अवसरों के समय होते हैं।

शनि लगभग हर उनतीस वर्ष में अपनी जन्म राशि में लौटता है: आयु 1 (1996), आयु 30 (2025), आयु 59 (2054)। ये परिपक्वता, ज़िम्मेदारी और ईमानदार पुनर्मूल्यांकन के समय हैं; जो आप तब बनाते हैं वह टिकता है।

राहु–केतु अक्ष लगभग 19, 37, 56 और 74 वर्ष की आयु में अपनी जन्म-स्थिति पर लौटता है: ये बदलाव, नई दिशाओं और पुराने को छोड़ने के समय हैं।

साढ़ेसाती, यानी आपकी चंद्र राशि पर शनि की लंबी परीक्षा, इन समयों में आती है: आयु 0–2 (02/06/1995 – 17/04/1998); आयु 24–32 (24/01/2020 – 23/02/2028); आयु 53–61 (06/03/2049 – 07/04/2057); आयु 83–88 (15/01/2079 – 20/03/2084)। इसमें धैर्य, लगातार काम और स्वास्थ्य की देखभाल चाहिए, और यह प्रायः आपको अधिक मज़बूत बना देती है।

आपके सबक और आशीर्वाद

- शनि भाव 10 में है: यहीं जीवन धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगता है, और यहीं स्थिर प्रयास का फल सबसे अधिक मिलता है। दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।
- राहु भाव 5 में है: आप इन विषयों की ओर तीव्र खिंचाव अनुभव करेंगे; इन्हें ईमानदारी से, बिना शॉर्टकट के सँभालने से उन्नति होती है। पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।
- केतु भाव 11 में है: आप इन विषयों से अनासक्त महसूस कर सकते हैं, और समय के साथ आपको इनके बारे में सच्ची समझ मिलती है। ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।
- गुरु भाव 6 में है: आशीर्वाद, मार्गदर्शन और सौभाग्य इन्हीं विषयों के माध्यम से मिलते हैं। छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

संक्षेप में

आपकी कुंडली करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, घर, संपत्ति और वाहन के लिए सबसे मज़बूत है, और शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति में सबसे अधिक प्रयास तथा धैर्य माँगती है। आप अभी शनि – शनि दशा में हैं, जिसका स्वर शुभ है। अपने बड़े कदम अनुकूल समयों में उठाएँ, कठिन समयों में इस रिपोर्ट में दी गई सरल व्यावहारिक सलाह पर चलें, और याद रखें कि कुंडली प्रवृत्तियाँ दिखाती है जबकि परिणाम आपके प्रयास, चरित्र और प्रार्थना से बनता है।

SAMPLE

आपका व्यक्तिगत फलादेश

मिथुन लग्न

स्वभाव

मिथुन वायु तत्व की द्विस्वभाव राशि है, जिसका स्वामी बुध है। आप जिज्ञासु, हाज़िरजवाब और बातूनी हैं, और नई चीज़ें आसानी से सीखते हैं। आपको पढ़ना, यात्रा, बातचीत और विविधता पसंद है, और आप प्रायः किसी प्रश्न के दोनों पहलू देख पाते हैं। इसका दूसरा पहलू बेचैनी है: एक साथ बहुत सी रुचियाँ आपकी ऊर्जा बिखेर सकती हैं, और आप आसपास के लोगों की अपेक्षा से अधिक बार अपना मन बदल सकते हैं।

शरीर और स्वास्थ्य

पारंपरिक वर्णन है — लंबा, दुबला और युवा दिखने वाला शरीर, भाव-भरे हाथ और चंचल आँखें। फेफड़े, कंधे, बाँहें, नसें और त्वचा संवेदनशील क्षेत्र हैं। मानसिक अधिक काम, अनियमित नींद और घबराहट परेशानी के सबसे आम कारण हैं, इसलिए आराम, प्राणायाम और शांत दिनचर्या आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

काम और धन

बुध शब्दों, अंकों और व्यापार में कौशल देता है। लेखन, अध्यापन, पत्रकारिता, मीडिया, बिक्री, मार्केटिंग, संचार, लेखा, कंप्यूटर, छपाई और प्रकाशन, तथा कमीशन पर आधारित व्यवसाय — ये सब आपके अनुकूल हैं। आप एक साथ आय के एक से अधिक स्रोत चला सकते हैं। लिखित रिकॉर्ड रखना और शुरू किया काम पूरा करना आपके बहुत से विचारों को धन में बदलता है।

संबंध

आप ऐसा साथी चाहते हैं जो ऐसा मित्र भी हो जिससे आप बात कर सकें। सातवाँ भाव धनु है, जिसका स्वामी गुरु है, जो प्रायः सिद्धांतवादी, पढ़ा-लिखा या धार्मिक सोच वाला साथी देता है। एक-दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करना, और ज़रूरत के समय साथी को पूरा ध्यान देना, संबंध को मज़बूत रखता है।

मार्गदर्शन

लग्नेश बुध घर और मन के चौथे भाव का भी स्वामी है। इस लग्न के लिए शुक्र मज़बूत मित्र है, जबकि छठे और ग्यारहवें भाव का स्वामी मंगल सावधानी माँगता है। उद्देश्य में स्थिरता और नियमित आध्यात्मिक साधना आपकी स्वाभाविक चतुराई को गहराई देते हैं।

आपकी कुंडली में ध्यान माँगने वाले ग्रह

आपके लग्न के लिए कुछ ग्रह कठिन भावों (तीसरे, छठे, आठवें और बारहवें) के स्वामी हैं। वे "बुरे" ग्रह नहीं हैं: वे केवल मेहनत, देरी या खर्च के रास्ते अपनी सीख देते हैं, और कितनी परेशानी देंगे यह इस पर निर्भर है कि वे कहाँ बैठे हैं और कितने बलवान हैं। यहाँ बताया गया है कि हर एक आपके लिए क्या अर्थ रख सकता है, कब असर दिखाता है, और क्या करना चाहिए।

मंगल — भाव 6 और 11 के स्वामी

मंगल भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़; आय, लाभ) के स्वामी हैं। आपके लग्न के लिए यह उन ग्रहों में है जो सुख से अधिक मेहनत लाते हैं, हालाँकि इनके स्वाभाविक गुण (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल) बने रहते हैं।

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) के स्वामी के रूप में यह ला सकता है: कर्ज़, विवाद, स्वास्थ्य की छोटी परेशानियाँ, प्रतिस्पर्धा और काम या कानूनी मामलों में टकराव। क्या मदद करता है: कर्ज़ और बहस से बचें, स्वास्थ्य की निश्चित दिनचर्या रखें, और विवादों को जल्दी तथा शांति से सुलझाएँ।
- यह भाव 11 (आय, लाभ) का भी स्वामी है, इसलिए इसके कुछ फल सहायक हैं, विशेषकर उन विषयों के लिए।

यह भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में सिंह राशि में बैठा है। यह वृद्धि का भाव, जहाँ मेहनत लाभ में बदलती है, इसलिए समय के साथ

SAMPLE

कठिनाई घटती है है। आपकी कुंडली में इसका कुल बल 100 में से 40 है।

- इसकी मुख्य दशा (मंगल महादशा) 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है; तब इसके विषय सबसे प्रबल होते हैं।
- अन्य महादशाओं के भीतर इसकी अंतर्दशाएँ, जब वही विषय सतह पर आते हैं: शनि – मंगल (01/03/2037 – 10/04/2038)।

क्या करें: मंगलवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग लाल अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ मंगलाय नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

गुरु — भाव 7 और 10 के स्वामी

गुरु भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) के स्वामी हैं। आपके लग्न के लिए यह उन ग्रहों में है जो सुख से अधिक मेहनत लाते हैं, हालाँकि इनके स्वाभाविक गुण (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म) बने रहते हैं।

- यह भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) का भी स्वामी है, इसलिए इसके कुछ फल सहायक हैं, विशेषकर उन विषयों के लिए।

यह भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में वृश्चिक राशि में बैठा है। यह एक और कठिन भाव; कठिन भाव का स्वामी कठिन भाव में बैठे तो अपनी ही परेशानी घटा देता है, पर वह समस्याओं को अधिक निजी और भीतरी बना सकता है, इसलिए तनाव, स्वास्थ्य और खर्च पर लगातार ध्यान चाहिए है। आपकी कुंडली में इसका कुल बल 100 में से 40 है।

- अन्य महादशाओं के भीतर इसकी अंतर्दशाएँ, जब वही विषय सतह पर आते हैं: शनि – गुरु (14/02/2041 – 28/08/2043)।

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

सूर्य — भाव 3 के स्वामी

सूर्य भाव 3 (साहस, भाई-बहन) के स्वामी हैं। आपके लग्न के लिए यह उन ग्रहों में है जो सुख से अधिक मेहनत लाते हैं, हालाँकि इनके स्वाभाविक गुण (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति) बने रहते हैं।

- भाव 3 (साहस, भाई-बहन) के स्वामी के रूप में यह ला सकता है: मेहनत भरे उपक्रम, भाई-बहनों या सहकर्मियों से कुछ खटपट, थकाने वाली छोटी यात्राएँ, और काम पूरा करने के लिए खुद को आगे धकेलने की ज़रूरत। क्या मदद करता है: आवेग में नहीं, योजना बनाकर निर्णय लें, भाई-बहनों और पड़ोसियों से अच्छे संबंध रखें, और कौशल कदम-दर-कदम बनाएँ।

यह भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में मिथुन राशि में बैठा है। यह ऐसा भाव जो बल देता है, कठिनाई को कम करता है और ग्रह के अच्छे पक्ष को सहारा देता है है। आपकी कुंडली में इसका कुल बल 100 में से 38 है।

- इसकी मुख्य दशा (सूर्य महादशा) 28/08/2087 से 28/08/2093 तक चलती है; तब इसके विषय सबसे प्रबल होते हैं।
- अन्य महादशाओं के भीतर इसकी अंतर्दशाएँ, जब वही विषय सतह पर आते हैं: शनि – सूर्य (19/08/2034 – 01/08/2035)।

क्या करें: रविवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग लाल, नारंगी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ सूर्याय नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राशियों का वर्णन; प्रथम भाव के फल; वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — राशियों का स्वभाव; वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी) — लग्न राशि के फल।

आपकी चंद्र राशि: कुंभ

कुंभ राशि में चंद्रमा होने से आप मित्रवत, स्वतंत्र और मानवतावादी हैं। आप समाज और विचारों के बारे में सोचते हैं और असामान्य विषयों में रुचि लेते हैं। आप तटस्थ लग सकते हैं, पर आपकी मित्रताएँ सच्ची होती हैं। दिमाग और दिल में संतुलन बनाना आपकी

SAMPLE

सीख है।

आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — बारह राशियों में चंद्रमा के फल; कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — राशियों में चंद्रमा; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — चंद्र राशि के फल।

आपका जन्म नक्षत्र: शतभिषा (चरण 2)

स्वामी ग्रह: राहु · देवता: वरुण (ब्रह्मांडीय जल के देवता) · प्रतीक: खाली वृत्त

शतभिषा स्वतंत्रता, वैज्ञानिक सोच और उपचार की क्षमता देता है। आप संकोची, सत्यवादी और रहस्यों में रुचि रखने वाले हैं। चिकित्सा, शोध, ज्योतिष, तकनीक और उपचार आपके अनुकूल हैं। एकांत आपको ताज़गी देता है, पर स्वयं को अलग-थलग करने से बचें।

आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — नक्षत्रों में जन्म के फल; पृथुयशस का होरासार — जन्म नक्षत्र के फल; रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — नक्षत्रों के गुण।

SAMPLE

आपके भावों में ग्रह

भाव 1 में सूर्य (मिथुन, सम राशि)

पहले भाव में सूर्य होने से आपमें आत्म-बोध प्रबल होता है, व्यवहार में गरिमा होती है और नेतृत्व करने की इच्छा होती है। लोग आपको नोटिस करते हैं, और आप अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करते हैं। आत्मविश्वास और सम्मान की भावना आपकी शक्ति हैं; अभिमान, तेज़ गुस्सा और आलोचना के प्रति अधीरता वे कमज़ोरियाँ हैं जिन्हें संभालना है। शास्त्र इस स्थिति को अच्छी जीवन-शक्ति के साथ-साथ गरमी से जुड़ी परेशानियों, आँखों पर ज़ोर और कभी-कभी सिरदर्द से भी जोड़ते हैं। ज़िम्मेदारी के पदों पर आप अच्छा करते हैं, और ईमानदारी से काम करने पर सरकार या वरिष्ठों का सहयोग मिलने की संभावना है।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में सूर्य।

भाव 9 में चंद्र (कुंभ, सम राशि)

नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में चंद्रमा।

भाव 3 में मंगल (सिंह, मित्र राशि)

तीसरे भाव में मंगल उसकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है। यह असाधारण साहस, पहल और प्रतिस्पर्धियों पर विजय की क्षमता देता है। खेल, सेना, तकनीकी काम, बिक्री या निडर प्रयास माँगने वाले किसी भी क्षेत्र में आप अच्छा कर सकते हैं। शास्त्र पराक्रम और अपने प्रयास से सफलता के लिए इस स्थिति की प्रशंसा करते हैं। भाई-बहनों से संबंध प्रतिस्पर्धी पर रक्षा करने वाले हो सकते हैं।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में मंगल।

भाव 12 में बुध (वृषभ, मित्र राशि)

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है। विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में बुध।

भाव 6 में गुरु (वृश्चिक, वक्री, मित्र राशि)

छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में गुरु।

भाव 12 में शुक्र (वृषभ, स्वराशि)

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में शुक्र।

SAMPLE

भाव 10 में शनि (मीन, सम राशि)

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में शनि।

भाव 5 में राहु (तुला, मित्र राशि)

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राहु और केतु के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में राहु।

भाव 11 में केतु (मेष, मित्र राशि)

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राहु और केतु के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में केतु।

SAMPLE

एक-एक ग्रह

यहाँ हर ग्रह का वर्णन इस आधार पर है कि वह किसका कारक है, कहाँ बैठा है, किन भावों का स्वामी है और किन पर दृष्टि डालता है, किन ग्रहों के साथ है और आपकी कुंडली में उसकी कुल स्थिति कैसी है।

सूर्य

कारक	आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति
स्थिति	मिथुन 02:36:43, भाव 1
नक्षत्र	मृगशिरा चरण 3 (स्वामी मंगल)
बल (D1 / D9)	सम राशि / तुला में नीच
स्वामित्व वाले भाव	3
साथ में	कोई नहीं
अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक	8 में से 3
कुल अंक	38 / 100

सूर्य की दृष्टि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) पर है, जिन्हें यह अधिकार, ध्यान और कुछ गरमी देता है। केवल 3 अष्टकवर्ग अंक होने से इसे अपना श्रेष्ठ देने के लिए सहारे की ज़रूरत है।

गहराई से: आपकी कुंडली में सूर्य

सूर्य भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए स्वभाव से अनुकूल नहीं है, इसलिए इसकी दशा अपने विषयों में मेहनत या बाधाएँ ला सकती है; इसे बलवान करने के बजाय दान और मंत्र से शांत करें।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

यह मंगल के नक्षत्र में है, जो भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक मंगल के माध्यम से मिलते हैं: भाव 3 और मंगल के स्वामित्व वाले भावों के विषय सूर्य के फलों में घुल जाते हैं।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।

सूर्य आपकी कुंडली में दबाव में है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति) उसे सचेत सहारा चाहिए, और इसकी दशाओं में धैर्य और समझदार योजना ज़रूरी है। इसका कुल बल 100 में से 38 है, और यह सम राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2087 से 28/08/2093 तक चलती है।

चंद्र

कारक	मन, भावनाएँ, माता, घर का सुख और जनता
स्थिति	कुंभ 10:13:35, भाव 9
नक्षत्र	शतभिषा चरण 2 (स्वामी राहु)
बल (D1 / D9)	सम राशि / मकर में सम राशि
स्वामित्व वाले भाव	2
साथ में	कोई नहीं
अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक	8 में से 4
कुल अंक	58 / 100

SAMPLE

चंद्र की दृष्टि भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) पर है, जिन्हें यह देखभाल, संवेदनशीलता और परिवर्तनशीलता देता है।

गहराई से: आपकी कुंडली में चंद्र

चंद्र भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए मिले-जुले फल देता है: जहाँ बलवान है वहाँ अच्छे और जहाँ कमज़ोर है वहाँ साधारण या परीक्षा वाले।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

यह राहु के नक्षत्र में है, जो भाव 5 (संतान, शिक्षा) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक राहु के माध्यम से मिलते हैं: भाव 5 और राहु के स्वामित्व वाले भावों के विषय चंद्र के फलों में घुल जाते हैं।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 3 (साहस, भाई-बहन): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (मंगल) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

चंद्र आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (मन, भावनाएँ, माता, घर का सुख और जनता) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 58 है, और यह सम राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2093 से 29/08/2103 तक चलती है।

मंगल

कारक	साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल
स्थिति	सिंह 17:38:50, भाव 3
नक्षत्र	पूर्वा फाल्गुनी चरण 2 (स्वामी शुक्र)
बल (D1 / D9)	मित्र राशि / कन्या में शत्रु राशि
स्वामित्व वाले भाव	6, 11
साथ में	कोई नहीं
अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक	8 में से 4
कुल अंक	40 / 100

मंगल की दृष्टि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु), भाव 9 (भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ), भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) पर है, जिन्हें यह ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव देता है।

गहराई से: आपकी कुंडली में मंगल

मंगल भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु; आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए स्वभाव से अनुकूल नहीं है, इसलिए इसकी दशा अपने विषयों में मेहनत या बाधाएँ ला सकती है; इसे बलवान करने के बजाय दान और मंत्र से शांत करें।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

यह शुक्र के नक्षत्र में है, जो भाव 12 (खर्च, विदेश) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक शुक्र के माध्यम से मिलते हैं: भाव 12 और शुक्र के स्वामित्व वाले भावों के विषय मंगल के फलों में घुल जाते हैं।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (गुरु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 9 (भाग्य, पिता): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह

SAMPLE

(चंद्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

- भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (शनि) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

मंगल आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 40 है, और यह मित्र राशि में है। इसकी मुख्य दशा 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है।

बुध

कारक	बुद्धि, वाणी, व्यापार, शिक्षा और मित्र
स्थिति	वृषभ 16:02:25, भाव 12
नक्षत्र	रोहिणी चरण 2 (स्वामी चंद्र)
बल (D1 / D9)	मित्र राशि / वृषभ में मित्र राशि — वर्गोत्तम
स्वामित्व वाले भाव	1, 4
साथ में	शुक्र
अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक	8 में से 5
कुल अंक	68 / 100

बुध की दृष्टि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु) पर है, जिन्हें यह बुद्धिमत्ता, संवाद और बहुमुखी प्रतिभा देता है। शुक्र के साथ होने से यह अपने फल उनके फलों के साथ मिलाकर देता है। वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि) होने से यह स्थिर और भरोसेमंद फल देता है। 5 अष्टकवर्ग अंकों के साथ यह अपनी राशि में अच्छे बल से काम करता है।

गहराई से: आपकी कुंडली में बुध

बुध भाव 1 और 4 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत; घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए मिले-जुले फल देता है: जहाँ बलवान है वहाँ अच्छे और जहाँ कमज़ोर है वहाँ साधारण या परीक्षा वाले।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

यह चंद्र के नक्षत्र में है, जो भाव 9 (भाग्य, पिता) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक चंद्र के माध्यम से मिलते हैं: भाव 9 और चंद्र के स्वामित्व वाले भावों के विषय बुध के फलों में घुल जाते हैं।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (गुरु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

इसके साथ बैठे ग्रह:

- शुक्र के साथ: मोहक वाणी और कलात्मक कौशल, डिज़ाइन, मीडिया और व्यापार के लिए अच्छा।

बुध आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (बुद्धि, वाणी, व्यापार, शिक्षा और मित्र) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 68 है, और यह मित्र राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2043 से 27/08/2060 तक चलती है।

गुरु

कारक	ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म

SAMPLE

स्थिति	वृश्चिक 14:40:06, भाव 6, वक्री
नक्षत्र	अनुराधा चरण 4 (स्वामी शनि)
बल (D1 / D9)	मित्र राशि / वृश्चिक में मित्र राशि — वर्गोत्तम
स्वामित्व वाले भाव	7, 10
साथ में	कोई नहीं
अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक	8 में से 3
कुल अंक	40 / 100

गुरु की दृष्टि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार), भाव 12 (खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद), भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) पर है, जिन्हें यह सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान देता है। वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि) होने से यह स्थिर और भरोसेमंद फल देता है। केवल 3 अष्टकवर्ग अंक होने से इसे अपना श्रेष्ठ देने के लिए सहारे की ज़रूरत है।

गहराई से: आपकी कुंडली में गुरु

गुरु भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए स्वभाव से अनुकूल नहीं है, इसलिए इसकी दशा अपने विषयों में मेहनत या बाधाएँ ला सकती है; इसे बलवान करने के बजाय दान और मंत्र से शांत करें।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

यह शनि के नक्षत्र में है, जो भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक शनि के माध्यम से मिलते हैं: भाव 10 और शनि के स्वामित्व वाले भावों के विषय गुरु के फलों में घुल जाते हैं।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (शनि) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 12 (खर्च, विदेश): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (बुध, शुक्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 2 (धन, परिवार और वाणी): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को।

गुरु आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 40 है, और यह मित्र राशि में है।

शुक्र

कारक	विवाह, प्रेम, सुख-सुविधा, वाहन, कला और सौंदर्य
स्थिति	वृषभ 15:13:44, भाव 12
नक्षत्र	रोहिणी चरण 2 (स्वामी चंद्र)
बल (D1 / D9)	स्वराशि / वृषभ में स्वराशि — वर्गोत्तम
स्वामित्व वाले भाव	5, 12
साथ में	बुध
अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक	8 में से 4
कुल अंक	75 / 100

शुक्र की दृष्टि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु) पर है, जिन्हें यह सामंजस्य, सुख और आकर्षण देता है। बुध के साथ होने से यह अपने फल उनके फलों के साथ मिलाकर देता है। वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि) होने से यह स्थिर और भरोसेमंद फल देता है।

SAMPLE

गहराई से: आपकी कुंडली में शुक्र

शुक्र भाव 5 और 12 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए मिले-जुले फल देता है: जहाँ बलवान है वहाँ अच्छे और जहाँ कमज़ोर है वहाँ साधारण या परीक्षा वाले।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

यह चंद्र के नक्षत्र में है, जो भाव 9 (भाग्य, पिता) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक चंद्र के माध्यम से मिलते हैं: भाव 9 और चंद्र के स्वामित्व वाले भावों के विषय शुक्र के फलों में घुल जाते हैं।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (गुरु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

इसके साथ बैठे ग्रह:

- बुध के साथ: मोहक वाणी और कलात्मक कौशल, डिज़ाइन, मीडिया और व्यापार के लिए अच्छा।

शुक्र आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (विवाह, प्रेम, सुख-सुविधा, वाहन, कला और सौंदर्य) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 75 है, और यह अपनी राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2067 से 28/08/2087 तक चलती है।

शनि

कारक	अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य
स्थिति	मीन 00:40:37, भाव 10
नक्षत्र	पूर्वा भाद्रपद चरण 4 (स्वामी गुरु)
बल (D1 / D9)	सम राशि / कर्क में शत्रु राशि
स्वामित्व वाले भाव	8, 9
साथ में	कोई नहीं
अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक	8 में से 5
कुल अंक	78 / 100

शनि की दृष्टि भाव 12 (खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद), भाव 4 (घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति), भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) पर है, जिन्हें यह अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा देता है। 5 अष्टकवर्ग अंकों के साथ यह अपनी राशि में अच्छे बल से काम करता है।

गहराई से: आपकी कुंडली में शनि

शनि भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए अनुकूल ग्रह है, इसलिए इसकी दशा जिन विषयों का यह स्वामी है उनमें मदद करती है, और इसे बलवान करना उपयोगी है।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

यह गुरु के नक्षत्र में है, जो भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक गुरु के माध्यम से मिलते हैं: भाव 6 और गुरु के स्वामित्व वाले भावों के विषय शनि के फलों में घुल जाते हैं।

यह कहाँ देखता है:

SAMPLE

- भाव 12 (खर्च, विदेश): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (बुध, शुक्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 4 (घर, माता): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।
- भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।

शनि आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 78 है, और यह सम राशि में है। इसकी मुख्य दशा 27/08/2024 से 28/08/2043 तक चलती है।

राहु

कारक	महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय, तकनीक और लीक से हटकर बातें
स्थिति	तुला 09:04:01, भाव 5
नक्षत्र	स्वाति चरण 1 (स्वामी राहु)
बल (D1 / D9)	मित्र राशि / धनु में सम राशि
स्वामित्व वाले भाव	— (छाया ग्रह)
साथ में	कोई नहीं
कुल अंक	66 / 100

राहु की दृष्टि भाव 9 (भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ), भाव 11 (आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति), भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) पर है, जिन्हें यह महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी देता है।

गहराई से: आपकी कुंडली में राहु

राहु छाया ग्रह है: यह जिस राशि में है उसके और उस राशि के स्वामी शुक्र के माध्यम से काम करता है, जो भाव 12 (खर्च, विदेश) में बैठा है। इसके फलों पर भाव 5 और उस ग्रह के स्वामित्व वाले भावों के विषयों का रंग चढ़ता है।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 9 (भाग्य, पिता): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (चंद्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 11 (आय, लाभ): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (केतु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (सूर्य) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं। क्योंकि लग्न छुआ जा रहा है, आपका स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सामान्य दृष्टिकोण इस प्रभाव को महसूस करते हैं।

राहु आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय, तकनीक और लीक से हटकर बातें) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 66 है, और यह मित्र राशि में है।

केतु

कारक	आध्यात्मिकता, वैराग्य, शोध और मोक्ष
स्थिति	मेष 09:04:01, भाव 11
नक्षत्र	अश्विनी चरण 3 (स्वामी केतु)
बल (D1 / D9)	मित्र राशि / मिथुन में सम राशि
स्वामित्व वाले भाव	— (छाया ग्रह)

SAMPLE

साथ में	कोई नहीं
कुल अंक	60 / 100

केतु की दृष्टि भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद), भाव 5 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता), भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) पर है, जिन्हें यह वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन देता है।

गहराई से: आपकी कुंडली में केतु

केतु छाया ग्रह है: यह जिस राशि में है उसके और उस राशि के स्वामी मंगल के माध्यम से काम करता है, जो भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में बैठा है। इसके फलों पर भाव 11 और उस ग्रह के स्वामित्व वाले भावों के विषयों का रंग चढ़ता है।

यह कहाँ देखता है:

- भाव 3 (साहस, भाई-बहन): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (मंगल) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 5 (संतान, शिक्षा): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (राहु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।

केतु आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (आध्यात्मिकता, वैराग्य, शोध और मोक्ष) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 60 है, और यह मित्र राशि में है। इसकी मुख्य दशा 27/08/2060 से 28/08/2067 तक चलती है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — ग्रहों का स्वभाव, कारकत्व और दृष्टि; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — ग्रहों के कारकत्व।

SAMPLE

नक्षत्रों में ग्रह

हर ग्रह 27 नक्षत्रों में से किसी एक में बैठा है। उस नक्षत्र का स्वामी (नक्षत्रेश) तय करता है कि ग्रह किन विषयों के माध्यम से फल देगा, चरण बताता है कि कौन-सी नवांश राशि उसे रंग देती है, और आपके जन्म नक्षत्र से उसकी गिनती (तारा) बताती है कि वह आपके कल्याण में सहायक है या नहीं।

मृगशिरा नक्षत्र में सूर्य, चरण 3

देवता: सोम (चंद्र देवता) · प्रतीक: हिरण का सिर · नक्षत्र स्वामी: मंगल (भाव 3) · तारा: अति-मित्र

इसका नक्षत्र स्वामी मंगल भाव 3 में बैठा है, इसलिए सूर्य अपने फल का बड़ा भाग साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण तुला नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में विचारशील और मिलनसार गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

शतभिषा नक्षत्र में चंद्र, चरण 2

देवता: वरुण (ब्रह्मांडीय जल के देवता) · प्रतीक: खाली वृत्त · नक्षत्र स्वामी: राहु (भाव 5) · तारा: जन्म

इसका नक्षत्र स्वामी राहु भाव 5 में बैठा है, इसलिए चंद्र अपने फल का बड़ा भाग संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण मकर नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। यह आपके जन्म नक्षत्र वाली (जन्म) तारा में है, इसलिए इसके फल सीधे आपके शरीर और मन को छूते हैं।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में मंगल, चरण 2

देवता: भग (सौभाग्य के देवता) · प्रतीक: पलंग के अगले पाए · नक्षत्र स्वामी: शुक्र (भाव 12) · तारा: साधक

इसका नक्षत्र स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है, इसलिए मंगल अपने फल का बड़ा भाग खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण कन्या नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

रोहिणी नक्षत्र में बुध, चरण 2

देवता: ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) · प्रतीक: रथ या गाड़ी · नक्षत्र स्वामी: चंद्र (भाव 9) · तारा: मित्र

इसका नक्षत्र स्वामी चंद्र भाव 9 में बैठा है, इसलिए बुध अपने फल का बड़ा भाग भाग्य, पिता, गुरु से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण वृषभ नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

अनुराधा नक्षत्र में गुरु, चरण 4

देवता: मित्र (मित्रता के देवता) · प्रतीक: कमल · नक्षत्र स्वामी: शनि (भाव 10) · तारा: विपत

इसका नक्षत्र स्वामी शनि भाव 10 में बैठा है, इसलिए गुरु अपने फल का बड़ा भाग करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण वृश्चिक नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में भावुक और देखभाल करने वाला गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह कठिन तारा में पड़ता है, इसलिए इसकी दशा धैर्य और सावधानी माँगती है; इस ग्रह के उपाय सहायक हैं।

रोहिणी नक्षत्र में शुक्र, चरण 2

देवता: ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) · प्रतीक: रथ या गाड़ी · नक्षत्र स्वामी: चंद्र (भाव 9) · तारा: मित्र

इसका नक्षत्र स्वामी चंद्र भाव 9 में बैठा है, इसलिए शुक्र अपने फल का बड़ा भाग भाग्य, पिता, गुरु से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण वृषभ नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

SAMPLE

पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में शनि, चरण 4

देवता: अज एकपाद (रुद्र का एक-पाद रूप) · प्रतीक: अर्थी का अगला भाग · नक्षत्र स्वामी: गुरु (भाव 6) · तारा: संपत

इसका नक्षत्र स्वामी गुरु भाव 6 में बैठा है, इसलिए शनि अपने फल का बड़ा भाग प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण कर्क नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में भावुक और देखभाल करने वाला गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

स्वाति नक्षत्र में राहु, चरण 1

देवता: वायु (पवन) · प्रतीक: हवा में झूलता नन्हा पौधा · नक्षत्र स्वामी: राहु (भाव 5) · तारा: जन्म

राहु अपने ही नक्षत्र में है, जिससे इसके फल केंद्रित और शुद्ध होते हैं; यह सीधे उन भावों के माध्यम से काम करता है जिनमें यह बैठा है और जिनका स्वामी है। इसका चरण धनु नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में उग्र और सक्रिय गुण जोड़ता है। यह आपके जन्म नक्षत्र वाली (जन्म) तारा में है, इसलिए इसके फल सीधे आपके शरीर और मन को छूते हैं।

अश्विनी नक्षत्र में केतु, चरण 3

देवता: अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य) · प्रतीक: घोड़े का सिर · नक्षत्र स्वामी: केतु (भाव 11) · तारा: प्रत्यरि

केतु अपने ही नक्षत्र में है, जिससे इसके फल केंद्रित और शुद्ध होते हैं; यह सीधे उन भावों के माध्यम से काम करता है जिनमें यह बैठा है और जिनका स्वामी है। इसका चरण मिथुन नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में विचारशील और मिलनसार गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह कठिन तारा में पड़ता है, इसलिए इसकी दशा धैर्य और सावधानी माँगती है; इस ग्रह के उपाय सहायक हैं।

आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — नक्षत्रों में जन्म के फल; रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — तारा बल।

SAMPLE

राशियों में ग्रह

ग्रह जिस राशि में बैठा है, वह उसके प्रकट होने के ढंग को रंग देती है: उसका बल (राशि-बल) और उसके काम करने की शैली।

मिथुन में सूर्य

मिथुन में सूर्य जीवंत बुद्धि, बहुमुखी प्रतिभा और शब्दों तथा अंकों में कौशल देता है। आप जल्दी सीखते हैं और विविधता का आनंद लेते हैं। अपनी प्रतिभा का पूरा उपयोग करने के लिए कुछ ही लक्ष्यों पर ध्यान दें।

कुंभ में चंद्र

कुंभ में चंद्रमा मित्रवत, मानवतावादी और स्वतंत्र मन देता है। आपकी रुचि विचारों और सामाजिक कार्यों में है।

सिंह में मंगल

सिंह में मंगल नेतृत्व, साहस और स्वाभिमानी, प्रभावशाली ऊर्जा देता है। आप उदार और निडर हैं।

वृषभ में बुध

वृषभ में बुध व्यावहारिक, स्थिर सोच और अच्छी व्यापारिक समझ देता है। आप धीरे सीखते हैं पर अच्छी तरह याद रखते हैं।

वृश्चिक में गुरु

वृश्चिक में गुरु गहरा ज्ञान, गूढ़ विद्याओं और शोध में रुचि, और दृढ़ विश्वास देता है।

वृषभ में शुक्र

वृषभ में शुक्र अपनी राशि में होता है। यह आकर्षण, सौंदर्य, सुख-सुविधा और कलाओं का प्रेम, और स्थिर स्नेह देता है।

मीन में शनि

मीन में शनि आध्यात्मिक अनुशासन, करुणा और सेवा देता है। सांसारिक मामलों में अतिरिक्त प्रयास लग सकता है।

तुला में राहु

तुला में राहु साझेदारी के प्रति लीक से हटकर दृष्टिकोण और व्यापार तथा कानून में सफलता देता है।

मेष में केतु

मेष में केतु अचानक साहस और सहज कर्म देता है, निजी यश से विरक्ति के साथ।

आधार: कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — बारह राशियों में ग्रह; वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — राशियों में ग्रह; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — राशियों में ग्रहों के फल।

SAMPLE

आपकी कुंडली के बारह भाव

कुंडली का हर भाव जीवन के एक हिस्से का स्वामी है। उसकी स्थिति इस पर निर्भर करती है कि उसमें कौन-सी राशि है, कौन-से ग्रह बैठे हैं और सबसे बढ़कर, उसका स्वामी ग्रह (भावेश) कहाँ बैठा है।

हर भाव को नीचे पूरे विस्तार से समझाया गया है: जीवन में उसका अर्थ, उसकी राशि और स्वामी उसे कैसे ढालते हैं, उसमें बैठे या उसे देखने वाले ग्रह, रोज़मर्रा की जिन बातों को वह छूता है (क्या हो सकता है और क्या मदद करता है), वे दशाएँ और गोचर जब वह सक्रिय होता है, और उसे मज़बूत रखने के लिए आप क्या कर सकते हैं।

भाव 1 — स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत (सावधानी चाहिए)

राशि: मिथुन · स्वामी: बुध (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: सूर्य

पहला भाव आप स्वयं हैं: आपका शरीर, स्वास्थ्य, रूप, स्वभाव और दुनिया को आप पहली नज़र में कैसे दिखते हैं। यह भी बताता है कि आप काम की शुरुआत कैसे करते हैं, आपमें कितनी जीवन-शक्ति है और जीवन के प्रति आपका मूल दृष्टिकोण क्या है। बाकी हर भाव इसी के सापेक्ष पढ़ा जाता है, इसलिए इसकी स्थिति पूरी कुंडली को रंग देती है।

इस भाव पर मिथुन राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो जिज्ञासु, लचीले और बातूनी है।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

इस भाव के स्वामी बुध मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 12 में हैं, इस भाव के विषय भाव 12 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- सूर्य इस भाव में बैठा है और इस भाव में अधिकार, ध्यान और कुछ गरमी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- राहु इस भाव को देखता है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। सूर्य, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

व्यवहार में: नियमित आराम, व्यायाम और जाँच से स्वास्थ्य और आत्म-विश्वास की रक्षा करें; छोटी-छोटी स्थिर जीतों से आत्मविश्वास बढ़ता है।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

SAMPLE

- इस भाव के स्वामी बुध की महादशा 28/08/2043 से 27/08/2060 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – बुध (31/08/2027 – 10/05/2030)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (सूर्य) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 26/04/2037 – 11/05/2038; 03/04/2049 – 02/04/2050; 23/07/2060 – 10/08/2061। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 31/05/2032 – 13/07/2034; 07/03/2062 – ...। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए बुधवार (बुध का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, हरा रंग को प्राथमिकता दें और ॐ बुधाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 2 — धन, परिवार और वाणी (मध्यम)

राशि: कर्क · स्वामी: चंद्र (भाव 9 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

दूसरा भाव संसाधनों का है: जो धन आप कमाते और बचाते हैं, जिस परिवार में आपका जन्म हुआ, वाणी, भोजन, आरंभिक शिक्षा और आपके मूल्य। यह बताता है कि आप बचत कैसे सँभालते हैं, आप किसे मूल्यवान मानते हैं और आपके शब्द आस-पास के लोगों पर कैसा असर डालते हैं।

इस भाव पर कर्क राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो देखभाल करने वाले, रक्षक और भावुक है।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

इस भाव के स्वामी चंद्र सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 9 में हैं, इस भाव के विषय भाव 9 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- गुरु इस भाव को देखता है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

व्यवहार में: धन ठीक-ठाक आता है; नियमित बचत और सोच-समझकर बोलना पारिवारिक सौहार्द की रक्षा करते हैं।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत; कठिन पक्ष में, धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें; कठिन पक्ष में, कठोर शब्द या ग़लतफ़हमी। क्या सहायक है: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद; कठिन पक्ष में, अनियमित खान-पान या अति। क्या सहायक है: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।
- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि; कठिन पक्ष में, पारिवारिक संपत्ति को लेकर चिंता या पारिवारिक बँटवारे में देरी। क्या सहायक है: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

SAMPLE

- इस भाव के स्वामी चंद्र की महादशा 28/08/2093 से 29/08/2103 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – चंद्र (01/08/2035 – 01/03/2037)।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 11/05/2038 – 02/06/2039; 02/04/2050 – 19/09/2050; 10/08/2061 – 03/09/2062। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 13/07/2034 – 27/08/2036। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए सोमवार (चंद्र का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, सफ़ेद, क्रीम रंग को प्राथमिकता दें और ॐ सोमाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 3 — साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद (मध्यम)

राशि: सिंह · स्वामी: सूर्य (भाव 1 में) · यहाँ ग्रह: मंगल

तीसरा भाव प्रयास और पहल का है: साहस, कौशल और शौक, छोटे भाई-बहन, पड़ोसी, छोटी यात्राएँ, लेखन और हर तरह का संवाद। यह बताता है कि आप अपने हाथ, मन और आवाज़ से क्या कर सकते हैं।

इस भाव पर सिंह राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो आत्मविश्वासी, उदार और स्वाभिमानी है।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

इस भाव के स्वामी सूर्य सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 1 में हैं, इस भाव के विषय भाव 1 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- मंगल इस भाव में बैठा है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- चंद्र इस भाव को देखता है और इस भाव में देखभाल, संवेदनशीलता और परिवर्तनशीलता, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- केतु इस भाव को देखता है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। मंगल, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

व्यवहार में: मेहनत फल देती है; छोटी यात्राएँ और संवाद योजना बनाकर करने पर अच्छे रहते हैं।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा; कठिन पक्ष में, बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता; कठिन पक्ष में, संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग; कठिन पक्ष में,

SAMPLE

पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी सूर्य की महादशा 28/08/2087 से 28/08/2093 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – सूर्य (19/08/2034 – 01/08/2035)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (मंगल) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 31/10/2026 – 24/07/2028; 02/06/2039 – 29/06/2040; 19/09/2050 – 17/10/2051। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 27/08/2036 – 13/07/2039। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए रविवार (सूर्य का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, लाल, नारंगी रंग को प्राथमिकता दें और ॐ सूर्याय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 4 — घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति (मध्यम)

राशि: कन्या · स्वामी: बुध (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

चौथा भाव जीवन की नींव है: घर, माता, संपत्ति, भूमि, वाहन, प्रारंभिक स्कूली शिक्षा और सबसे बढ़कर मन की शांति। यह बताता है कि आप कहाँ सुरक्षित महसूस करते हैं और भीतर से कितने स्थिर हैं।

इस भाव पर कन्या राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो सावधान, विश्लेषणात्मक और सेवा-भाव वाले है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

इस भाव के स्वामी बुध मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 12 में हैं, इस भाव के विषय भाव 12 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- शनि इस भाव को देखता है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार मज़बूत है, इसलिए इसके पास सहारे के लिए अच्छा भंडार है। चंद्र, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (मन, भावनाएँ, माता, घर का सुख और जनता), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

व्यवहार में: घरेलू जीवन ठीक-ठाक है; खरीद की योजना सावधानी से बनाएँ और आराम व परिवार के लिए समय रखें।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **माता** — क्या हो सकता है: माता से निकटता, आशीर्वाद और सुकून; कठिन पक्ष में, माता के स्वास्थ्य की चिंता या उनसे मतभेद। क्या सहायक है: उनके साथ समय बिताएँ, बिना बहस के सुनें और उनकी नियमित जाँच न छूटे यह देखें।
- **घर और पारिवारिक शांति** — क्या हो सकता है: शांत और सुखी घर; कठिन पक्ष में, बेचैनी या घर में छोटे झगड़े। क्या सहायक है: घर व्यवस्थित रखें, छोटी बातें तुरंत सुलझाएँ और रोज़ परिवार को कुछ समय दें।
- **संपत्ति और भूमि** — क्या हो सकता है: मकान, ज़मीन या संपत्ति के मामलों में प्रगति या लाभ; कठिन पक्ष में, संपत्ति के काम में देरी या विवाद। क्या सहायक है: खरीदने से पहले हर कागज़ वकील से जँचवाएँ और जल्दबाज़ी के सौदों से बचें।
- **वाहन** — क्या हो सकता है: अच्छा वाहन खरीदने या उसका सुख लेने का अवसर; कठिन पक्ष में, मरम्मत का खर्च या छोटी दुर्घटनाएँ। क्या सहायक है: वाहन की सर्विस समय पर कराएँ, गति-सीमा में चलाएँ और बीमा चालू रखें।
- **मन की शांति** — क्या हो सकता है: शांत मन और संतोष; कठिन पक्ष में, भीतरी बेचैनी या चिंता। क्या सहायक है: रोज़ कुछ समय शांत बैठें, बाहर टहलें और पूजा या ध्यान जारी रखें।

SAMPLE

- **प्रारंभिक शिक्षा और सुख-सुविधाएँ** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, सीखना और स्थिर जीवन; कठिन पक्ष में, घर या पढ़ाई में ध्यान भटकना और असुविधा। क्या सहायक है: पढ़ाई और आराम के लिए एक तय जगह और समय रखें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी बुध की महादशा 28/08/2043 से 27/08/2060 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – बुध (31/08/2027 – 10/05/2030)।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 24/07/2028 – 25/08/2029; 29/06/2040 – 31/07/2041; 17/10/2051 – 16/11/2052। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 13/07/2039 – 26/09/2041। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए बुधवार (बुध का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, हरा रंग को प्राथमिकता दें और ॐ बुधाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 5 — संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता (सावधानी चाहिए)

राशि: तुला · स्वामी: शुक्र (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: राहु

पाँचवाँ भाव रचनात्मकता और आनंद का है: संतान, शिक्षा, बुद्धि, प्रेम, रचनात्मक प्रतिभा, भक्ति और पिछले शुभ कर्मों का पुण्य। यह सट्टे और दूसरों को दी जाने वाली सलाह को भी छूता है।

इस भाव पर तुला राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो संतुलित, कूटनीतिक और न्यायप्रिय है।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

इस भाव के स्वामी शुक्र अपनी ही राशि में, जो स्थिर, सुखद फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 12 में हैं, इस भाव के विषय भाव 12 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- राहु इस भाव में बैठा है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- केतु इस भाव को देखता है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

व्यवहार में: सीखने और संतान के विषयों में धैर्य और अच्छा मार्गदर्शन चाहिए; नियमित दिनचर्या और विश्वास मदद करते हैं।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: रचनात्मक रुकावट, संदेह या अधूरे काम। क्या सहायक है: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमियाँ या प्रेम में अनुचित निर्णय। क्या सहायक है: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: टिप्स, शॉर्टकट या जुए से हानि। क्या सहायक है: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: भ्रम या ज़्यादा सोचना। क्या सहायक है: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

SAMPLE

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी शुक्र की महादशा 28/08/2067 से 28/08/2087 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – शुक्र (19/06/2031 – 19/08/2034)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (राहु) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 25/08/2029 – 23/09/2030; 31/07/2041 – 28/08/2042; 16/11/2052 – 16/12/2053। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 26/09/2041 – 30/08/2044। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए शुक्रवार (शुक्र का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, सफ़ेद, हल्के रंग रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शुक्राय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 6 — प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु (मध्यम)

राशि: वृश्चिक · स्वामी: मंगल (भाव 3 में) · यहाँ ग्रह: गुरु

छठा भाव रोज़ के संघर्ष का है: काम की दिनचर्या, सेवा, प्रतिस्पर्धा, शत्रु, कर्ज़, बीमारी और स्वास्थ्य-लाभ, तथा कर्मचारी और पालतू जानवर। यह बताता है कि आप दबाव को कैसे सँभालते हैं और बाधाओं से ऊपर उठ पाते हैं या नहीं।

इस भाव पर वृश्चिक राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो तीव्र, निजी और दृढ़ निश्चयी है।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

इस भाव के स्वामी मंगल मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 3 में हैं, इस भाव के विषय भाव 3 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सम स्थिति है।

- गुरु इस भाव में बैठा है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- मंगल इस भाव को देखता है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- बुध इस भाव को देखता है और इस भाव में बुद्धिमत्ता, संवाद और बहुमुखी प्रतिभा, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- शुक्र इस भाव को देखता है और इस भाव में सामंजस्य, सुख और आकर्षण, जो इन विषयों को सहारा देता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। मंगल, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

व्यवहार में: प्रतिस्पर्धा और रोज़ का काम अनुशासन से सँभलने योग्य हैं; स्वास्थ्य और कर्ज़ व्यवस्थित रखें।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन; कठिन पक्ष में, पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

SAMPLE

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम; कठिन पक्ष में, विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी; कठिन पक्ष में, कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।
- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर; कठिन पक्ष में, कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी मंगल की महादशा 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – मंगल (01/03/2037 – 10/04/2038)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (गुरु) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 23/09/2030 – 15/10/2031; 28/08/2042 – 11/09/2043; 16/12/2053 – 11/01/2055। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 30/08/2044 – 08/12/2046। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए मंगलवार (मंगल का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, लाल रंग को प्राथमिकता दें और ॐ मंगलाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 7 — विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार (सावधानी चाहिए)

राशि: धनु · स्वामी: गुरु (भाव 6 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

सातवाँ भाव साझेदारी का है: विवाह और जीवनसाथी, व्यापारिक साझेदार, ग्राहक, समझौते और जनता से हर आमने-सामने का व्यवहार। यह बताता है कि आप दूसरों से बराबरी के स्तर पर कैसे जुड़ते हैं।

इस भाव पर धनु राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो आशावादी, स्वतंत्रता-प्रेमी और दार्शनिक है।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

इस भाव के स्वामी गुरु मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 6 में हैं, इस भाव के विषय भाव 6 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- सूर्य इस भाव को देखता है और इस भाव में अधिकार, ध्यान और कुछ गरमी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- शनि इस भाव को देखता है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- केतु इस भाव को देखता है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। शुक्र, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (विवाह, प्रेम, सुख-सुविधा, वाहन, कला और सौंदर्य), आपकी कुंडली में अच्छी तरह समर्थित हैं, जो इस भाव को अतिरिक्त सहारा देता है।

व्यवहार में: साझेदारी में धैर्य और सावधान चुनाव चाहिए; कुंडलियाँ ध्यान से मिलाएँ और जल्दबाज़ी की प्रतिबद्धताओं से बचें।

SAMPLE

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से मतभेद, दूरी या अहंकार का टकराव। क्या सहायक है: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: विवाह के निर्णय में देरी या असमंजस। क्या सहायक है: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – गुरु (14/02/2041 – 28/08/2043)।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 15/10/2031 – 23/10/2032; 11/09/2043 – 16/02/2044; 11/01/2055 – 31/01/2056। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 08/12/2046 – 04/12/2049। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए गुरुवार (गुरु का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, पीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ गुरवे नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 8 — अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु (मध्यम)

राशि: मकर · स्वामी: शनि (भाव 10 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

आठवाँ भाव छिपे और अचानक का है: रूपांतरण, शोध, रहस्य, विरासत, बीमा, जीवनसाथी के संसाधन, लंबे समय का स्वास्थ्य और आयु। यह जीवन के गहरे सबकों का भाव है।

इस भाव पर मकर राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो अनुशासित, धैर्यवान और महत्वाकांक्षी है।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

इस भाव के स्वामी शनि सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 10 में हैं, इस भाव के विषय भाव 10 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- इस भाव में न कोई ग्रह बैठा है और न इसे देखता है, इसलिए इसे मुख्यतः इसके स्वामी से पढ़ा जाता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। शनि, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य), आपकी कुंडली में अच्छी तरह समर्थित हैं, जो इस भाव को अतिरिक्त सहारा देता है।

व्यवहार में: बदलाव सँभलने योग्य ढंग से आते हैं; बीमा और बचत गद्दी का काम करते हैं।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़; कठिन पक्ष में, अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ; कठिन पक्ष में, विरासत या साझा धन में देरी या विवाद। क्या सहायक है: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह

SAMPLE

लें।

- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता; कठिन पक्ष में, भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ; कठिन पक्ष में, पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग; कठिन पक्ष में, जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी शनि की महादशा 27/08/2024 से 28/08/2043 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 23/10/2032 – 18/03/2033; 16/02/2044 – 02/03/2045; 31/01/2056 – 14/02/2057। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 04/12/2049 – 25/02/2052। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए शनिवार (शनि का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, काला, गहरा नीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शनये नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 9 — भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ (सावधानी चाहिए)

राशि: कुंभ · स्वामी: शनि (भाव 10 में) · यहाँ ग्रह: चंद्र

नौवाँ भाव भाग्य और अर्थ का भाव है: सौभाग्य, पिता, गुरु और मार्गदर्शक, धर्म और आस्था, तीर्थ और लंबी यात्राएँ, उच्च शिक्षा और दान। यह बताता है कि आपके अपने प्रयास से परे आपको क्या सहारा देता है।

इस भाव पर कुंभ राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो स्वतंत्र, मौलिक और समुदाय-भाव वाले है।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

इस भाव के स्वामी शनि सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 10 में हैं, इस भाव के विषय भाव 10 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- चंद्र इस भाव में बैठा है और इस भाव में देखभाल, संवेदनशीलता और परिवर्तनशीलता, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- मंगल इस भाव को देखता है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- राहु इस भाव को देखता है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार कमज़ोर है, इसलिए इसके पास कम भंडार है और अधिक ध्यान चाहिए। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

व्यवहार में: भाग्य प्रयास से कमाना पड़ता है; बड़ों का सम्मान और नियमित धार्मिक साधना इसे बल देते हैं।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: प्रयास के बावजूद देरी या अपेक्षा से कम परिणाम। क्या सहायक है: लगातार

SAMPLE

काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।

- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या बड़ों को लेकर ग़लतफ़हमी, दूरी या स्वास्थ्य की चिंता। क्या सहायक है: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: मार्गदर्शन की कमी या गुरु या बड़े से मतभेद। क्या सहायक है: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।
- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: संदेह, या बिना आंतरिक शांति के कर्मकांड। क्या सहायक है: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।
- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लंबी यात्राओं में देरी और अतिरिक्त खर्च। क्या सहायक है: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।
- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा की योजनाओं में बाधा या बदलाव। क्या सहायक है: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।
- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: ऐसा दान जो ग़लत जगह जाए या जिसकी कद्र न हो। क्या सहायक है: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी शनि की महादशा 27/08/2024 से 28/08/2043 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- इस भाव में बैठे ग्रह (चंद्र) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 18/03/2033 – 28/03/2034; 02/03/2045 – 13/03/2046; 14/02/2057 – 25/02/2058। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 25/02/2052 – 05/02/2055। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए शनिवार (शनि का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, काला, गहरा नीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शनये नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 10 — करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार (सावधानी चाहिए)

राशि: मीन · स्वामी: गुरु (भाव 6 में) · यहाँ ग्रह: शनि

दसवाँ भाव दुनिया में कर्म का है: करियर, पेशा, प्रतिष्ठा, अधिकार, सार्वजनिक छवि और अधिकारियों व सरकार से आपका व्यवहार। यह बताता है कि आप किस बात के लिए जाने जाएँगे।

इस भाव पर मीन राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो कोमल, सहज-बोध वाले और आदर्शवादी है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

इस भाव के स्वामी गुरु मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 6 में हैं, इस भाव के विषय भाव 6 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- शनि इस भाव में बैठा है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- मंगल इस भाव को देखता है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- गुरु इस भाव को देखता है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार मज़बूत है, इसलिए इसके पास सहारे के लिए अच्छा भंडार है। सूर्य, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर

SAMPLE

से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

व्यवहार में: करियर में धैर्य और स्पष्ट विशेषज्ञता चाहिए; बार-बार बदलाव से बचें और बदलाव के लिए अनुकूल अवधियाँ चुनें।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: किसी वरिष्ठ या अधिकारी से टकराव। क्या सहायक है: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: किसी छोटी बात पर आलोचना या मान-हानि। क्या सहायक है: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: आधिकारिक कामों में देरी। क्या सहायक है: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।
- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: ठहराव, दबाव या काम में थोपा गया बदलाव। क्या सहायक है: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: धीमा व्यापार या कड़ी प्रतिस्पर्धा। क्या सहायक है: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – गुरु (14/02/2041 – 28/08/2043)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (शनि) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 28/03/2034 – 06/04/2035; 13/03/2046 – 21/03/2047; 25/02/2058 – 04/03/2059। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 29/03/2025 – 23/02/2028; 05/02/2055 – 07/04/2057। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए गुरुवार (गुरु का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, पीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ गुरवे नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 11 — आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति (मध्यम)

राशि: मेष · स्वामी: मंगल (भाव 3 में) · यहाँ ग्रह: केतु

ग्यारहवाँ भाव लाभ और पूर्ति का है: आय, मुनाफ़ा, मित्र और संपर्क, बड़े भाई-बहन और आपकी इच्छाओं की पूर्ति। यह बताता है कि आपके प्रयास का प्रतिफल आपको किस रूप में लौटकर मिलता है।

इस भाव पर मेष राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो साहसी, सीधे और तुरंत कदम उठाने वाले है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

इस भाव के स्वामी मंगल मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 3 में हैं, इस भाव के विषय भाव 3 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सम स्थिति है।

- केतु इस भाव में बैठा है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- राहु इस भाव को देखता है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार मज़बूत है, इसलिए इसके पास सहारे के लिए अच्छा भंडार है। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

व्यवहार में: लाभ नियमित प्रयास से आते हैं; बड़ा मित्र-वर्ग मदद करता है।

SAMPLE

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह; कठिन पक्ष में, बड़े भाई-बहनों से मतभेद। क्या सहायक है: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं; कठिन पक्ष में, ऐसी इच्छाएँ जिनके लिए और धैर्य चाहिए। क्या सहायक है: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।
- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग; कठिन पक्ष में, किसी समूह के झगड़ों में खिंच जाना। क्या सहायक है: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; कठिन पक्ष में, अपेक्षा से कम आय या भुगतान में देरी। क्या सहायक है: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क; कठिन पक्ष में, ऐसे मित्र जो निराश करें या आपका समय और पैसा खींचें। क्या सहायक है: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी मंगल की महादशा 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – मंगल (01/03/2037 – 10/04/2038)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (केतु) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 06/04/2035 – 15/04/2036; 21/03/2047 – 28/03/2048; 04/03/2059 – 04/03/2060। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 23/02/2028 – 17/04/2030; 07/04/2057 – 28/05/2059। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए मंगलवार (मंगल का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, लाल रंग को प्राथमिकता दें और ॐ मंगलाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

भाव 12 — खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद (मध्यम)

राशि: वृषभ · स्वामी: शुक्र (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: बुध, शुक्र

बारहवाँ भाव छोड़ने का है: खर्च और हानि, विदेश, अस्पताल, नींद, एकांत, आध्यात्मिक जीवन और मुक्ति। यह बताता है कि आप क्या खर्च करते हैं, कहाँ विश्राम लेते हैं और शांति कैसे पाते हैं।

इस भाव पर वृषभ राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो स्थिर, व्यावहारिक और सुख-प्रेमी है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

इस भाव के स्वामी शुक्र अपनी ही राशि में, जो स्थिर, सुखद फल देता है हैं। क्योंकि स्वामी अपने ही भाव में है, ये विषय आत्मनिर्भर हैं और आपके अपने प्रयास पर चलते हैं। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- बुध इस भाव में बैठा है और इस भाव में बुद्धिमत्ता, संवाद और बहुमुखी प्रतिभा, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- शुक्र इस भाव में बैठा है और इस भाव में सामंजस्य, सुख और आकर्षण, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- गुरु इस भाव को देखता है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- शनि इस भाव को देखता है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार कमज़ोर है, इसलिए इसके पास कम भंडार है और अधिक ध्यान चाहिए। शनि, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य), आपकी कुंडली में अच्छी तरह समर्थित हैं, जो इस भाव को अतिरिक्त सहारा देता है।

SAMPLE

व्यवहार में: खर्च और आराम बजट और नियमित नींद से सँभलने योग्य हैं।

रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:

- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति; कठिन पक्ष में, अस्पताल जाना पड़ना या छिपी चिंताएँ। क्या सहायक है: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत; कठिन पक्ष में, लापरवाही से हानि, या छिपा विरोध। क्या सहायक है: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च; कठिन पक्ष में, अनियोजित या भारी खर्च। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर; कठिन पक्ष में, वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें; कठिन पक्ष में, बिगड़ी नींद या रात की चिंताएँ। क्या सहायक है: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति; कठिन पक्ष में, अकेलेपन की भावना या अंतर्मुखी हो जाना। क्या सहायक है: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

यह भाव कब सक्रिय होता है:

- इस भाव के स्वामी शुक्र की महादशा 28/08/2067 से 28/08/2087 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – शुक्र (19/06/2031 – 19/08/2034)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (बुध) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 15/04/2036 – 26/04/2037; 28/03/2048 – 03/04/2049; 04/03/2060 – 23/07/2060। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 17/04/2030 – 31/05/2032; 28/05/2059 – 07/03/2062। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

क्या करें: इस भाव को सहारा देने के लिए शुक्रवार (शुक्र का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, सफ़ेद, हल्के रंग रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शुक्राय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

यहाँ बताए गए उपाय पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं और उसी भाव से दिए गए हैं। स्वास्थ्य, क़ानूनी या धन संबंधी मामलों में कृपया योग्य डॉक्टर, वकील या वित्तीय सलाहकार से भी सलाह लें।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावेशों के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भाव स्वामियों के फल।

SAMPLE

हर भाव का बल

यहाँ हर भाव को पाँच बातों पर तौला गया है: उसका स्वामी कहाँ बैठा है और कितना बलवान है, उसमें कौन-से ग्रह बैठे हैं, किन ग्रहों की उस पर दृष्टि है, उसके सर्वाष्टकवर्ग अंक, और उसके नैसर्गिक कारक की स्थिति। शुभ प्रभाव भाव को बल देता है; अशुभ प्रभाव उसके विषयों को कठिन बनाता है, पर निराशाजनक नहीं।

भाव	स्वामी कहाँ	स्थित ग्रह	दृष्टि	सर्वाष्टक	परिणाम
1	बुध (12)	सूर्य	राहु	29	**सावधानी चाहिए**
2	चंद्र (9)	—	गुरु	27	**मध्यम**
3	सूर्य (1)	मंगल	चंद्र, केतु	26	**मध्यम**
4	बुध (12)	—	शनि	35	**मध्यम**
5	शुक्र (12)	राहु	केतु	27	**सावधानी चाहिए**
6	मंगल (3)	गुरु	मंगल, बुध, शुक्र	25	**मध्यम**
7	गुरु (6)	—	सूर्य, शनि, केतु	25	**सावधानी चाहिए**
8	शनि (10)	—	—	27	**मध्यम**
9	शनि (10)	चंद्र	मंगल, राहु	22	**सावधानी चाहिए**
10	गुरु (6)	शनि	मंगल, गुरु	37	**सावधानी चाहिए**
11	मंगल (3)	केतु	राहु	35	**मध्यम**
12	शुक्र (12)	बुध, शुक्र	गुरु, शनि	22	**मध्यम**

हर भाव का पूरा फलादेश, क्या हो सकता है और क्या मदद करता है, "आपकी कुंडली के बारह भाव" अध्याय में है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों और उनके कारकों का विचार; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भाव-अनुसार फल।

SAMPLE

आपकी कुंडली के योग

योग ग्रहों का एक विशेष मेल है। शुभ योग स्वाभाविक शक्ति के क्षेत्र दिखाते हैं; "सावधानी" वाले योग वे क्षेत्र दिखाते हैं जहाँ प्रयास और उपाय मदद करते हैं। योग अपने फल मुख्यतः उन ग्रहों की दशाओं में देते हैं जिनसे वे बनते हैं।

गजकेसरी योग (शुभ)

कैसे बना: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है।

चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।

सुनफा योग (शुभ)

कैसे बना: चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि।

चंद्रमा से दूसरे भाव में (सूर्य के अतिरिक्त) ग्रह होने पर बनता है। यह स्वयं अर्जित धन, बुद्धि और अच्छी प्रतिष्ठा देता है।

वाशि योग (शुभ)

कैसे बना: सूर्य से बारहवें भाव में बुध, शुक्र।

सूर्य से बारहवें भाव में ग्रह होने पर बनता है। यह उदारता, कौशल और सुख देता है।

अमला योग (शुभ)

कैसे बना: गुरु लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में है।

लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर बनता है। यह बेदाग प्रतिष्ठा, नैतिक आचरण और अच्छे कामों से स्थायी यश देता है।

राजयोग (शुभ)

कैसे बना: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं।

जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।

विमल योग (विपरीत राजयोग) (शुभ)

कैसे बना: भाव 12 का स्वामी शुक्र भाव 12 में है।

बारहवें भाव के स्वामी के कठिन भाव में होने पर बनता है। यह अच्छा आचरण, आत्मनिर्भरता और बचत देता है, तथा खर्च घटाता है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — योगों के अध्याय (नाभस, चंद्र, सूर्य, राज और धन योग); मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — योग अध्याय; कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — चंद्रमा और सूर्य से बनने वाले योग।

SAMPLE

जीवन के क्षेत्र

जीवन के हर क्षेत्र को उससे जुड़ी सब बातों को मिलाकर परखा जाता है: उसके भाव और उनके स्वामी, उनमें बैठे या उन्हें देखने वाले ग्रह, स्वाभाविक कारक, अष्टकवर्ग अंक और उसका अध्ययन करने वाला विभाजित चार्ट। हर क्षेत्र के लिए आपको स्पष्ट निष्कर्ष मिलता है, उसके पक्ष और विपक्ष के कारण, क्या अपेक्षा करें, और वे अवधियाँ जिनमें वह सबसे अधिक सक्रिय रहने की संभावना है।

करियर और व्यवसाय — बहुत मज़बूत (8.6/10)

करियर का विचार मुख्यतः दसवें भाव (पद और कर्म) से होता है, साथ में छठे (रोज़ का काम और सेवा) और दूसरे (कमाई) से। शनि लगातार प्रयास, सूर्य अधिकार और बुध कौशल दिखाता है। दशमांश (D10) से तस्वीर और साफ़ होती है।

निष्कर्ष: करियर आपकी कुंडली के बेहतर समर्थित क्षेत्रों में से है: वास्तविक उन्नति, ज़िम्मेदारी और मान-सम्मान की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

क्या सहारा देता है

- इस भाव की राशि में 37 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो मज़बूत आधार है।
- शनि यहाँ बैठे हैं, और भाव 10 में पाप ग्रह मेहनत से ऊर्जा और परिणाम देता है।
- भाव 6 के स्वामी मंगल भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- गुरु वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- दसवें भाव के स्वामी गुरु भाव 5 के स्वामी शुक्र (एक-दूसरे को देखते हुए) से जुड़े हैं, जो प्रतिष्ठा का शास्त्रीय राज योग है।

क्या रोकता है

- भाव 10 के स्वामी गुरु कठिन भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- स्वाभाविक कारक सूर्य आपकी कुंडली में कम समर्थित है (100 में से 38)।

क्या अपेक्षा करें

- आपकी कुंडली के दसवें भाव के अनुकूल क्षेत्र: उद्योग और विनिर्माण, बड़े संगठन, भूमि और कृषि, खनन और तेल, ढाँचेबद्ध दीर्घकालिक सेवा (शनि द्वारा दर्शाए गए, जो आपके दसवें भाव पर सबसे प्रबल प्रभाव हैं)।
- बल की दूसरी धारा बुध है, जो आपकी कुंडली का एक मज़बूत ग्रह है: व्यापार, लेखा और वित्त, लेखन और मीडिया, शिक्षण, आईटी और संचार।
- दसवें भाव के स्वामी भाव 6 में हैं, जो सेवा, उपचार या प्रतिस्पर्धी क्षेत्र की ओर संकेत करता है।

विस्तार से: करियर और व्यवसाय

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 10 है। यह मीन राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी गुरु भाव 6 में बैठा है।

दसवें भाव में मीन राशि कल्पनाशील और करुणामय है: उपचार, कला, आध्यात्मिकता, जल से जुड़े व्यवसाय और पर्दे के पीछे का काम आपके अनुकूल हैं, और स्पष्ट लक्ष्य विचारों को परिणाम में बदलने में मदद करते हैं।

आपके दसवें भाव का स्वामी छठे भाव में बैठा है: सेवा, उपचार, कानून, प्रतिस्पर्धा और समस्या-समाधान आपके अनुकूल हैं; आप वे कठिनाइयाँ सँभालकर सफल होते हैं जिनसे दूसरे बचते हैं, और नौकरी अक्सर व्यवसाय से अधिक स्थिर रहती है।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत से धीमी पर टिकाऊ उन्नति देता है; अनुशासन, धैर्य और ज़िम्मेदारी आपका मार्ग हैं, और सफलता आमतौर पर तीस के दशक की शुरुआत के बाद सबसे मज़बूत होती है।

नौकरी या व्यवसाय? आपकी कुंडली किसी संगठन या संस्था में नौकरी की ओर झुकी है, जहाँ स्थिर उन्नति, पद और सुरक्षा मायने रखते हैं; भरोसेमंद साझेदार के साथ और ठोस अनुभव के बाद व्यवसाय संभव है।

SAMPLE

आयु 18 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: गुरु–बुध (17/06/2013 से 04/08/2015 तक, आयु 18–20); गुरु–शुक्र (09/07/2016 से 11/03/2019 तक, आयु 21–23); शनि–शनि (27/08/2024 से 31/08/2027 तक, आयु 29–32)।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 31/01/2027 से 10/06/2027 तक (आयु 31): गुरु कर्क में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शनि दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 02/10/2030 से 19/02/2031 तक (आयु 35): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 07/05/2041 से 05/08/2041 तक (आयु 45–46): गुरु कन्या में और शनि कन्या में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 11/12/2049 से 27/09/2050 तक (आयु 54–55): गुरु कर्क में और शनि मकर में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – सूर्य दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); शनि–चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक, आयु 40–41); शनि–मंगल (01/03/2037 से 10/04/2038 तक, आयु 41–42); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

सलाह

- ऊँचा लक्ष्य रखें और नेतृत्व की भूमिकाएँ लें; आपकी कुंडली मान-सम्मान का साथ देती है।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी सूर्य है। इसे मज़बूत करने के लिए: रविवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग लाल, नारंगी पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ सूर्याय नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
10	मीन	गुरु (भाव 6)	शनि	37
6	वृश्चिक	मंगल (भाव 3)	गुरु	25
2	कर्क	चंद्र (भाव 9)	—	27

SAMPLE

धन और आर्थिक स्थिति — बहुत मज़बूत (8.3/10)

धन का विचार दूसरे भाव (बचत और पारिवारिक धन), ग्यारहवें (आय और लाभ) और नौवें (भाग्य) से होता है। गुरु और शुक्र समृद्धि के नैसर्गिक कारक हैं। होरा कुंडली (D2) से और विवरण मिलता है।

निष्कर्ष: धन अच्छी तरह समर्थित है: आपकी कुंडली कमाने और जमा करने की अच्छी क्षमता दिखाती है, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

क्या सहारा देता है

- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।
- दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी (चंद्र और मंगल) जुड़े हुए हैं (एक-दूसरे को देखते हुए), जो कमाई और बचत का शास्त्रीय धन योग है।
- भाव 9 के स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- इस भाव की राशि में 35 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो मज़बूत आधार है।

क्या रोकता है

- केतु, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- चंद्र, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- इस भाव की राशि में केवल 22 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो कमज़ोर आधार है।
- मंगल, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- आपकी आय सबसे अधिक तकनीकी कौशल, संपत्ति या शारीरिक उद्यम के रास्ते आने की संभावना है (मंगल द्वारा दर्शाई गई, जो ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं)।
- बचत और पारिवारिक धन चंद्र से दर्शाया जाता है, जो दूसरे भाव के स्वामी हैं और जनता से व्यवहार, खान-पान, यात्रा या देखभाल से जुड़े हैं।
- ग्यारहवें भाव के स्वामी सरल भाव में नहीं हैं, इसलिए आय मेहनत से बढ़ती है और जोखिम के बजाय नियमित बचत से बेहतर बनती है।

विस्तार से: धन और आर्थिक स्थिति

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 2 है। यह कर्क राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी चंद्र भाव 9 में बैठा है।

दूसरे भाव में कर्क राशि धन को परिवार, घर और भावनात्मक सुरक्षा से जोड़ती है; आप अपनों के लिए बचाते हैं, और संपत्ति, भोजन या घर से जुड़ी आमदनी सहायक हो सकती है।

आपके दूसरे भाव का स्वामी नौवें भाव में बैठा है: भाग्य आपके वित्त का साथ देता है, और शिक्षण, कानून, यात्रा, धर्म या पिता से लाभ होता है; धन अच्छे कर्म और उदारता के साथ आता है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है, इसलिए इसके फल मुख्यतः इसके स्वामी और इसे देखने वाले ग्रहों के माध्यम से मिलते हैं।

आपके दूसरे भाव (बचत) में 27 अष्टकवर्ग अंक हैं और ग्यारहवें भाव (आमदनी) में 35; औसत 28 है। यह औसत आधार है: स्थिर प्रयास और नियमित बचत परिणाम तय करते हैं।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

SAMPLE

- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 13/07/2034 से 09/04/2035 तक (आयु 39): गुरु मीन में और शनि कर्क में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 10/09/2036 से 19/11/2036 तक (आयु 41): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 28/04/2037 से 25/09/2037 तक (आयु 41–42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – मंगल दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 23/01/2038 से 13/05/2038 तक (आयु 42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – मंगल दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); शनि–चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक, आयु 40–41); शनि–मंगल (01/03/2037 से 10/04/2038 तक, आयु 41–42); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48)।

सलाह

- नियमित और योजनाबद्ध ढंग से निवेश करें; आपकी कुंडली वास्तविक संचय का साथ देती है।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
2	कर्क	चंद्र (भाव 9)	—	27
11	मेष	मंगल (भाव 3)	केतु	35
9	कुंभ	शनि (भाव 10)	चंद्र	22

SAMPLE

विवाह और साझेदारी — मज़बूत (6.2/10)

विवाह का विचार सातवें भाव (जीवनसाथी और साझेदारी) से होता है, साथ में दूसरे (पारिवारिक जीवन) और बारहवें (निकटता और शय्या-सुख) से। शुक्र विवाह का कारक है (और स्त्री की कुंडली में गुरु पति का कारक)। यहाँ नवांश (D9) अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष: विवाह और साझेदारी अच्छी तरह समर्थित हैं: आपकी कुंडली स्थिर, स्नेहपूर्ण रिश्ते के पक्ष में है।

क्या सहारा देता है

- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- गुरु वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।
- भाव 12 के स्वामी शुक्र अपने ही घर में हैं, जिससे इस भाव की हर बात को बल मिलता है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।

क्या रोकता है

- भाव 7 के स्वामी गुरु कठिन भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- सूर्य, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- शनि, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- केतु, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- सातवाँ भाव धनु राशि में पड़ता है और उसके स्वामी गुरु भाव 6 में हैं। जीवनसाथी समझदार, दयालु और सुशिक्षित, अच्छे संस्कारों वाला होने की संभावना है (गुरु द्वारा दर्शाया गया)।
- शुक्र भाव 12 में है और गुरु भाव 6 में; शुक्र, गुरु और सातवें भाव के स्वामी की दशाएँ विवाह और रिश्ते में महत्वपूर्ण बदलावों के सबसे संभावित समय हैं।
- शनि सातवें भाव को प्रभावित करते हैं: विवाह अक्सर कुछ देर से होता है, परिपक्व या गंभीर जीवनसाथी के साथ, और समय के साथ मज़बूत होता है।

विस्तार से: विवाह और साझेदारी

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 7 है। यह धनु राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी गुरु भाव 6 में बैठा है।

सातवें भाव में धनु राशि एक प्रसन्न, ईमानदार और स्वतंत्रता-प्रेमी साथी की ओर संकेत करती है, जो शायद अलग पृष्ठभूमि या स्थान से हो; साझा मूल्य और यात्रा बंधन में मदद करते हैं।

आपके सातवें भाव का स्वामी छठे भाव में बैठा है: साथी से काम या सेवा के माध्यम से भेंट हो सकती है, और रिश्ते को धैर्य चाहिए, क्योंकि रोज़ के कर्तव्यों और छोटी असहमतियों को सावधानी से सँभालना पड़ता है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है, इसलिए इसके फल मुख्यतः इसके स्वामी और इसे देखने वाले ग्रहों के माध्यम से मिलते हैं।

अपनी राशि वृषभ में शुक्र आपको स्नेही, इंद्रिय-सुखप्रिय और वफ़ादार बनाता है; आप सुख-सुविधा, अच्छे भोजन और स्थायी प्रतिबद्धता को महत्व देते हैं।

आयु 21 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: गुरु–शुक्र (09/07/2016 से 11/03/2019 तक, आयु 21–23); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं।

SAMPLE

अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 22/11/2026 से 31/01/2027 तक (आयु 31): गुरु सिंह में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 02/10/2030 से 19/02/2031 तक (आयु 35): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 22/08/2032 से 31/10/2032 तक (आयु 37): गुरु धनु में और शनि मिथुन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 06/02/2043 से 05/08/2043 तक (आयु 47–48): गुरु धनु में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 14/09/2043 से 13/12/2043 तक (आयु 48): गुरु धनु में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

सलाह

- विवाह का साथ है; रिश्ते को समय और ईमानदार संवाद दें।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
7	धनु	गुरु (भाव 6)	—	25
2	कर्क	चंद्र (भाव 9)	—	27
12	वृषभ	शुक्र (भाव 12)	बुध, शुक्र	22

SAMPLE

संतान — मध्यम (4.9/10)

संतान का विचार पाँचवें भाव से होता है, और नौवाँ भाव पाँचवें से पाँचवाँ होने के कारण साथ में देखा जाता है। गुरु संतान का कारक है। सप्तांश (D7) से और विवरण मिलता है।

निष्कर्ष: संतान के विषय मध्यम रूप से समर्थित हैं; सही समय और स्वास्थ्य की अच्छी आदतें मदद करती हैं।

क्या सहारा देता है

- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।
- भाव 9 के स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- शुक्र वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।

क्या रोकता है

- भाव 5 के स्वामी शुक्र कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- राहु, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- केतु, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- चंद्र, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- पाँचवें भाव के स्वामी शुक्र भाव 12 में हैं; गुरु की, शुक्र की और पाँचवें भाव के ग्रहों की अवधियाँ संतान संबंधी विषयों के सबसे संभावित समय हैं। यह अध्याय संतानों की संख्या नहीं बताता।

विस्तार से: संतान

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 5 है। यह तुला राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है।

पाँचवें भाव में तुला राशि आकर्षक, निष्पक्ष संतान की ओर संकेत करती है जिसकी कलात्मक दृष्टि होती है; घर में सामंजस्य प्राथमिकता है।

आपके पाँचवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: संतान दूर रह सकती है या विदेश में पढ़ सकती है, या संतान तक का मार्ग खर्च या दूरी से जुड़ा हो सकता है; संतान के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि।

पाँचवें भाव में राहु अपरंपरागत, महत्वाकांक्षी मन और तकनीक या असामान्य विषयों में रुचि देता है; संतान के मामलों में अच्छा चिकित्सकीय मार्गदर्शन मदद करता है, और सट्टे से बचना बेहतर है।

आयु 22 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: गुरु–शुक्र (17/06/2017 से 11/03/2019 तक, आयु 22–23); शनि–शनि (27/08/2024 से 31/08/2027 तक, आयु 29–32); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39)।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

SAMPLE

- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 31/08/2036 से 25/09/2037 तक (आयु 41–42): गुरु वृषभ में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 23/01/2038 से 13/05/2038 तक (आयु 42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – राहु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 04/10/2041 से 12/01/2042 तक (आयु 46): गुरु तुला में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 11/06/2042 से 30/08/2042 तक (आयु 46–47): गुरु तुला में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); शनि–चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक, आयु 40–41); शनि–राहु (10/04/2038 से 14/02/2041 तक, आयु 42–45); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48)।

सलाह

- परिणाम ठीक-ठाक हैं; स्वास्थ्य की अच्छी आदतें और धैर्य मदद करते हैं।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
5	तुला	शुक्र (भाव 12)	राहु	27
9	कुंभ	शनि (भाव 10)	चंद्र	22
2	कर्क	चंद्र (भाव 9)	—	27

SAMPLE

शिक्षा और विद्या — मध्यम (4.6/10)

प्रारंभिक शिक्षा का विचार चौथे भाव से, बुद्धि का पाँचवें से और उच्च शिक्षा का नौवें से होता है। बुध और गुरु इसके कारक हैं। चतुर्विंशांश (D24) से और विवरण मिलता है।

निष्कर्ष: शिक्षा मध्यम रूप से समर्थित है: परिणाम नियमित दिनचर्या और सही विषय पर निर्भर करते हैं।

क्या सहारा देता है

- इस भाव की राशि में 35 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो मज़बूत आधार है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।
- बुध वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- भाव 9 के स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- बुध मित्र राशि में हैं, जो सहायक है।

क्या रोकता है

- भाव 4 के स्वामी बुध कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- भाव 5 के स्वामी शुक्र कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- शनि, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- राहु, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- आपके लिए उपयुक्त विषय: कला, डिज़ाइन, संगीत, फ़ैशन और होटल प्रबंधन (शुक्र द्वारा दर्शाए गए, जो पाँचवें भाव के स्वामी हैं)।
- आपकी पढ़ाई को सबसे अच्छा सहारा बुध से मिलता है, जो आपकी कुंडली में बुध और गुरु में से अधिक बलवान है: विश्लेषण, अभ्यास और संवाद।

विस्तार से: शिक्षा और विद्या

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 5 है। यह तुला राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है।

पाँचवें भाव में तुला राशि संतुलित मन देती है जो दोनों पक्ष तौलता है; कानून, डिज़ाइन, कला और कूटनीति आपके अनुकूल हैं, और अध्ययन-समूह मदद करते हैं।

आपके पाँचवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: घर से दूर या विदेश में पढ़ाई; शोध, ध्यान और एकांत में किए जाने वाले विषय आपके अनुकूल हैं, और शिक्षा पर खर्च होता है।

पाँचवें भाव में राहु अपरंपरागत मन और तकनीक, विदेशी भाषाओं तथा असामान्य विषयों की प्रतिभा देता है; शॉर्टकट से बचें।

वृषभ में बुध धीरे और व्यावहारिक ढंग से सोचता है: आप दोहराकर सीखते हैं, अच्छा याद रखते हैं और मधुर बोलते हैं।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत

SAMPLE

समय-खंडों में से एक है।

- 31/12/2028 से 31/03/2029 तक (आयु 33): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 07/10/2029 से 25/01/2030 तक (आयु 34): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 04/10/2041 से 12/01/2042 तक (आयु 46): गुरु तुला में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

सलाह

- प्रतिभा से अधिक नियमित अभ्यास मायने रखता है; ऐसा विषय चुनें जो आपको पसंद हो।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
4	कन्या	बुध (भाव 12)	—	35
5	तुला	शुक्र (भाव 12)	राहु	27
9	कुंभ	शनि (भाव 10)	चंद्र	22

SAMPLE

स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति — प्रयास ज़रूरी (3.7/10)

स्वास्थ्य का विचार पहले भाव (शरीर और जीवन-शक्ति), छठे (रोग और स्वास्थ्य-लाभ) और आठवें (पुराने रोग और आयु) से होता है। सूर्य जीवन-शक्ति और चंद्रमा मन दिखाता है। त्रिंशांश (D30) बताता है कि किन क्षेत्रों में सावधानी चाहिए। यह भाग केवल पारंपरिक मार्गदर्शन है और कभी भी डॉक्टर की सलाह का विकल्प नहीं है।

निष्कर्ष: स्वास्थ्य पर सचेत ध्यान चाहिए: नियमित जाँच, आराम और अनुशासित दिनचर्या सामान्य से अधिक मायने रखती है, विशेषकर परीक्षा वाली अवधियों में।

क्या सहारा देता है

- बुध वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- बुध मित्र राशि में हैं, जो सहायक है।
- गुरु, स्वाभाविक शुभ ग्रह, इस भाव में बैठकर सहारा देते हैं।
- बुध, शुभ ग्रह, इस भाव को देखकर इसे सहारा देते हैं।
- शुक्र, शुभ ग्रह, इस भाव को देखकर इसे सहारा देते हैं।

क्या रोकता है

- भाव 1 के स्वामी बुध कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- सूर्य, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- राहु, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- स्वाभाविक कारक सूर्य आपकी कुंडली में कम समर्थित है (100 में से 38)।

क्या अपेक्षा करें

- लग्न, छठे और आठवें भाव के अनुसार ध्यान रखने योग्य शरीर के अंग: कंधे, बाँहें, फेफड़े और नसें; प्रजनन और उत्सर्जन अंग; घुटने, हड्डियाँ और जोड़। ये ध्यान में रखने की प्रवृत्तियाँ हैं, निदान नहीं।
- स्वास्थ्य की किसी भी चिंता पर डॉक्टर को दिखाएँ; ज्योतिष सहारा देता है, चिकित्सा सलाह की जगह कभी नहीं लेता।

विस्तार से: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 1 है। यह मिथुन राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी बुध भाव 12 में बैठा है।

लग्न में मिथुन राशि पतली, बेचैन, नर्वस ऊर्जा देती है; कंधे, बाँहें, फेफड़े और नसों को आराम चाहिए, और अधिक सोचने से नींद आसानी से बिगड़ती है।

आपके लग्न का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: जीवनी-शक्ति आसानी से खर्च हो जाती है, इसलिए नींद, विश्राम और एकांत ज़रूरी हैं; अस्पताल या विदेश में रहना संभव है, और आध्यात्मिक साधना आपको पुनः ऊर्जा देती है।

पहले भाव में सूर्य मज़बूत जीवनी-शक्ति, प्रभावशाली उपस्थिति और गर्मी, सिरदर्द तथा आँखों के तनाव की ओर झुकाव देता है; पर्याप्त पानी पिएँ और विश्राम का सम्मान करें।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 31/12/2028 से 31/03/2029 तक (आयु 33): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-

SAMPLE

खंडों में से एक है।

- 07/10/2029 से 25/01/2030 तक (आयु 34): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 19/11/2036 से 28/04/2037 तक (आयु 41): गुरु वृषभ में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 21/02/2044 से 30/06/2044 तक (आयु 48–49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 08/09/2044 से 07/03/2045 तक (आयु 49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54); बुध–सूर्य (21/11/2049 से 27/09/2050 तक, आयु 54–55); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

सलाह

- छोटे लक्षणों को अनदेखा न करें; नियमित जाँच और व्यायाम मदद करते हैं।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी सूर्य है। इसे मज़बूत करने के लिए: रविवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग लाल, नारंगी पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ सूर्याय नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
1	मिथुन	बुध (भाव 12)	सूर्य	29
6	वृश्चिक	मंगल (भाव 3)	गुरु	25
8	मकर	शनि (भाव 10)	—	27

SAMPLE

घर, संपत्ति और वाहन — मज़बूत (6.7/10)

घर और संपत्ति का विचार चौथे भाव से होता है, और लाभ का ग्यारहवें से। मंगल भूमि का तथा शुक्र वाहन और सुख-सुविधा का कारक है। चतुर्थांश (D4) से और विवरण मिलता है।

निष्कर्ष: घर, संपत्ति और वाहन अच्छी तरह समर्थित हैं: घर में सुख और संपत्ति में लाभ की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

क्या सहारा देता है

- इस भाव की राशि में 35 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो मज़बूत आधार है।
- बुध वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- बुध मित्र राशि में हैं, जो सहायक है।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।

क्या रोकता है

- भाव 4 के स्वामी बुध कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- शनि, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- केतु, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- चौथे भाव के स्वामी बुध भाव 12 में हैं; मंगल, शुक्र, बुध और ग्यारहवें भाव के स्वामी की अवधियाँ घर, ज़मीन या वाहन खरीदने के सबसे संभावित समय हैं।
- चंद्र, जो माता और मन की शांति दर्शाते हैं, आपकी कुंडली में सुखद स्थिति में हैं।

विस्तार से: घर, संपत्ति और वाहन

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 4 है। यह कन्या राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी बुध भाव 12 में बैठा है।

चौथे भाव में कन्या राशि साफ़-सुथरे, व्यावहारिक और व्यवस्थित घर की ओर संकेत करती है; संपत्ति के निर्णय सावधानी भरे होते हैं, और घर की स्वच्छता तथा स्वास्थ्य मायने रखते हैं।

आपके चौथे भाव का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: आप जन्मस्थान से दूर या विदेश में रह सकते हैं, और घर पर खर्च होता है; विदेश में संपत्ति संभव है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है, इसलिए इसके फल मुख्यतः इसके स्वामी और इसे देखने वाले ग्रहों के माध्यम से मिलते हैं।

आयु 24 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–केतु (24/01/2046 से 21/01/2047 तक, आयु 50–51)।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 21/02/2044 से 30/06/2044 तक (आयु 48–49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने

SAMPLE

वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

- 08/09/2044 से 07/03/2045 तक (आयु 49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 17/12/2046 से 27/03/2047 तक (आयु 51): गुरु मीन में और शनि धनु में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 31/03/2048 से 18/08/2048 तक (आयु 52–53): गुरु वृषभ में और शनि धनु में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 05/01/2049 से 16/03/2049 तक (आयु 53): गुरु वृषभ में और शनि धनु में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–केतु (24/01/2046 से 21/01/2047 तक, आयु 50–51); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54); बुध–सूर्य (21/11/2049 से 27/09/2050 तक, आयु 54–55); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

सलाह

- घर और संपत्ति का साथ है; खरीद की योजना सावधानी से बनाएँ।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी मंगल है। इसे मज़बूत करने के लिए: मंगलवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग लाल पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ मंगलाय नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
4	कन्या	बुध (भाव 12)	—	35
11	मेष	मंगल (भाव 3)	केतु	35
2	कर्क	चंद्र (भाव 9)	—	27

SAMPLE

यात्रा और विदेश से संबंध — प्रबल संकेत (7.8/10)

विदेश यात्रा और विदेश में निवास का विचार बारहवें भाव से, लंबी यात्राओं का नौवें से और छोटी यात्राओं का तीसरे से होता है। राहु और चंद्रमा गतिशीलता और विदेशी संबंध दिखाते हैं।

निष्कर्ष: विदेश यात्रा, पढ़ाई या काम आपकी कुंडली में अच्छी तरह संकेतित है, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

क्या सहारा देता है

- भाव 12 के स्वामी शुक्र अपने ही घर में हैं, जिससे इस भाव की हर बात को बल मिलता है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।
- बुध, स्वाभाविक शुभ ग्रह, इस भाव में बैठकर सहारा देते हैं।
- भाव 9 के स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।

क्या रोकता है

- इस भाव की राशि में केवल 22 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो कमज़ोर आधार है।
- शनि, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- चंद्र, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- मंगल, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- बारहवें भाव के स्वामी शुक्र भाव 12 में हैं, और राहु भाव 5 में है; राहु की, बारहवें और नवें भाव के स्वामियों की अवधियाँ विदेश यात्रा, पढ़ाई या बसने के सबसे संभावित समय हैं।

विस्तार से: यात्रा और विदेश से संबंध

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 12 है। यह वृषभ राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है।

बारहवें भाव में वृषभ राशि सुख-सुविधा, धन, कला या कृषि के माध्यम से विदेश से जुड़ाव की ओर संकेत करती है; अच्छे भोजन वाली स्थिर जगहें आपके अनुकूल हैं, और आप आसानी से बस जाते हैं।

आपके बारहवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में ही बैठा है: विदेश में निवास या लंबी यात्राओं का मज़बूत संकेत, विदेश में खर्च और एक शांत विश्राम-स्थल के साथ।

बारहवें भाव में बुध विदेशी व्यापार, अध्ययन और संवाद के अनुकूल है; भाषाएँ और लेखन आपको विदेश से जोड़ते हैं।

बारहवें भाव में शुक्र विदेश में सुख और यात्रा तथा विलासिता का आनंद देता है; विदेशी साझेदारियाँ और कलात्मक उपक्रम।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

SAMPLE

- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 19/11/2036 से 28/04/2037 तक (आयु 41): गुरु वृषभ में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 21/02/2044 से 30/06/2044 तक (आयु 48–49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 08/09/2044 से 07/03/2045 तक (आयु 49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); शनि–राहु (10/04/2038 से 14/02/2041 तक, आयु 42–45); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54)।

सलाह

- विदेशी अवसर अच्छी तरह संकेतित हैं; कागज़ात और कौशल पहले से तैयार रखें।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
12	वृषभ	शुक्र (भाव 12)	बुध, शुक्र	22
9	कुंभ	शनि (भाव 10)	चंद्र	22
3	सिंह	सूर्य (भाव 1)	मंगल	26

SAMPLE

आध्यात्मिक जीवन — मौजूद (4.6/10)

आध्यात्मिक जीवन का विचार नौवें भाव (धर्म), बारहवें (मोक्ष) और पाँचवें (मंत्र और भक्ति) से होता है। गुरु और केतु इसके कारक हैं। विंशांश (D20) से और विवरण मिलता है।

निष्कर्ष: मध्यम आध्यात्मिक रुचि दिखती है, जो उम्र और सही मार्गदर्शन के साथ बढ़ती है।

क्या सहारा देता है

- भाव 9 के स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- भाव 12 के स्वामी शुक्र अपने ही घर में हैं, जिससे इस भाव की हर बात को बल मिलता है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।
- बुध, स्वाभाविक शुभ ग्रह, इस भाव में बैठकर सहारा देते हैं।

क्या रोकता है

- चंद्र, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- इस भाव की राशि में केवल 22 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो कमज़ोर आधार है।
- मंगल, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।
- राहु, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

क्या अपेक्षा करें

- केतु भाव 11 में है और गुरु भाव 6 में; नवें भाव के स्वामी शनि भाव 10 में हैं। धर्म, ध्यान और सेवा में रुचि गुरु, केतु और नवें भाव के स्वामी की अवधियों में गहरी होती है।

विस्तार से: आध्यात्मिक जीवन

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 9 है। यह कुंभ राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शनि भाव 10 में बैठा है।

नौवें भाव में कुंभ राशि सार्वभौमिक, मानवतावादी आस्था देती है; विज्ञान और अध्यात्म मिलते हैं, और समाज की सेवा साधना बनती है।

आपके नौवें भाव का स्वामी दसवें भाव में बैठा है: आपका काम और कर्तव्य ही आपका धर्म बन जाता है, और भाग्य करियर तथा जनसेवा से आता है।

नौवें भाव में चंद्र भक्तिपूर्ण, भावनात्मक आस्था और तीर्थयात्रा के प्रति प्रेम देता है; माता का आशीर्वाद मायने रखता है।

ध्यान देने योग्य वर्ष — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 31/01/2027 से 10/06/2027 तक (आयु 31): गुरु कर्क में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शनि दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 05/05/2030 से 02/10/2030 तक (आयु 34–35): गुरु तुला में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – केतु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक

SAMPLE

मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

- 04/04/2034 से 13/07/2034 तक (आयु 38–39): गुरु मीन में और शनि मिथुन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 10/09/2036 से 19/11/2036 तक (आयु 41): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 28/04/2037 से 25/09/2037 तक (आयु 41–42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – मंगल दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); शनि–चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक, आयु 40–41); शनि–राहु (10/04/2038 से 14/02/2041 तक, आयु 42–45); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54)।

सलाह

- आध्यात्मिक रुचि मौजूद है; सरल दैनिक साधना मदद करती है।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

भाव	राशि	स्वामी (कहाँ बैठा)	भाव में ग्रह	सर्वाष्टक अंक
9	कुंभ	शनि (भाव 10)	चंद्र	22
12	वृषभ	शुक्र (भाव 12)	बुध, शुक्र	22
5	तुला	शुक्र (भाव 12)	राहु	27

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों और उनके कारकों का विचार; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भाव-अनुसार फल; वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी) — भावों के फल।

SAMPLE

अष्टकवर्ग से भाव बल

सर्वाष्टकवर्ग सात ग्रहों और लग्न द्वारा हर राशि को दिए गए शुभ अंकों का योग है। अधिक अंकों वाला भाव अपने विषयों को अधिक मज़बूती से सहारा देता है, और अधिक अंकों वाली राशि से गुज़रते धीमे ग्रह प्रायः बेहतर फल देते हैं।

भाव	राशि	अंक	बल	विषय
1	मिथुन	**29**	मज़बूत	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
2	कर्क	**27**	औसत	धन, परिवार और वाणी
3	सिंह	**26**	औसत	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
4	कन्या	**35**	मज़बूत	घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति
5	तुला	**27**	औसत	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
6	वृश्चिक	**25**	औसत	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
7	धनु	**25**	औसत	विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार
8	मकर	**27**	औसत	अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु
9	कुंभ	**22**	कमज़ोर	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
10	मीन	**37**	मज़बूत	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
11	मेष	**35**	मज़बूत	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
12	वृषभ	**22**	कमज़ोर	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद

आपके सबसे मज़बूत भाव

भाव 10 (मीन, 37 अंक) — करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार: इस भाव को मज़बूत सहारा है (28 या अधिक अंक)। इस भाव के विषय फलते-फूलते हैं, और इस राशि से ग्रहों का गोचर प्रायः अच्छे फल देता है।

भाव 11 (मेष, 35 अंक) — आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति: इस भाव को मज़बूत सहारा है (28 या अधिक अंक)। इस भाव के विषय फलते-फूलते हैं, और इस राशि से ग्रहों का गोचर प्रायः अच्छे फल देता है।

भाव 4 (कन्या, 35 अंक) — घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति: इस भाव को मज़बूत सहारा है (28 या अधिक अंक)। इस भाव के विषय फलते-फूलते हैं, और इस राशि से ग्रहों का गोचर प्रायः अच्छे फल देता है।

अधिक ध्यान चाहने वाले भाव

भाव 12 (वृषभ, 22 अंक) — खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद: इस भाव को अपेक्षाकृत कम सहारा है (25 से कम अंक)। इस भाव के विषयों में अधिक ध्यान चाहिए; महत्वपूर्ण काम तब करें जब धीमे ग्रह अधिक अंकों वाली राशियों से गोचर कर रहे हों।

भाव 9 (कुंभ, 22 अंक) — भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ: इस भाव को अपेक्षाकृत कम सहारा है (25 से कम अंक)। इस भाव के विषयों में अधिक ध्यान चाहिए; महत्वपूर्ण काम तब करें जब धीमे ग्रह अधिक अंकों वाली राशियों से गोचर कर रहे हों।

भाव 6 (वृश्चिक, 25 अंक) — प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु: इस भाव को औसत सहारा है (25 से 27 अंक)। परिणाम मध्यम रहते हैं और प्रयास तथा चल रही दशा पर निर्भर करते हैं।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — अष्टकवर्ग।

SAMPLE

अष्टकवर्ग गोचर मार्गदर्शिका

हर ग्रह उन राशियों में गोचर के सबसे अच्छे फल देता है जहाँ उसके अपने अष्टकवर्ग में अधिक बिंदु हों, और जहाँ कम बिंदु हों वहाँ कमज़ोर फल। किसी भी भावी गोचर को परखने के लिए इस मार्गदर्शिका का उपयोग करें: जब ग्रह अपनी मज़बूत राशि में प्रवेश करे, तो उस भाव के विषयों को सहारा मिलता है; कमज़ोर राशियों में धीरे चलें।

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	4	2	**6**	3	**5**	3	3	3	**6**	**8**	2
चंद्र	2	4	**7**	4	2	**6**	4	4	4	4	4	4
मंगल	3	2	4	4	**5**	4	3	1	1	**6**	**5**	1
बुध	**5**	4	2	**7**	4	**5**	3	4	3	**6**	**6**	**5**
गुरु	**7**	3	**6**	**6**	4	3	4	4	**7**	**6**	2	4
शुक्र	**6**	**6**	3	**5**	**5**	1	4	**7**	3	4	4	4
शनि	3	4	2	3	4	1	4	4	1	**5**	**6**	2

स्तंभ लग्न से गिने गए आपके भाव 1 से 12 हैं; मोटे अंक मज़बूत राशियाँ हैं (5 या अधिक बिंदु)।

सूर्य (कुल 48)

वे राशियाँ जहाँ सूर्य सबसे अच्छे फल देते हैं (5 या अधिक बिंदु):

- **मेष — भाव 11 (8 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: आय और लाभ, मित्र और संपर्क, बड़े भाई-बहन, इच्छाओं की पूर्ति। क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क।
- **कन्या — भाव 4 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: माता, घर और पारिवारिक शांति, संपत्ति और भूमि, वाहन। क्या हो सकता है: माता से निकटता, आशीर्वाद और सुकून; शांत और सुखी घर।
- **वृश्चिक — भाव 6 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा, कर्ज़ और ऋण, स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या, सेवा और दैनिक कार्य। क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर।
- **मीन — भाव 10 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: नौकरी और करियर में उन्नति, व्यापार और पेशा, अधिकारी और अधिकारधारी लोग, प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि। क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना; व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम।

वे राशियाँ जहाँ सूर्य में सावधानी चाहिए (2 या कम बिंदु):

- **वृषभ — भाव 12 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: खर्च, विदेश और यात्रा, नींद और विश्राम, आध्यात्मिक उन्नति। क्या हो सकता है: अनियोजित या भारी खर्च; वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **सिंह — भाव 3 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: साहस और प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, लेखन, मीडिया और कौशल। क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट; ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

चंद्र (कुल 49)

वे राशियाँ जहाँ चंद्र सबसे अच्छे फल देते हैं (5 या अधिक बिंदु):

- **सिंह — भाव 3 (7 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: साहस और प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, लेखन, मीडिया और कौशल। क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा; छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग।
- **वृश्चिक — भाव 6 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा, कर्ज़ और ऋण, स्वास्थ्य और दैनिक

SAMPLE

दिनचर्या, सेवा और दैनिक कार्य। क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर।

वे राशियाँ जहाँ चंद्र में सावधानी चाहिए (2 या कम बिंदु):

- **मिथुन — भाव 1 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: स्वास्थ्य और ऊर्जा, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व, नई शुरुआत, छवि और प्रतिष्ठा। क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें; अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- **तुला — भाव 5 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: संतान, शिक्षा और पढ़ाई, रचनात्मकता और प्रतिभा, प्रेम। क्या हो सकता है: संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता; ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।

मंगल (कुल 39)

वे राशियाँ जहाँ मंगल सबसे अच्छे फल देते हैं (5 या अधिक बिंदु):

- **मेष — भाव 11 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: आय और लाभ, मित्र और संपर्क, बड़े भाई-बहन, इच्छाओं की पूर्ति। क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क।
- **तुला — भाव 5 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: संतान, शिक्षा और पढ़ाई, रचनात्मकता और प्रतिभा, प्रेम। क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर; अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता।
- **मीन — भाव 10 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: नौकरी और करियर में उन्नति, व्यापार और पेशा, अधिकारी और अधिकारधारी लोग, प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि। क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना; व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम।

वे राशियाँ जहाँ मंगल में सावधानी चाहिए (2 या कम बिंदु):

- **वृषभ — भाव 12 (1 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: खर्च, विदेश और यात्रा, नींद और विश्राम, आध्यात्मिक उन्नति। क्या हो सकता है: अनियोजित या भारी खर्च; वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **कर्क — भाव 2 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: बचत और हाथ में धन, पारिवारिक जीवन, वाणी और संवाद, भोजन और खान-पान की आदतें। क्या हो सकता है: धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी; छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
- **मकर — भाव 8 (1 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: अचानक बदलाव, विरासत और साझा धन, शोध और गूढ़ विषय, स्वास्थ्य और सुरक्षा। क्या हो सकता है: अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें; विरासत या साझा धन में देरी या विवाद। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **कुंभ — भाव 9 (1 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: भाग्य और सौभाग्य, पिता, गुरु और मार्गदर्शक, धर्म और आस्था। क्या हो सकता है: प्रयास के बावजूद देरी या अपेक्षा से कम परिणाम; पिता या बड़ों को लेकर ग़लतफ़हमी, दूरी या स्वास्थ्य की चिंता। क्या सहायक है: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।

बुध (कुल 54)

वे राशियाँ जहाँ बुध सबसे अच्छे फल देते हैं (5 या अधिक बिंदु):

- **मेष — भाव 11 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: आय और लाभ, मित्र और संपर्क, बड़े भाई-बहन, इच्छाओं की पूर्ति। क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क।
- **वृषभ — भाव 12 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: खर्च, विदेश और यात्रा, नींद और विश्राम, आध्यात्मिक उन्नति। क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च; विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर।
- **मिथुन — भाव 1 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: स्वास्थ्य और ऊर्जा, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व, नई शुरुआत, छवि और

SAMPLE

प्रतिष्ठा। क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना; अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना।

- **कन्या — भाव 4 (7 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: माता, घर और पारिवारिक शांति, संपत्ति और भूमि, वाहन। क्या हो सकता है: माता से निकटता, आशीर्वाद और सुकून; शांत और सुखी घर।
- **वृश्चिक — भाव 6 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा, कर्ज़ और ऋण, स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या, सेवा और दैनिक कार्य। क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर।
- **मीन — भाव 10 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: नौकरी और करियर में उन्नति, व्यापार और पेशा, अधिकारी और अधिकारधारी लोग, प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि। क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना; व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम।

वे राशियाँ जहाँ बुध में सावधानी चाहिए (2 या कम बिंदु):

- **सिंह — भाव 3 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: साहस और प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, लेखन, मीडिया और कौशल। क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट; ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

गुरु (कुल 56)

वे राशियाँ जहाँ गुरु सबसे अच्छे फल देते हैं (5 या अधिक बिंदु):

- **मिथुन — भाव 1 (7 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: स्वास्थ्य और ऊर्जा, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व, नई शुरुआत, छवि और प्रतिष्ठा। क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना; अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना।
- **सिंह — भाव 3 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: साहस और प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, लेखन, मीडिया और कौशल। क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा; छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग।
- **कन्या — भाव 4 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: माता, घर और पारिवारिक शांति, संपत्ति और भूमि, वाहन। क्या हो सकता है: माता से निकटता, आशीर्वाद और सुकून; शांत और सुखी घर।
- **कुंभ — भाव 9 (7 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: भाग्य और सौभाग्य, पिता, गुरु और मार्गदर्शक, धर्म और आस्था। क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है; पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद।
- **मीन — भाव 10 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: नौकरी और करियर में उन्नति, व्यापार और पेशा, अधिकारी और अधिकारधारी लोग, प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि। क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना; व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम।

वे राशियाँ जहाँ गुरु में सावधानी चाहिए (2 या कम बिंदु):

- **मेष — भाव 11 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: आय और लाभ, मित्र और संपर्क, बड़े भाई-बहन, इच्छाओं की पूर्ति। क्या हो सकता है: अपेक्षा से कम आय या भुगतान में देरी; ऐसे मित्र जो निराश करें या आपका समय और पैसा खींचें। क्या सहायक है: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।

शुक्र (कुल 52)

वे राशियाँ जहाँ शुक्र सबसे अच्छे फल देते हैं (5 या अधिक बिंदु):

- **मिथुन — भाव 1 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: स्वास्थ्य और ऊर्जा, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व, नई शुरुआत, छवि और प्रतिष्ठा। क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना; अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना।
- **कर्क — भाव 2 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: बचत और हाथ में धन, पारिवारिक जीवन, वाणी और संवाद, भोजन और

SAMPLE

खान-पान की आदतें। क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत; घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग।

- **कन्या — भाव 4 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: माता, घर और पारिवारिक शांति, संपत्ति और भूमि, वाहन। क्या हो सकता है: माता से निकटता, आशीर्वाद और सुकून; शांत और सुखी घर।
- **तुला — भाव 5 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: संतान, शिक्षा और पढ़ाई, रचनात्मकता और प्रतिभा, प्रेम। क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर; अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता।
- **मकर — भाव 8 (7 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: अचानक बदलाव, विरासत और साझा धन, शोध और गूढ़ विषय, स्वास्थ्य और सुरक्षा। क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़; विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ।

वे राशियाँ जहाँ शुक्र में सावधानी चाहिए (2 या कम बिंदु):

- **वृश्चिक — भाव 6 (1 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा, कर्ज़ और ऋण, स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या, सेवा और दैनिक कार्य। क्या हो सकता है: कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति; कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।

शनि (कुल 39)

वे राशियाँ जहाँ शनि सबसे अच्छे फल देते हैं (5 या अधिक बिंदु):

- **मेष — भाव 11 (6 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: आय और लाभ, मित्र और संपर्क, बड़े भाई-बहन, इच्छाओं की पूर्ति। क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क।
- **मीन — भाव 10 (5 बिंदु)।** सहारा पाने वाले क्षेत्र: नौकरी और करियर में उन्नति, व्यापार और पेशा, अधिकारी और अधिकारधारी लोग, प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि। क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना; व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम।

वे राशियाँ जहाँ शनि में सावधानी चाहिए (2 या कम बिंदु):

- **वृषभ — भाव 12 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: खर्च, विदेश और यात्रा, नींद और विश्राम, आध्यात्मिक उन्नति। क्या हो सकता है: अनियोजित या भारी खर्च; वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **सिंह — भाव 3 (2 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: साहस और प्रयास, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्राएँ, लेखन, मीडिया और कौशल। क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट; ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **वृश्चिक — भाव 6 (1 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा, कर्ज़ और ऋण, स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या, सेवा और दैनिक कार्य। क्या हो सकता है: कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति; कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कुंभ — भाव 9 (1 बिंदु)।** सावधानी वाले क्षेत्र: भाग्य और सौभाग्य, पिता, गुरु और मार्गदर्शक, धर्म और आस्था। क्या हो सकता है: प्रयास के बावजूद देरी या अपेक्षा से कम परिणाम; पिता या बड़ों को लेकर ग़लतफ़हमी, दूरी या स्वास्थ्य की चिंता। क्या सहायक है: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।

यहाँ बताए गए उपाय पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं और उसी भाव से दिए गए हैं। स्वास्थ्य, क़ानूनी या धन संबंधी मामलों में कृपया योग्य डॉक्टर, वकील या वित्तीय सलाहकार से भी सलाह लें।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — अष्टकवर्ग; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — गोचर के फल।

SAMPLE

के.पी. कारक ग्रह

कृष्णमूर्ति पद्धति (के.पी.) में ग्रह चार स्तरों पर भावों का कारक होता है: उसके नक्षत्र स्वामी का भाव (सबसे प्रबल), उसका अपना भाव, उसके नक्षत्र स्वामी के स्वामित्व वाले भाव, और उसके अपने स्वामित्व वाले भाव। भाव प्लेसिडस भाव-संधियों से लिए गए हैं। राहु और केतु अपनी राशि के स्वामी की ओर से काम करते हैं। कोई घटना तब होती है जब दशा में चल रहे ग्रह उससे जुड़े भावों के कारक हों।

ग्रह	नक्षत्र स्वामी	स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3	स्तर 4
सूर्य	मंगल	**2**	12	6, 11	3
चंद्र	राहु	**4**	8	5, 12	2
मंगल	शुक्र	**11**	2	5, 12	6, 11
बुध	चंद्र	**8**	11	2	1, 4
गुरु	शनि	**9**	5	8, 9	7, 10
शुक्र	चंद्र	**8**	11	2	5, 12
शनि	गुरु	**5**	9	7, 10	8, 9
राहु	राहु	**4**	4	5, 12	5, 12
केतु	केतु	**10**	10	6, 11	6, 11

हर भाव के कारक ग्रह

भाव	विषय	कारक ग्रह
1	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत	बुध
2	धन, परिवार और वाणी	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र
3	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद	सूर्य
4	घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति	चंद्र, बुध, राहु
5	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता	चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, राहु
6	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु	सूर्य, मंगल, केतु
7	विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार	गुरु, शनि
8	अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु	चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
9	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ	गुरु, शनि
10	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार	गुरु, शनि, केतु
11	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, केतु
12	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद	सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र, राहु

मुख्य घटनाएँ और उनके भाव

विषय	भाव	सभी भावों के कारक ग्रह
विवाह	2, 7, 11	पूर्ण रूप से कोई नहीं; आंशिक रूप से: सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र
नौकरी और पदोन्नति	2, 6, 10, 11	पूर्ण रूप से कोई नहीं; आंशिक रूप से: सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र
अपना व्यवसाय	7, 10, 11	पूर्ण रूप से कोई नहीं; आंशिक रूप से: गुरु, शनि, केतु, सूर्य, मंगल
संपत्ति और वाहन	4, 11, 12	पूर्ण रूप से कोई नहीं; आंशिक रूप से: चंद्र, बुध, राहु, सूर्य, मंगल
संतान	2, 5, 11	**मंगल, शुक्र**
विदेश यात्रा या बसना	3, 9, 12	पूर्ण रूप से कोई नहीं; आंशिक रूप से: सूर्य, गुरु, शनि, चंद्र, मंगल

SAMPLE

शिक्षा में सफलता	4, 9, 11	पूर्ण रूप से कोई नहीं; आंशिक रूप से: चंद्र, बुध, राहु, गुरु, शनि
रोग से मुक्ति	1, 5, 11	पूर्ण रूप से कोई नहीं; आंशिक रूप से: बुध, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र

मोटे अक्षरों वाले ग्रहों की दशा और अंतर्दशा उस विषय के लिए सबसे संभावित समय हैं। यह मानक के.पी. पद्धति है; समय की पुष्टि गोचर से करनी चाहिए।

SAMPLE

वर्ग कुंडलियों से फल

D2 — होरा (धन)

होरा कुंडली धन और संसाधनों को बनाए रखने की क्षमता दिखाती है। सूर्य की होरा (सिंह) में स्थित ग्रह मेहनत और अधिकार से कमाया धन देते हैं; चंद्रमा की होरा (कर्क) में स्थित ग्रह देखभाल, व्यापार और जनसंपर्क से धन देते हैं।

D3 — द्रेष्काण (भाई-बहन)

द्रेष्काण भाई-बहन, साहस, पहल और अपने प्रयासों के फल को दिखाता है।

इस कुंडली का लग्न: कुंभ

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	मिथुन	5	सम राशि	अच्छी स्थिति
चंद्र	मिथुन	5	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
मंगल	धनु	11	मित्र राशि	मध्यम
बुध	कन्या	8	उच्च	मज़बूत
गुरु	मीन	2	स्वराशि	मज़बूत
शुक्र	कन्या	8	नीच	कमज़ोर
शनि	मीन	2	सम राशि	मध्यम
राहु	तुला	9	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
केतु	मेष	3	मित्र राशि	मध्यम

इस कुंडली के लग्न का स्वामी शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में है, जो इस कुंडली के विषयों में मध्यम फल देता है।

D4 — चतुर्थांश (भाग्य, संपत्ति)

चतुर्थांश संपत्ति, घर, वाहन और स्थायी सुख से जुड़ा भाग्य दिखाता है।

इस कुंडली का लग्न: मीन

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	मिथुन	4	सम राशि	अच्छी स्थिति
चंद्र	वृषभ	3	उच्च	मज़बूत
मंगल	कुंभ	12	सम राशि	सावधानी चाहिए
बुध	वृश्चिक	9	सम राशि	अच्छी स्थिति
गुरु	कुंभ	12	सम राशि	सावधानी चाहिए
शुक्र	वृश्चिक	9	सम राशि	अच्छी स्थिति
शनि	मीन	1	सम राशि	अच्छी स्थिति
राहु	मकर	11	मित्र राशि	मध्यम
केतु	कर्क	5	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति

इस कुंडली के लग्न का स्वामी गुरु भाव 12 (खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) में है, जिससे इस कुंडली के विषयों में अतिरिक्त प्रयास और सावधानी चाहिए।

SAMPLE

D7 — सप्तांश (संतान)

सप्तांश संतान, रचनात्मकता और वंश की निरंतरता को दिखाता है।

इस कुंडली का लग्न: धनु

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	मिथुन	7	सम राशि	अच्छी स्थिति
चंद्र	मेष	5	सम राशि	अच्छी स्थिति
मंगल	धनु	1	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
बुध	कुंभ	3	सम राशि	मध्यम
गुरु	सिंह	9	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
शुक्र	कुंभ	3	मित्र राशि	मध्यम
शनि	कन्या	10	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
राहु	धनु	1	सम राशि	अच्छी स्थिति
केतु	मिथुन	7	सम राशि	अच्छी स्थिति

इस कुंडली के लग्न का स्वामी गुरु भाव 9 (भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) में है, जो इस कुंडली के विषयों को सहारा देता है।

D9 — नवांश (जीवनसाथी, धर्म)

नवांश सबसे महत्वपूर्ण वर्ग कुंडली है। यह विवाह और जीवनसाथी, भीतरी चरित्र, धर्म और प्रत्येक ग्रह की वास्तविक शक्ति दिखाता है। नवांश में बलवान ग्रह भरोसेमंद फल देता है, भले ही वह जन्म कुंडली में कमज़ोर दिखे।

इस कुंडली का लग्न: वृषभ

नवांश लग्न वृषभ: आप स्नेही, वफ़ादार और रक्षा करने वाले हैं। आपका सातवाँ भाव वृश्चिक है, जिसका स्वामी मंगल है, इसलिए साथी प्रायः तीव्र, भावुक और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले होते हैं। किसी भी ओर से अधिकार-भाव को संभालना है; भरोसा और साझा दिनचर्या आपके वैवाहिक जीवन को सबसे अच्छा बनाते हैं।

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	तुला	6	नीच	कमज़ोर
चंद्र	मकर	9	सम राशि	अच्छी स्थिति
मंगल	कन्या	5	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति
बुध	वृषभ	1	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
गुरु	वृश्चिक	7	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
शुक्र	वृषभ	1	स्वराशि	मज़बूत
शनि	कर्क	3	शत्रु राशि	मध्यम
राहु	धनु	8	सम राशि	सावधानी चाहिए
केतु	मिथुन	2	सम राशि	मध्यम

इस कुंडली के लग्न का स्वामी शुक्र भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में है, जो इस कुंडली के विषयों को सहारा देता है।

D10 — दशमांश (करियर, पद)

दशमांश करियर, पद-प्रतिष्ठा, उपलब्धियाँ और कार्यक्षेत्र में आपकी छवि को दिखाता है।

SAMPLE

इस कुंडली का लग्न: कुंभ

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	मिथुन	5	सम राशि	अच्छी स्थिति
चंद्र	वृषभ	4	उच्च	मज़बूत
मंगल	मकर	12	उच्च	मज़बूत
बुध	मिथुन	5	स्वराशि	मज़बूत
गुरु	वृश्चिक	10	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
शुक्र	मिथुन	5	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
शनि	वृश्चिक	10	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति
राहु	मकर	12	मित्र राशि	सावधानी चाहिए
केतु	कर्क	6	शत्रु राशि	सावधानी चाहिए

इस कुंडली के लग्न का स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में है, जो इस कुंडली के विषयों को सहारा देता है।

D12 — द्वादशांश (माता-पिता)

द्वादशांश माता-पिता, पूर्वजों और विरासत में मिली प्रवृत्तियों को दिखाता है।

इस कुंडली का लग्न: मेष

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	कर्क	4	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
चंद्र	मिथुन	3	मित्र राशि	मध्यम
मंगल	मीन	12	मित्र राशि	सावधानी चाहिए
बुध	वृश्चिक	8	सम राशि	सावधानी चाहिए
गुरु	मेष	1	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
शुक्र	वृश्चिक	8	सम राशि	सावधानी चाहिए
शनि	मीन	12	सम राशि	सावधानी चाहिए
राहु	मकर	10	मित्र राशि	अच्छी स्थिति
केतु	कर्क	4	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति

इस कुंडली के लग्न का स्वामी मंगल भाव 12 (खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) में है, जिससे इस कुंडली के विषयों में अतिरिक्त प्रयास और सावधानी चाहिए।

D24 — चतुर्विंशांश (शिक्षा)

चतुर्विंशांश शिक्षा, विद्या और पढ़ाई में सफलता को दिखाता है।

इस कुंडली का लग्न: मेष

ग्रह	राशि	भाव	बल	इस कुंडली में स्थिति
सूर्य	तुला	7	नीच	कमज़ोर
चंद्र	मेष	1	सम राशि	अच्छी स्थिति
मंगल	तुला	7	सम राशि	अच्छी स्थिति
बुध	कर्क	4	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति
गुरु	मिथुन	3	शत्रु राशि	मध्यम

SAMPLE

शुक्र	कर्क	4	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति
शनि	कर्क	4	शत्रु राशि	अच्छी स्थिति
राहु	मीन	12	सम राशि	सावधानी चाहिए
केतु	मीन	12	सम राशि	सावधानी चाहिए

इस कुंडली के लग्न का स्वामी मंगल भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में है, जो इस कुंडली के विषयों को सहारा देता है।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — षोडश वर्ग और उनके उपयोग।

SAMPLE

आपकी दशाएँ

विंशोत्तरी पद्धति में जीवन को नौ ग्रहों द्वारा एक तय क्रम में चलाई जाने वाली अवधियों (महादशाओं) में बाँटा गया है। हर अवधि उप-अवधियों (अंतर्दशाओं) में बँटी है। किसी अवधि के फल इस पर निर्भर करते हैं कि आपकी अपनी कुंडली में उसका स्वामी ग्रह किसका प्रतिनिधि है: किन भावों का स्वामी है, किस भाव में बैठा है और कितना बलवान है।

राहु महादशा: 18/06/1995 से 27/08/2008 तक

राहु की दशा महत्वाकांक्षा, अचानक परिवर्तन, विदेशी संबंध और लीक से हटकर अवसर लाती है। यह आपको तेज़ी से ऊपर उठा सकती है। यह नैतिक और स्पष्ट सोच वाले बने रहने का समय है; भ्रम, धोखे और जोखिम भरे शॉर्टकट से बचें।

राहु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी शुक्र के अनुसार फल देता है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 5, जो संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (03/10/1995), बुध (09/08/1998)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (16/03/2005), मंगल (10/08/2007)।

राहु – गुरु: 18/06/1995 से 03/10/1995 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु आपके भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 6, जो प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल)।

राहु – शनि: 03/10/1995 से 09/08/1998 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शनि आपके भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 10, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

राहु – बुध: 09/08/1998 से 26/02/2001 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध आपके भाव 1 और 4 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत; घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

राहु – केतु: 26/02/2001 से 16/03/2002 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी मंगल के अनुसार फल देता है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 11, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

SAMPLE

राहु – शुक्र: 16/03/2002 से 16/03/2005 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र आपके भाव 5 और 12 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह अपनी राशि में है, जिससे इसे आत्मविश्वास और स्थिरता मिलती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

राहु – सूर्य: 16/03/2005 से 08/02/2006 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य आपके भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 1, जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

राहु – चंद्र: 08/02/2006 से 10/08/2007 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र आपके भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 9, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

राहु – मंगल: 10/08/2007 से 27/08/2008 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। मंगल आपके भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु; आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति) का स्वामी है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 3, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: मिश्रित। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु महादशा: 27/08/2008 से 27/08/2024 तक

गुरु की दशा परंपरा से वृद्धि, ज्ञान, संतान, गुरुजनों तथा धार्मिक या परोपकारी कार्यों का समय मानी जाती है। सीखने और विस्तार के अवसर मिलते हैं। यह ईमानदारी और उदारता से काम करने का समय है; अति-आत्मविश्वास से बचें।

गुरु आपके भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 6, जो प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: मिश्रित। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (15/10/2010), बुध (28/04/2013)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (11/03/2019), मंगल (28/04/2021)।

गुरु – गुरु: 27/08/2008 से 15/10/2010 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और

SAMPLE

10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – शनि: 15/10/2010 से 28/04/2013 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – बुध: 28/04/2013 से 04/08/2015 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल), विवाह और साझेदारी (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – केतु: 04/08/2015 से 09/07/2016 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

गुरु – शुक्र: 09/07/2016 से 11/03/2019 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: विवाह और साझेदारी (अधिकतर अनुकूल), संतान (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – सूर्य: 11/03/2019 से 28/12/2019 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

गुरु – चंद्र: 28/12/2019 से 28/04/2021 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: विवाह और साझेदारी (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – मंगल: 28/04/2021 से 04/04/2022 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

गुरु – राहु: 04/04/2022 से 27/08/2024 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु

SAMPLE

छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी शुक्र के अनुसार फल देता है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 5, जो संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल), करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल)।

शनि महादशा: 27/08/2024 से 28/08/2043 तक (अभी चल रही है)

शनि की दशा धैर्य, कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी माँगती है। परिणाम धीरे आते हैं पर टिकाऊ होते हैं। यह अनुशासन बनाने, दूसरों की सेवा करने, जोड़ों का ध्यान रखने और शॉर्टकट से बचने का समय है।

शनि आपके भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 10, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। यह सम राशि में है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (27/08/2024), शुक्र (19/06/2031)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (19/08/2034), मंगल (01/03/2037)।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

भाव 10 के विषय:

- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: सरकारी या आधिकारिक मामलों में अनुकूलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।

भाव 8 के विषय:

- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।

भाव 9 के विषय:

- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: सार्थक दान का अवसर जो आशीर्वाद दिलाए। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।
- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है। इसे ऐसा ही बनाए रखने के

SAMPLE

लिए: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।

शनि – शनि: 27/08/2024 से 31/08/2027 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 10 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।
- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।

भाव 8 के विषय:

- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।

शनि – बुध: 31/08/2027 से 10/05/2030 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है। विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु

SAMPLE

भाव 5 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

शनि – केतु: 10/05/2030 से 19/06/2031 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

शनि – शुक्र: 19/06/2031 से 19/08/2034 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), संतान (शुभ)।

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

SAMPLE

भाव 12 के विषय:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

शनि – सूर्य: 19/08/2034 से 01/08/2035 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

पहले भाव में सूर्य होने से आपमें आत्म-बोध प्रबल होता है, व्यवहार में गरिमा होती है और नेतृत्व करने की इच्छा होती है। लोग आपको नोटिस करते हैं, और आप अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करते हैं। आत्मविश्वास और सम्मान की भावना आपकी शक्ति हैं; अभिमान, तेज़ गुस्सा और आलोचना के प्रति अधीरता वे कमज़ोरियाँ हैं जिन्हें संभालना है। शास्त्र इस स्थिति को अच्छी जीवन-शक्ति के साथ-साथ गरमी से जुड़ी परेशानियों, आँखों पर ज़ोर और कभी-कभी सिरदर्द से भी जोड़ते हैं। ज़िम्मेदारी के पदों पर आप अच्छा करते हैं, और ईमानदारी से काम करने पर सरकार या वरिष्ठों का सहयोग मिलने की संभावना है।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

शनि – चंद्र: 01/08/2035 से 01/03/2037 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), धन और आर्थिक स्थिति (शुभ)।

SAMPLE

नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 2 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: किसी अच्छे गुरु या मार्गदर्शक से मार्गदर्शन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।
- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: प्रार्थना, तीर्थ या किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से शांति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।

शनि – मंगल: 01/03/2037 से 10/04/2038 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

तीसरे भाव में मंगल उसकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है। यह असाधारण साहस, पहल और प्रतिस्पर्धियों पर विजय की क्षमता देता है। खेल, सेना, तकनीकी काम, बिक्री या निडर प्रयास माँगने वाले किसी भी क्षेत्र में आप अच्छा कर सकते हैं। शास्त्र पराक्रम और अपने प्रयास से सफलता के लिए इस स्थिति की प्रशंसा करते हैं। भाई-बहनों से संबंध प्रतिस्पर्धी पर रक्षा करने वाले हो सकते हैं।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 3 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समझौते को

SAMPLE

प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।

- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

शनि – राहु: 10/04/2038 से 14/02/2041 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 4 (घर, माता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 4 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।

शनि – गुरु: 14/02/2041 से 28/08/2043 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

भाव 7 के विषय:

- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर

SAMPLE

धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।

बुध महादशा: 28/08/2043 से 27/08/2060 तक

बुध की दशा पढ़ाई, व्यापार, लेखन, संवाद और समझदारी भरी योजना के लिए अनुकूल है। व्यवसाय के अवसर और नए कौशल सामने आते हैं। यह अध्ययन करने, बातचीत से सौदे तय करने और व्यवस्थित होने का समय है; नसों को शांत रखें।

बुध आपके भाव 1 और 4 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत; घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध (28/08/2043), शुक्र (21/01/2047)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (21/11/2049), मंगल (27/02/2052)।

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है। विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

भाव 12 के विषय:

- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

भाव 4 के विषय:

- **वाहन** — क्या हो सकता है: अच्छा वाहन खरीदने या उसका सुख लेने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वाहन की सर्विस समय पर कराएँ, गति-सीमा में चलाएँ और बीमा चालू रखें।

SAMPLE

- **मन की शांति** — क्या हो सकता है: शांत मन और संतोष। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ कुछ समय शांत बैठें, बाहर टहलें और पूजा या ध्यान जारी रखें।
- **प्रारंभिक शिक्षा और सुख-सुविधाएँ** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, सीखना और स्थिर जीवन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पढ़ाई और आराम के लिए एक तय जगह और समय रखें।

बुध – बुध: 28/08/2043 से 24/01/2046 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।

बुध – केतु: 24/01/2046 से 21/01/2047 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: घर, संपत्ति और वाहन (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।

SAMPLE

बुध – शुक्र: 21/01/2047 से 21/11/2049 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 12 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

बुध – सूर्य: 21/11/2049 से 27/09/2050 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल)।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।

SAMPLE

बुध – चंद्र: 27/09/2050 से 27/02/2052 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लाभकारी लंबी यात्रा, तीर्थ या विदेश-यात्रा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।
- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा, शोध या पाठ्यक्रमों में प्रवेश या सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।

भाव 2 के विषय:

- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।
- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।

बुध – मंगल: 27/02/2052 से 23/02/2053 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 9 (भाग्य, पिता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 9 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के

SAMPLE

लिए: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

बुध – राहु: 23/02/2053 से 12/09/2055 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।
- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।

बुध – गुरु: 12/09/2055 से 18/12/2057 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 10 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

भाव 7 के विषय:

- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।

SAMPLE

बुध – शनि: 18/12/2057 से 27/08/2060 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 11 (आय, लाभ) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। दोनों धीमे ग्रह भाव 11 पर साथ काम करते हैं, इसलिए इन विषयों पर बहुत ध्यान रहता है और फल तीव्रता से महसूस होते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: सरकारी या आधिकारिक मामलों में अनुकूलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।

भाव 8 के विषय:

- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।

केतु महादशा: 27/08/2060 से 28/08/2067 तक

केतु की दशा ध्यान को भीतर की ओर — आध्यात्मिकता, शोध और त्याग की ओर — मोड़ती है। अचानक परिवर्तन पुराने ढर्रे तोड़ सकते हैं। यह ध्यान, सादगी और स्वास्थ्य की सावधानीपूर्वक देखभाल का समय है।

केतु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी मंगल के अनुसार फल देता है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 11, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: अधिकतर अनुकूल। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (22/07/2065), बुध (31/08/2066)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (26/03/2062), मंगल (02/03/2063)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।
- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।

SAMPLE

केतु – केतु: 27/08/2060 से 24/01/2061 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।
- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।

केतु – शुक्र: 24/01/2061 से 26/03/2062 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।

भाव 5 के विषय:

- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।

केतु – सूर्य: 26/03/2062 से 01/08/2062 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 1 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना; कठिन पक्ष में, थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

SAMPLE

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना; कठिन पक्ष में, अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता; कठिन पक्ष में, संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

केतु – चंद्र: 01/08/2062 से 02/03/2063 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: किसी अच्छे गुरु या मार्गदर्शक से मार्गदर्शन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।

भाव 2 के विषय:

- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।

केतु – मंगल: 02/03/2063 से 29/07/2063 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), घर, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 3 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग; कठिन पक्ष में, पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा; कठिन पक्ष में, बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

SAMPLE

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन; कठिन पक्ष में, पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

केतु – राहु: 29/07/2063 से 15/08/2064 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

केतु – गुरु: 15/08/2064 से 22/07/2065 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 5 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम; कठिन पक्ष में, विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी; कठिन पक्ष में, कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

भाव 7 के विषय:

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद; कठिन पक्ष में, कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत; कठिन पक्ष में, शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

केतु – शनि: 22/07/2065 से 31/08/2066 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

SAMPLE

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।

भाव 8 के विषय:

- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।

केतु – बुध: 31/08/2066 से 28/08/2067 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

शुक्र महादशा: 28/08/2067 से 28/08/2087 तक

शुक्र की दशा विवाह, सुख-सुविधा, वाहन, कलाओं और आनंद को प्रमुख बनाती है। संबंध और आर्थिक स्थिति प्रायः सुधरते हैं। यह संतुलन के साथ जीवन का आनंद लेने का समय है; अति-भोग से बचें।

शुक्र आपके भाव 5 और 12 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह अपनी राशि में है, जिससे इसे आत्मविश्वास और स्थिरता मिलती है।

SAMPLE

कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (28/06/2080), बुध (28/08/2083)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (28/12/2070), मंगल (28/08/2073)।

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

भाव 12 के विषय:

- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

शुक्र – शुक्र: 28/08/2067 से 28/12/2070 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 4 (घर, माता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 4 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।

भाव 5 के विषय:

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।

SAMPLE

शुक्र – सूर्य: 28/12/2070 से 28/12/2071 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल), संतान (अधिकतर अनुकूल)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

शुक्र – चंद्र: 28/12/2071 से 28/08/2073 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), संतान (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: प्रार्थना, तीर्थ या किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से शांति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।
- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लाभकारी लंबी यात्रा, तीर्थ या विदेश-यात्रा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।

भाव 2 के विषय:

- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।

शुक्र – मंगल: 28/08/2073 से 28/10/2074 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल), धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में

SAMPLE

दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

शुक्र – राहु: 28/10/2074 से 28/10/2077 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

शुक्र – गुरु: 28/10/2077 से 28/06/2080 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), विवाह और साझेदारी (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 7 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।

SAMPLE

- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

भाव 7 के विषय:

- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।

शुक्र – शनि: 28/06/2080 से 28/08/2083 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 9 (भाग्य, पिता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 9 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। दोनों धीमे ग्रह उन भावों से मिलते हैं जिन्हें यह उप-दशा सक्रिय करती है, इसलिए यह इस चरण के अधिक घटनापूर्ण समयों में से एक है।

भाव 10 के विषय:

- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।

भाव 8 के विषय:

- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।

शुक्र – बुध: 28/08/2083 से 28/06/2086 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 1 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

भाव 1 के विषय:

SAMPLE

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

शुक्र – केतु: 28/06/2086 से 28/08/2087 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), संतान (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 10 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।
- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।

सूर्य महादशा: 28/08/2087 से 28/08/2093 तक

सूर्य की दशा अधिकार, आत्मसम्मान और मान-सम्मान से जुड़े प्रश्न सामने लाती है। सरकार, पिता और वरिष्ठों से संबंध महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यह ज़िम्मेदारी उठाने और नेतृत्व करने का समय है; हृदय, आँखों और ऊर्जा का ध्यान रखें।

सूर्य आपके भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 1, जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत का भाव है। यह सम राशि में है।

कुल स्वर: परीक्षा वाला। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला), यात्रा और विदेश से संबंध (परीक्षा वाला)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध (16/06/2091), शनि (04/07/2090)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (28/08/2087), मंगल (16/06/2088)।

पहले भाव में सूर्य होने से आपमें आत्म-बोध प्रबल होता है, व्यवहार में गरिमा होती है और नेतृत्व करने की इच्छा होती है। लोग आपको नोटिस करते हैं, और आप अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करते हैं। आत्मविश्वास और सम्मान की भावना आपकी शक्ति हैं; अभिमान, तेज़ गुस्सा और आलोचना के प्रति अधीरता वे कमज़ोरियाँ हैं जिन्हें संभालना है। शास्त्र इस स्थिति को अच्छी जीवन-शक्ति के साथ-साथ गरमी से जुड़ी परेशानियों, आँखों पर ज़ोर और कभी-कभी सिरदर्द से भी जोड़ते हैं। ज़िम्मेदारी के पदों पर आप अच्छा करते हैं, और ईमानदारी से काम करने पर सरकार या वरिष्ठों का सहयोग मिलने की संभावना है।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ,

SAMPLE

विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

सूर्य – सूर्य: 28/08/2087 से 16/12/2087 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरु करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

भाव 3 के विषय:

- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरु करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।

सूर्य – चंद्र: 16/12/2087 से 16/06/2088 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा, शोध या पाठ्यक्रमों में प्रवेश या सफलता; कठिन पक्ष में, उच्च शिक्षा की योजनाओं में बाधा या बदलाव। क्या सहायक है: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।
- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: सार्थक दान का अवसर जो आशीर्वाद दिलाए; कठिन पक्ष में, ऐसा दान जो ग़लत जगह जाए या जिसकी कद्र न हो। क्या सहायक है: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।

SAMPLE

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि; कठिन पक्ष में, पारिवारिक संपत्ति को लेकर चिंता या पारिवारिक बँटवारे में देरी। क्या सहायक है: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत; कठिन पक्ष में, धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।

सूर्य – मंगल: 16/06/2088 से 21/10/2088 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

सूर्य – राहु: 21/10/2088 से 15/09/2089 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 11 (आय, लाभ) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 5 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 11 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 5 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 5 के विषय:

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर; कठिन पक्ष में, संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता; कठिन पक्ष में, ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

SAMPLE

सूर्य – गुरु: 15/09/2089 से 04/07/2090 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर; कठिन पक्ष में, कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

भाव 7 के विषय:

- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार; कठिन पक्ष में, साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद; कठिन पक्ष में, कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।

सूर्य – शनि: 04/07/2090 से 16/06/2091 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 12 (खर्च, विदेश) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 12 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: सरकारी या आधिकारिक मामलों में अनुकूलता; कठिन पक्ष में, आधिकारिक कामों में देरी। क्या सहायक है: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।
- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना; कठिन पक्ष में, ठहराव, दबाव या काम में थोपा गया बदलाव। क्या सहायक है: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।

भाव 8 के विषय:

- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता; कठिन पक्ष में, भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ; कठिन पक्ष में, पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।

SAMPLE

सूर्य – बुध: 16/06/2091 से 22/04/2092 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 1 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

सूर्य – केतु: 22/04/2092 से 28/08/2092 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; कठिन पक्ष में, अपेक्षा से कम आय या भुगतान में देरी। क्या सहायक है: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क; कठिन पक्ष में, ऐसे मित्र जो निराश करें या आपका समय और पैसा खींचें। क्या सहायक है: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

सूर्य – शुक्र: 28/08/2092 से 28/08/2093 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (मिश्रित)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 1 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

SAMPLE

भाव 12 के विषय:

- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर; कठिन पक्ष में, वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें; कठिन पक्ष में, बिगड़ी नींद या रात की चिंताएँ। क्या सहायक है: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।

भाव 5 के विषय:

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा; कठिन पक्ष में, रचनात्मक रुकावट, संदेह या अधूरे काम। क्या सहायक है: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी; कठिन पक्ष में, ग़लतफ़हमियाँ या प्रेम में अनुचित निर्णय। क्या सहायक है: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।

चंद्र महादशा: 28/08/2093 से 29/08/2103 तक

चंद्रमा की दशा मन, भावनाओं, परिवार और सार्वजनिक जीवन को प्रमुख बनाती है। यात्रा, निवास-परिवर्तन और नए संपर्क आम हैं। यह संबंधों को सँवारने और मन की शांति, नींद तथा शरीर में जल-संतुलन की रक्षा करने का समय है।

चंद्र आपके भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 9, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। यह सम राशि में है।

कुल स्वर: अधिकतर अनुकूल। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल), विवाह और साझेदारी (अधिकतर अनुकूल)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (27/11/2097), बुध (29/06/2099)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: मंगल (28/06/2094), गुरु (28/07/2096)।

नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

भाव 9 के विषय:

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: किसी अच्छे गुरु या मार्गदर्शक से मार्गदर्शन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।

SAMPLE

चंद्र – चंद्र: 28/08/2093 से 28/06/2094 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 2 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 9 के विषय:

- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: प्रार्थना, तीर्थ या किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से शांति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।
- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लाभकारी लंबी यात्रा, तीर्थ या विदेश-यात्रा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।

चंद्र – मंगल: 28/06/2094 से 27/01/2095 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6 और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 11 (आय, लाभ) में और शनि भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 11 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 2 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 11 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 3 के विषय:

- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता; कठिन पक्ष में, संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

भाव 6 के विषय:

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन; कठिन पक्ष में, पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

SAMPLE

चंद्र – राहु: 27/01/2095 से 28/07/2096 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: संतान (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

चंद्र – गुरु: 28/07/2096 से 27/11/2097 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: विवाह और साझेदारी (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 3 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 6 के विषय:

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम; कठिन पक्ष में, विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी; कठिन पक्ष में, कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

भाव 7 के विषय:

- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत; कठिन पक्ष में, शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।
- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग; कठिन पक्ष में, जीवनसाथी से मतभेद, दूरी या अहंकार का टकराव। क्या सहायक है: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।

चंद्र – शनि: 27/11/2097 से 29/06/2099 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), धन और आर्थिक स्थिति (शुभ)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 4 (घर, माता) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 4 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

SAMPLE

भाव 10 के विषय:

- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।
- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: अधिकारियों और अधिकारधारी लोगों का सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।

भाव 8 के विषय:

- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।

चंद्र – बुध: 29/06/2099 से 28/11/2100 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 4 (घर, माता) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 4 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 4 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

चंद्र – केतु: 28/11/2100 से 29/06/2101 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 5 (संतान, शिक्षा) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। दोनों धीमे ग्रह भाव 5 पर साथ काम करते हैं, इसलिए इन विषयों पर बहुत ध्यान रहता है और फल तीव्रता से महसूस होते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

SAMPLE

चंद्र – शुक्र: 29/06/2101 से 28/02/2103 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), धन और आर्थिक स्थिति (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में और शनि भाव 5 (संतान, शिक्षा) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 6 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 5 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 5 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

भाव 5 के विषय:

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

चंद्र – सूर्य: 28/02/2103 से 29/08/2103 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 8 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना; कठिन पक्ष में, अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय; कठिन पक्ष में, जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

SAMPLE

मंगल महादशा: 29/08/2103 से 29/08/2110 तक

मंगल की दशा ऊर्जा, प्रतिस्पर्धा और सक्रियता लाती है। संपत्ति, भूमि, तकनीकी काम और साहसी निर्णय केंद्र में रहते हैं। यह मेहनत करके निर्माण करने का समय है; जल्दबाज़ी, झगड़ों और दुर्घटनाओं से बचें।

मंगल आपके भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु; आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति) का स्वामी है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 3, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है।

कुल स्वर: परीक्षा वाला। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला), धन और आर्थिक स्थिति (परीक्षा वाला), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (19/01/2106), बुध (28/02/2107)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (22/09/2109), मंगल (29/08/2103)।

तीसरे भाव में मंगल उसकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है। यह असाधारण साहस, पहल और प्रतिस्पर्धियों पर विजय की क्षमता देता है। खेल, सेना, तकनीकी काम, बिक्री या निडर प्रयास माँगने वाले किसी भी क्षेत्र में आप अच्छा कर सकते हैं। शास्त्र पराक्रम और अपने प्रयास से सफलता के लिए इस स्थिति की प्रशंसा करते हैं। भाई-बहनों से संबंध प्रतिस्पर्धी पर रक्षा करने वाले हो सकते हैं।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।

भाव 6 के विषय:

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।
- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।

भाव 11 के विषय:

- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: किसी समूह के झगड़ों में खिंच जाना। क्या सहायक है: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: अपेक्षा से कम आय या भुगतान में देरी। क्या सहायक है: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: ऐसे मित्र जो निराश करें या आपका समय और पैसा खींचें। क्या सहायक है: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

मंगल – मंगल: 29/08/2103 से 26/01/2104 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। मंगल फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 6

SAMPLE

और 11 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 3 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला), धन और आर्थिक स्थिति (परीक्षा वाला)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 7 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। शनि भाव 6 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए वे विषय वज़न, ज़िम्मेदारी और टिकाऊ फल के साथ आते हैं।

भाव 3 के विषय:

- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

भाव 6 के विषय:

- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।
- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।

मंगल – राहु: 26/01/2104 से 12/02/2105 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 5 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 9 (भाग्य, पिता) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 9 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 5 के विषय:

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा; कठिन पक्ष में, रचनात्मक रुकावट, संदेह या अधूरे काम। क्या सहायक है: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ; कठिन पक्ष में, टिप्स, शॉर्टकट या जुए से हानि। क्या सहायक है: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

मंगल – गुरु: 12/02/2105 से 19/01/2106 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। गुरु फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 7 और 10 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 6 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में और शनि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 10 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 6 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। दोनों धीमे ग्रह उन भावों से मिलते हैं जिन्हें यह उप-दशा सक्रिय करती है, इसलिए यह इस चरण के अधिक घटनापूर्ण समयों में से एक है।

भाव 6 के विषय:

- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी; कठिन पक्ष में, कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।
- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या

SAMPLE

दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।

भाव 7 के विषय:

- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति; कठिन पक्ष में, विवाह के निर्णय में देरी या असमंजस। क्या सहायक है: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार; कठिन पक्ष में, साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।

मंगल – शनि: 19/01/2106 से 28/02/2107 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शनि फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 8 और 9 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 10 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल), आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 11 (आय, लाभ) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 11 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 10 के विषय:

- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: सरकारी या आधिकारिक मामलों में अनुकूलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।

भाव 8 के विषय:

- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।

मंगल – बुध: 28/02/2107 से 25/02/2108 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। बुध फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 1 और 4 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल), घर, संपत्ति और वाहन (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 7 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 12 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 12 के विषय:

- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।

SAMPLE

भाव 1 के विषय:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

मंगल – केतु: 25/02/2108 से 23/07/2108 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु फिर अपनी राशि और राशि स्वामी के फल देते हैं, और आपकी कुंडली के भाव 11 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), घर, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 12 (खर्च, विदेश) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 12 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 11 के विषय:

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह; कठिन पक्ष में, बड़े भाई-बहनों से मतभेद। क्या सहायक है: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं; कठिन पक्ष में, ऐसी इच्छाएँ जिनके लिए और धैर्य चाहिए। क्या सहायक है: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

मंगल – शुक्र: 23/07/2108 से 22/09/2109 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। शुक्र फिर अपने भावों के विषय लाते हैं: ये भाव 5 और 12 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 12 में बैठे हैं। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (अधिकतर अनुकूल), धन और आर्थिक स्थिति (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 1 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं।

भाव 12 के विषय:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

भाव 5 के विषय:

- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: स्पष्ट सोच, अच्छी सलाह और शांति देने वाली भक्ति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

मंगल – सूर्य: 22/09/2109 से 28/01/2110 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। सूर्य फिर अपने भाव के विषय लाते हैं:

SAMPLE

ये भाव 3 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 1 में बैठे हैं। स्वर: परीक्षा वाला। सक्रिय करती है: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (परीक्षा वाला), करियर और व्यवसाय (परीक्षा वाला)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 3 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 3 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 1 के विषय:

- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

भाव 3 के विषय:

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।

मंगल – चंद्र: 28/01/2110 से 29/08/2110 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। चंद्र फिर अपने भाव के विषय लाते हैं: ये भाव 2 के स्वामी हैं और आपकी कुंडली के भाव 9 में बैठे हैं। स्वर: मिश्रित। सक्रिय करती है: धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित), करियर और व्यवसाय (मिश्रित)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

इस उप-दशा के मध्य के आसपास गुरु आपके लग्न से भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) में और शनि भाव 8 (अचानक परिवर्तन, शोध) में गोचर करते हैं। गुरु भाव 2 के विषयों में वृद्धि, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, जबकि शनि भाव 8 के विषयों में धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगते हैं; वहाँ स्थिर मेहनत से बने फल सबसे लंबे चलते हैं। गुरु भाव 2 से गुज़रते हैं, जिसे यह उप-दशा स्वयं सक्रिय करती है, इसलिए इसके फलों को सहारा मिलता है और उनका लाभ उठाना आसान होता है।

भाव 9 के विषय:

- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा, शोध या पाठ्यक्रमों में प्रवेश या सफलता; कठिन पक्ष में, उच्च शिक्षा की योजनाओं में बाधा या बदलाव। क्या सहायक है: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।
- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: सार्थक दान का अवसर जो आशीर्वाद दिलाए; कठिन पक्ष में, ऐसा दान जो ग़लत जगह जाए या जिसकी कद्र न हो। क्या सहायक है: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।

भाव 2 के विषय:

- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें; कठिन पक्ष में, कठोर शब्द या ग़लतफ़हमी। क्या सहायक है: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।

आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — दशा और अंतर्दशा के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — दशाओं के फल; कालिदास का उत्तर कालामृत — दशा फल।

SAMPLE

आपके जीवन की समय-रेखा

यहाँ आपके जीवन की हर अंतर्दशा आपकी आयु, आपकी कुंडली में उसके स्वामी के भावों, और आपके लग्न के लिए उसके कुल स्वभाव के साथ दी गई है। इससे एक नज़र में दिखता है कि जीवन का कौन-सा क्षेत्र कब प्रमुख होगा।

आयु	अवधि	से	तक	स्वभाव	किन विषयों पर ध्यान
0–0	राहु – गुरु	18/06/1995	03/10/1995	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, विवाह और साझेदारी, धन और आर्थिक स्थिति
0–3	राहु – शनि	03/10/1995	09/08/1998	सहायक	आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय, संतान
3–5	राहु – बुध	09/08/1998	26/02/2001	मिश्रित	शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन
5–6	राहु – केतु	26/02/2001	16/03/2002	मिश्रित	आध्यात्मिक जीवन
6–9	राहु – शुक्र	16/03/2002	16/03/2005	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध, शिक्षा और विद्या
9–10	राहु – सूर्य	16/03/2005	08/02/2006	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय, यात्रा और विदेश से संबंध
10–12	राहु – चंद्र	08/02/2006	10/08/2007	मिश्रित	धन और आर्थिक स्थिति, आध्यात्मिक जीवन, विवाह और साझेदारी
12–13	राहु – मंगल	10/08/2007	27/08/2008	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति
13–15	गुरु – गुरु	27/08/2008	15/10/2010	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, विवाह और साझेदारी, धन और आर्थिक स्थिति
15–17	गुरु – शनि	15/10/2010	28/04/2013	सहायक	आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय, संतान
17–20	गुरु – बुध	28/04/2013	04/08/2015	मिश्रित	शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन
20–21	गुरु – केतु	04/08/2015	09/07/2016	मिश्रित	आध्यात्मिक जीवन
21–23	गुरु – शुक्र	09/07/2016	11/03/2019	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध, शिक्षा और विद्या
23–24	गुरु – सूर्य	11/03/2019	28/12/2019	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय, यात्रा और विदेश से संबंध
24–25	गुरु – चंद्र	28/12/2019	28/04/2021	मिश्रित	धन और आर्थिक स्थिति, आध्यात्मिक जीवन, विवाह और साझेदारी
25–26	गुरु – मंगल	28/04/2021	04/04/2022	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति
26–29	गुरु – राहु	04/04/2022	27/08/2024	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध
29–32	**शनि – शनि**	27/08/2024	31/08/2027	सहायक	आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय, संतान
32–34	शनि – बुध	31/08/2027	10/05/2030	मिश्रित	शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन
34–36	शनि – केतु	10/05/2030	19/06/2031	मिश्रित	आध्यात्मिक जीवन
36–39	शनि – शुक्र	19/06/2031	19/08/2034	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध, शिक्षा और विद्या
39–40	शनि – सूर्य	19/08/2034	01/08/2035	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय, यात्रा और विदेश से संबंध
40–41	शनि – चंद्र	01/08/2035	01/03/2037	मिश्रित	धन और आर्थिक स्थिति, आध्यात्मिक जीवन, विवाह और साझेदारी
41–42	शनि – मंगल	01/03/2037	10/04/2038	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति
42–45	शनि – राहु	10/04/2038	14/02/2041	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध

SAMPLE

45–48	शनि – गुरु	14/02/2041	28/08/2043	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, विवाह और साझेदारी, धन और आर्थिक स्थिति
48–50	बुध – बुध	28/08/2043	24/01/2046	मिश्रित	शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन
50–51	बुध – केतु	24/01/2046	21/01/2047	मिश्रित	आध्यात्मिक जीवन
51–54	बुध – शुक्र	21/01/2047	21/11/2049	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध, शिक्षा और विद्या
54–55	बुध – सूर्य	21/11/2049	27/09/2050	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय, यात्रा और विदेश से संबंध
55–56	बुध – चंद्र	27/09/2050	27/02/2052	मिश्रित	धन और आर्थिक स्थिति, आध्यात्मिक जीवन, विवाह और साझेदारी
56–57	बुध – मंगल	27/02/2052	23/02/2053	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति
57–60	बुध – राहु	23/02/2053	12/09/2055	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध
60–62	बुध – गुरु	12/09/2055	18/12/2057	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, विवाह और साझेदारी, धन और आर्थिक स्थिति
62–65	बुध – शनि	18/12/2057	27/08/2060	सहायक	आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय, संतान
65–65	केतु – केतु	27/08/2060	24/01/2061	मिश्रित	आध्यात्मिक जीवन
65–66	केतु – शुक्र	24/01/2061	26/03/2062	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध, शिक्षा और विद्या
66–67	केतु – सूर्य	26/03/2062	01/08/2062	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय, यात्रा और विदेश से संबंध
67–67	केतु – चंद्र	01/08/2062	02/03/2063	मिश्रित	धन और आर्थिक स्थिति, आध्यात्मिक जीवन, विवाह और साझेदारी
67–68	केतु – मंगल	02/03/2063	29/07/2063	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति
68–69	केतु – राहु	29/07/2063	15/08/2064	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध
69–70	केतु – गुरु	15/08/2064	22/07/2065	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, विवाह और साझेदारी, धन और आर्थिक स्थिति
70–71	केतु – शनि	22/07/2065	31/08/2066	सहायक	आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय, संतान
71–72	केतु – बुध	31/08/2066	28/08/2067	मिश्रित	शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन
72–75	शुक्र – शुक्र	28/08/2067	28/12/2070	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध, शिक्षा और विद्या
75–76	शुक्र – सूर्य	28/12/2070	28/12/2071	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय, यात्रा और विदेश से संबंध
76–78	शुक्र – चंद्र	28/12/2071	28/08/2073	मिश्रित	धन और आर्थिक स्थिति, आध्यात्मिक जीवन, विवाह और साझेदारी
78–79	शुक्र – मंगल	28/08/2073	28/10/2074	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति
79–82	शुक्र – राहु	28/10/2074	28/10/2077	मिश्रित	संतान, यात्रा और विदेश से संबंध
82–85	शुक्र – गुरु	28/10/2077	28/06/2080	सावधानी चाहिए	करियर और व्यवसाय, विवाह और साझेदारी, धन और आर्थिक स्थिति
85–88	शुक्र – शनि	28/06/2080	28/08/2083	सहायक	आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय, संतान
88–91	शुक्र – बुध	28/08/2083	28/06/2086	मिश्रित	शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन

स्वभाव: "सहायक" अवधियों के स्वामी आपके लग्न के लिए शुभ ग्रह हैं; "सावधानी चाहिए" वाली अवधियों के स्वामी अशुभ ग्रह हैं; "मिश्रित" बीच की स्थिति है या कठिन भाव से कमज़ोर हुई है।

SAMPLE

प्रत्यंतर दशा मार्गदर्शिका

हर अंतर्दशा नौ छोटी अवधियों (प्रत्यंतर दशाओं) में बँटी होती है। नीचे की मार्गदर्शिका चल रही महादशा को लेती है। हर छोटी अवधि को उसके स्वामी ग्रह के आपके लग्न के लिए स्वभाव और कुंडली में उसके भाव के अनुसार चिह्नित किया गया है।

शनि महादशा

शनि – शनि (27/08/2024 से 31/08/2027 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
शनि	27/08/2024	17/02/2025	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	17/02/2025	23/07/2025	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	23/07/2025	25/09/2025	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	25/09/2025	27/03/2026	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	27/03/2026	21/05/2026	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	21/05/2026	21/08/2026	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	21/08/2026	24/10/2026	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	24/10/2026	07/04/2027	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	07/04/2027	31/08/2027	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु

शनि – बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
बुध	31/08/2027	17/01/2028	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	17/01/2028	15/03/2028	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	15/03/2028	26/08/2028	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	26/08/2028	14/10/2028	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	14/10/2028	04/01/2029	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	04/01/2029	02/03/2029	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	02/03/2029	27/07/2029	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	27/07/2029	06/12/2029	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
शनि	06/12/2029	10/05/2030	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार

शनि – केतु (10/05/2030 से 19/06/2031 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
केतु	10/05/2030	03/06/2030	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	03/06/2030	09/08/2030	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	09/08/2030	30/08/2030	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	30/08/2030	02/10/2030	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	02/10/2030	26/10/2030	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	26/10/2030	26/12/2030	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	26/12/2030	18/02/2031	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु

SAMPLE

शनि	18/02/2031	23/04/2031	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	23/04/2031	19/06/2031	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद

शनि – शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
शुक्र	19/06/2031	29/12/2031	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	29/12/2031	25/02/2032	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	25/02/2032	31/05/2032	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	31/05/2032	06/08/2032	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	06/08/2032	27/01/2033	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	27/01/2033	30/06/2033	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
शनि	30/06/2033	30/12/2033	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	30/12/2033	12/06/2034	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	12/06/2034	19/08/2034	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति

शनि – सूर्य (19/08/2034 से 01/08/2035 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
सूर्य	19/08/2034	05/09/2034	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	05/09/2034	04/10/2034	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	04/10/2034	24/10/2034	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	24/10/2034	15/12/2034	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	15/12/2034	30/01/2035	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
शनि	30/01/2035	26/03/2035	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	26/03/2035	15/05/2035	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	15/05/2035	04/06/2035	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	04/06/2035	01/08/2035	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद

शनि – चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
चंद्र	01/08/2035	18/09/2035	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	18/09/2035	22/10/2035	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	22/10/2035	16/01/2036	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	16/01/2036	02/04/2036	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
शनि	02/04/2036	03/07/2036	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	03/07/2036	23/09/2036	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	23/09/2036	27/10/2036	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	27/10/2036	31/01/2037	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	31/01/2037	01/03/2037	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत

शनि – मंगल (01/03/2037 से 10/04/2038 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय

SAMPLE

मंगल	01/03/2037	25/03/2037	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	25/03/2037	24/05/2037	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	24/05/2037	17/07/2037	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
शनि	17/07/2037	19/09/2037	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	19/09/2037	16/11/2037	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	16/11/2037	09/12/2037	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	09/12/2037	15/02/2038	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	15/02/2038	07/03/2038	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	07/03/2038	10/04/2038	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ

शनि – राहु (10/04/2038 से 14/02/2041 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
राहु	10/04/2038	13/09/2038	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता
गुरु	13/09/2038	30/01/2039	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
शनि	30/01/2039	14/07/2039	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	14/07/2039	08/12/2039	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	08/12/2039	07/02/2040	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	07/02/2040	29/07/2040	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	29/07/2040	19/09/2040	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	19/09/2040	15/12/2040	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	15/12/2040	14/02/2041	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद

शनि – गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक)

प्रत्यंतर	से	तक	स्वभाव	मुख्य विषय
गुरु	14/02/2041	17/06/2041	सावधानी चाहिए	प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु
शनि	17/06/2041	11/11/2041	सहायक	करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार
बुध	11/11/2041	22/03/2042	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
केतु	22/03/2042	15/05/2042	मिश्रित	आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति
शुक्र	15/05/2042	16/10/2042	मिश्रित	खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद
सूर्य	16/10/2042	01/12/2042	सावधानी चाहिए	स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत
चंद्र	01/12/2042	16/02/2043	मिश्रित	भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ
मंगल	16/02/2043	11/04/2043	सावधानी चाहिए	साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद
राहु	11/04/2043	28/08/2043	मिश्रित	संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता

SAMPLE

आपके जीवन में शनि साढ़ेसाती

शनि को एक राशि पार करने में लगभग ढाई वर्ष लगते हैं। जब वह आपकी चंद्र राशि से पिछली राशि, आपकी चंद्र राशि और उससे अगली राशि से गुज़रता है, तो साढ़े सात वर्ष की इस अवधि को साढ़ेसाती कहते हैं। यह केवल कठिनाई का नहीं, बल्कि ज़िम्मेदारी, मेहनत और भीतरी विकास का समय है। बहुत से लोग ईमानदारी और धैर्य से काम करके साढ़ेसाती के दौरान स्थायी उपलब्धियाँ पाते हैं।

अभी चल रही है: साढ़ेसाती — शनि मीन में, 03/06/2027 तक। तीसरा चरण (चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि): पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ और आर्थिक मामले केंद्र में आते हैं। सोच-समझकर बोलना, बचत करना और ईमानदार व्यवहार राहत देते हैं। चरण के अंत के साथ प्रभाव धीरे-धीरे हल्के होते जाते हैं।

तीन चरण

पहला चरण (चंद्रमा से बारहवें भाव में शनि): खर्च, यात्रा, नींद में बाधा और भविष्य की चिंता हो सकती है। यह फ़िज़ूलखर्ची घटाने, आर्थिक योजना बनाने और स्वास्थ्य का ध्यान रखने का अच्छा समय है।

दूसरा चरण (चंद्र राशि पर शनि): यह सामान्यतः सबसे कठिन चरण होता है। काम का दबाव, भावनात्मक तनाव और धीमे परिणाम आम हैं। धैर्य, अनुशासन और शांत दिनचर्या आपको पार ले जाते हैं, और यही चरण अक्सर आगे की सफलता की नींव रखता है।

तीसरा चरण (चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि): पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ और आर्थिक मामले केंद्र में आते हैं। सोच-समझकर बोलना, बचत करना और ईमानदार व्यवहार राहत देते हैं। चरण के अंत के साथ प्रभाव धीरे-धीरे हल्के होते जाते हैं।

ढैया (छोटी पनौती) तब होती है जब शनि चंद्रमा से चौथी या आठवीं राशि से गुज़रता है। चौथी राशि घर और संपत्ति की चिंताएँ लाती है; आठवीं स्वास्थ्य और अचानक बाधाओं में सावधानी माँगती है। हर ढैया लगभग ढाई वर्ष चलती है।

पारंपरिक उपाय

पारंपरिक उपाय: शनिवार को हनुमान चालीसा या शनि स्तोत्र का पाठ करें; शनिवार की शाम पीपल के पेड़ के नीचे तिल के तेल का दीपक जलाएँ; ज़रूरतमंदों को काले तिल, उड़द दाल, लोहे की वस्तुएँ, कंबल या जूते-चप्पल दान करें; बुज़ुर्गों और मेहनतकश लोगों की सेवा करें; शराब, बेईमानी और कठोर व्यवहार से बचें। ये भक्ति और दान की पारंपरिक प्रथाएँ हैं और चिकित्सा या पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं।

SAMPLE

आने वाले वर्षों में गुरु, शनि और राहु

धीमे ग्रह आपके जीवन का लंबी अवधि का माहौल बनाते हैं। नीचे अगले 12 वर्षों में गुरु, शनि और राहु का हर राशि-परिवर्तन दिया गया है, साथ में आपकी चंद्र राशि और लग्न से गिना गया भाव। गुरु और शनि के लिए उस राशि में उनके अष्टकवर्ग अंक (बिंदु) भी दिए गए हैं: शास्त्र के अनुसार 4 या अधिक बिंदु गोचर को सुधारते हैं और 4 से कम कमज़ोर करते हैं, भाव चाहे जो हो।

राशि की सीमा पर आगे-पीछे होने वाली गति (वक्री गति) को एक ही चरण में जोड़ा गया है, इसलिए नीचे का हर चरण आपके जीवन का एक सतत अध्याय है। सारांश तालिका के बाद हर चरण को क्रम से समझाया गया है: वह आपकी कुंडली में क्या छूता है, आपकी चल रही दशा उसके साथ कैसे काम करती है, रोज़मर्रा की बातों में क्या हो सकता है, और समस्याओं से बचने के लिए आप क्या कर सकते हैं।

गुरु

राशि	से	तक	चंद्रमा से	लग्न से	बिंदु	परिणाम
सिंह	31/10/2026	24/07/2028	7	3	6	शुभ
कन्या	24/07/2028	25/08/2029	8	4	6	मिश्रित
तुला	25/08/2029	23/09/2030	9	5	4	शुभ
वृश्चिक	23/09/2030	15/10/2031	10	6	3	सावधानी चाहिए
धनु	15/10/2031	23/10/2032	11	7	4	शुभ
मकर	23/10/2032	18/03/2033	12	8	4	मिश्रित
कुंभ	18/03/2033	28/03/2034	1	9	7	मिश्रित
मीन	28/03/2034	06/04/2035	2	10	6	शुभ
मेष	06/04/2035	15/04/2036	3	11	2	सावधानी चाहिए
वृषभ	15/04/2036	26/04/2037	4	12	4	मिश्रित
मिथुन	26/04/2037	11/05/2038	5	1	7	शुभ
कर्क	11/05/2038	07/10/2038	6	2	3	सावधानी चाहिए
सिंह	07/10/2038	…	7	3	6	शुभ

शनि

राशि	से	तक	चंद्रमा से	लग्न से	बिंदु	परिणाम
मीन	29/03/2025	23/02/2028	2	10	5	मिश्रित
मेष	23/02/2028	17/04/2030	3	11	6	शुभ
वृषभ	17/04/2030	31/05/2032	4	12	2	सावधानी चाहिए
मिथुन	31/05/2032	13/07/2034	5	1	3	सावधानी चाहिए
कर्क	13/07/2034	27/08/2036	6	2	4	शुभ
सिंह	27/08/2036	22/10/2038	7	3	2	सावधानी चाहिए
कन्या	22/10/2038	…	8	4	3	सावधानी चाहिए

राहु

राशि	से	तक	चंद्रमा से	लग्न से	परिणाम

SAMPLE

कुंभ	18/05/2025	05/12/2026	1	9	सावधानी चाहिए
मकर	05/12/2026	23/06/2028	12	8	सावधानी चाहिए
धनु	23/06/2028	11/01/2030	11	7	शुभ
वृश्चिक	11/01/2030	31/07/2031	10	6	सावधानी चाहिए
तुला	31/07/2031	16/02/2033	9	5	सावधानी चाहिए
कन्या	16/02/2033	05/09/2034	8	4	सावधानी चाहिए
सिंह	05/09/2034	24/03/2036	7	3	सावधानी चाहिए
कर्क	24/03/2036	11/10/2037	6	2	शुभ
मिथुन	11/10/2037	…	5	1	सावधानी चाहिए

चरण-दर-चरण विवेचन

गुरु: चरण-दर-चरण

गुरु सिंह में (31/10/2026 से 24/07/2028 तक) (अभी चल रही है) — शुभ

सातवें भाव में गुरु विवाह, साझेदारी और यात्रा के लिए शुभ है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 7 है; आपके लग्न से यह भाव 3 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए कर्क, कन्या में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क); केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत) पर पड़ती है।

6 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – शनि है, और अंत तक यह शनि – बुध हो जाती है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 7 में क्या हो सकता है:

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

SAMPLE

गुरु कन्या में (24/07/2028 से 25/08/2029 तक) — मिश्रित

आठवें भाव में गुरु धैर्य माँगता है; बाधाओं और स्वास्थ्य की देखभाल पर ध्यान दें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 8 है; आपके लग्न से यह भाव 4 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए तुला में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब); बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

6 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – बुध है। फल मिले-जुले रहेंगे; अनुकूल समय का उपयोग आगे बढ़ने के लिए करें।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 8 में क्या हो सकता है:

- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़; कठिन पक्ष में, अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ; कठिन पक्ष में, पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग; कठिन पक्ष में, जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ; कठिन पक्ष में, विरासत या साझा धन में देरी या विवाद। क्या सहायक है: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता; कठिन पक्ष में, भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

गुरु तुला में (25/08/2029 से 23/09/2030 तक) — शुभ

नौवें भाव में गुरु बहुत शुभ है: भाग्य, धार्मिक कार्य और बड़ों का सहयोग। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 9 है; आपके लग्न से यह भाव 5 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए वृश्चिक में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क); केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत); सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) पर पड़ती है।

4 बिंदुओं के साथ यह गोचर औसत सहारा देता है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – बुध है, और अंत तक यह शनि – केतु हो जाती है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

SAMPLE

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 9 में क्या हो सकता है:

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या पिता समान व्यक्तियों से अच्छी खबर, सहयोग या आशीर्वाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: किसी अच्छे गुरु या मार्गदर्शक से मार्गदर्शन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।
- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: प्रार्थना, तीर्थ या किसी आध्यात्मिक मार्गदर्शन से शांति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।
- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लाभकारी लंबी यात्रा, तीर्थ या विदेश-यात्रा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

गुरु वृश्चिक में (23/09/2030 से 15/10/2031 तक) — सावधानी चाहिए

दसवें भाव में गुरु कामकाज में परिवर्तन लाता है; करियर के निर्णय जल्दबाज़ी में न लें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 10 है; आपके लग्न से यह भाव 6 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए धनु में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब); बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

केवल 3 बिंदुओं के साथ यह गोचर कमज़ोर समर्थित है, इसलिए धीमे परिणामों की अपेक्षा रखें और सावधान रहें।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – केतु है, और अंत तक यह शनि – शुक्र हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 10 में क्या हो सकता है:

- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: ठहराव, दबाव या काम में थोपा गया बदलाव। क्या सहायक है: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: धीमा व्यापार या कड़ी प्रतिस्पर्धा। क्या सहायक है: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।
- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: किसी वरिष्ठ या अधिकारी से टकराव। क्या सहायक है: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: किसी छोटी बात पर आलोचना या मान-हानि। क्या सहायक है: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: आधिकारिक कामों में देरी। क्या सहायक है: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।

SAMPLE

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें।

गुरु धनु में (15/10/2031 से 23/10/2032 तक) — शुभ

ग्यारहवें भाव में गुरु लाभ, पदोन्नति और इच्छापूर्ति के लिए बहुत शुभ है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 11 है; आपके लग्न से यह भाव 7 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए मकर में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत); सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान); मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई) पर पड़ती है।

4 बिंदुओं के साथ यह गोचर औसत सहारा देता है।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 11 में क्या हो सकता है:

- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।
- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

गुरु मकर में (23/10/2032 से 18/03/2033 तक) — मिश्रित

बारहवें भाव में गुरु खर्च लाता है, प्रायः अच्छे कामों या यात्रा पर। आर्थिक योजना बनाकर चलें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 12 है; आपके लग्न से यह भाव 8 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

4 बिंदुओं के साथ यह गोचर औसत सहारा देता है।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है। फल मिले-जुले रहेंगे; अनुकूल समय का उपयोग आगे बढ़ने के लिए करें।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 12 में क्या हो सकता है:

SAMPLE

- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च; कठिन पक्ष में, अनियोजित या भारी खर्च। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर; कठिन पक्ष में, वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें; कठिन पक्ष में, बिगड़ी नींद या रात की चिंताएँ। क्या सहायक है: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत; कठिन पक्ष में, लापरवाही से हानि, या छिपा विरोध। क्या सहायक है: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति; कठिन पक्ष में, अकेलेपन की भावना या अंतर्मुखी हो जाना। क्या सहायक है: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें।

गुरु कुंभ में (18/03/2033 से 28/03/2034 तक) — मिश्रित

आपकी चंद्र राशि पर गुरु स्थान-परिवर्तन और कुछ अस्थिरता ला सकता है, हालाँकि आस्था बढ़ती है। ज़्यादा खर्च से बचें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 1 है; आपके लग्न से यह भाव 9 है।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान); मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई); राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव) पर पड़ती है।

7 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है। फल मिले-जुले रहेंगे; अनुकूल समय का उपयोग आगे बढ़ने के लिए करें।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 1 में क्या हो सकता है:

- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना; कठिन पक्ष में, थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि; कठिन पक्ष में, छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधिक आत्मविश्वास, प्रभावशाली उपस्थिति और लोगों का अच्छे अर्थ में ध्यान जाना; कठिन पक्ष में, अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय; कठिन पक्ष में, जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरु करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें।

गुरु मीन में (28/03/2034 से 06/04/2035 तक) — शुभ

चंद्रमा से दूसरे भाव में गुरु धन, पारिवारिक सुख और वाणी के लिए बहुत शुभ है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 2 है; आपके लग्न से यह भाव 10 है।

SAMPLE

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य) पर पड़ती है।

6 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है, और अंत तक यह शनि – सूर्य हो जाती है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 2 में क्या हो सकता है:

- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।
- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

गुरु मेष में (06/04/2035 से 15/04/2036 तक) — सावधानी चाहिए

तीसरे भाव में गुरु प्रगति को धीमा करता है और अतिरिक्त प्रयास माँगता है। धैर्य रखें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 3 है; आपके लग्न से यह भाव 11 है।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई); राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव) पर पड़ती है।

केवल 2 बिंदुओं के साथ यह गोचर कमज़ोर समर्थित है, इसलिए धीमे परिणामों की अपेक्षा रखें और सावधान रहें।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – सूर्य है, और अंत तक यह शनि – चंद्र हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 3 में क्या हो सकता है:

- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें,

SAMPLE

हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।

- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें।

गुरु वृषभ में (15/04/2036 से 26/04/2037 तक) — मिश्रित

चौथे भाव में गुरु घरेलू चिंताएँ या निवास-परिवर्तन ला सकता है। घर में शांति बनाए रखें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 4 है; आपके लग्न से यह भाव 12 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए मिथुन में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य) पर पड़ती है।

4 बिंदुओं के साथ यह गोचर औसत सहारा देता है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – चंद्र है, और अंत तक यह शनि – मंगल हो जाती है। फल मिले-जुले रहेंगे; अनुकूल समय का उपयोग आगे बढ़ने के लिए करें।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 4 में क्या हो सकता है:

- **माता** — क्या हो सकता है: माता से निकटता, आशीर्वाद और सुकून; कठिन पक्ष में, माता के स्वास्थ्य की चिंता या उनसे मतभेद। क्या सहायक है: उनके साथ समय बिताएँ, बिना बहस के सुनें और उनकी नियमित जाँच न छूटे यह देखें।
- **घर और पारिवारिक शांति** — क्या हो सकता है: शांत और सुखी घर; कठिन पक्ष में, बेचैनी या घर में छोटे झगड़े। क्या सहायक है: घर व्यवस्थित रखें, छोटी बातें तुरंत सुलझाएँ और रोज़ परिवार को कुछ समय दें।
- **संपत्ति और भूमि** — क्या हो सकता है: मकान, ज़मीन या संपत्ति के मामलों में प्रगति या लाभ; कठिन पक्ष में, संपत्ति के काम में देरी या विवाद। क्या सहायक है: खरीदने से पहले हर कागज़ वकील से जँचवाएँ और जल्दबाज़ी के सौदों से बचें।
- **वाहन** — क्या हो सकता है: अच्छा वाहन खरीदने या उसका सुख लेने का अवसर; कठिन पक्ष में, मरम्मत का खर्च या छोटी दुर्घटनाएँ। क्या सहायक है: वाहन की सर्विस समय पर कराएँ, गति-सीमा में चलाएँ और बीमा चालू रखें।
- **मन की शांति** — क्या हो सकता है: शांत मन और संतोष; कठिन पक्ष में, भीतरी बेचैनी या चिंता। क्या सहायक है: रोज़ कुछ समय शांत बैठें, बाहर टहलें और पूजा या ध्यान जारी रखें।

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें।

गुरु मिथुन में (26/04/2037 से 11/05/2038 तक) — शुभ

पाँचवें भाव में गुरु बहुत शुभ है: संतान और शिक्षा से जुड़ी अच्छी खबर और योजनाओं में सफलता। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 5 है; आपके लग्न से यह भाव 1 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए कर्क में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव);

SAMPLE

चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क) पर पड़ती है।

7 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – मंगल है, और अंत तक यह शनि – राहु हो जाती है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 5 में क्या हो सकता है:

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: प्रेम में गर्मजोशी और खुशी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

गुरु कर्क में (11/05/2038 से 07/10/2038 तक) — सावधानी चाहिए

छठे भाव में गुरु स्वास्थ्य की चिंता या विवाद ला सकता है। कर्ज़ के मामलों में सावधान रहें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 6 है; आपके लग्न से यह भाव 2 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य); शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब) पर पड़ती है।

केवल 3 बिंदुओं के साथ यह गोचर कमज़ोर समर्थित है, इसलिए धीमे परिणामों की अपेक्षा रखें और सावधान रहें।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – राहु है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 6 में क्या हो सकता है:

- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।
- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।
- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड

SAMPLE

रखें और योग्य वकील से सलाह लें।

क्या करें: गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें।

गुरु सिंह में (07/10/2038 से ... तक) — शुभ

सातवें भाव में गुरु विवाह, साझेदारी और यात्रा के लिए शुभ है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 7 है; आपके लग्न से यह भाव 3 है।

इस राशि में रहते हुए गुरु आपकी जन्मकालीन मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क); केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत) पर पड़ती है।

6 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – राहु है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

गुरु जिस विषय को छूते हैं उसे बढ़ाते हैं। ये सामान्यतः शुभकामना, मार्गदर्शन और अवसर लाते हैं, पर कभी-कभी अति-आशावादी भी बना देते हैं, इसलिए पैर ज़मीन पर रखें।

भाव 7 में क्या हो सकता है:

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

शनि: चरण-दर-चरण

शनि मीन में (29/03/2025 से 23/02/2028 तक) (अभी चल रही है) — मिश्रित

चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि साढ़ेसाती का अंतिम चरण है। धन और पारिवारिक संबंधों पर ध्यान दें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 2 है; आपके लग्न से यह भाव 10 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए मेष में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इस राशि में रहते हुए शनि आपकी जन्मकालीन शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

5 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

SAMPLE

यह चरण आपकी साढ़ेसाती के भीतर आता है; इसका वर्णन साढ़ेसाती के अध्याय में है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – शनि है, और अंत तक यह शनि – बुध हो जाती है। फल मिले-जुले रहेंगे; अनुकूल समय का उपयोग आगे बढ़ने के लिए करें।

शनि धीरे काम करते हैं। इनके फल प्रयास, धैर्य और ज़िम्मेदारी से मिलते हैं, दिखने में समय लगता है, और इस अवधि में जो बनता है वह लंबे समय तक टिकता है।

भाव 2 में क्या हो सकता है:

- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत; कठिन पक्ष में, धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद; कठिन पक्ष में, अनियमित खान-पान या अति। क्या सहायक है: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।
- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि; कठिन पक्ष में, पारिवारिक संपत्ति को लेकर चिंता या पारिवारिक बँटवारे में देरी। क्या सहायक है: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें; कठिन पक्ष में, कठोर शब्द या ग़लतफ़हमी। क्या सहायक है: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग काला, गहरा नीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ शनये नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

शनि मेष में (23/02/2028 से 17/04/2030 तक) — शुभ

तीसरे भाव में शनि शुभ है: मेहनत से सफलता, प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और लाभ। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 3 है; आपके लग्न से यह भाव 11 है।

वक्री गति के कारण यह थोड़ी देर के लिए वृषभ में पीछे जाकर लौट आता है; यहाँ बताए गए फल पूरे समय जारी रहते हैं।

इस राशि में रहते हुए शनि आपकी जन्मकालीन केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान); राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव) पर पड़ती है।

6 बिंदुओं के साथ यह गोचर अच्छी तरह समर्थित है, इसलिए कठिनाइयाँ भी संभल जाती हैं।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – बुध है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

शनि धीरे काम करते हैं। इनके फल प्रयास, धैर्य और ज़िम्मेदारी से मिलते हैं, दिखने में समय लगता है, और इस अवधि में जो बनता है वह लंबे समय तक टिकता है।

भाव 3 में क्या हो सकता है:

- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा। इसे ऐसा ही बनाए

SAMPLE

रखने के लिए: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।

- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

शनि वृषभ में (17/04/2030 से 31/05/2032 तक) — सावधानी चाहिए

चौथे भाव में शनि (छोटी पनौती / ढैया) घरेलू तनाव और संपत्ति की चिंता ला सकता है। धैर्य रखें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 4 है; आपके लग्न से यह भाव 12 है।

इस राशि में रहते हुए शनि आपकी जन्मकालीन बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य); चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क) पर पड़ती है।

केवल 2 बिंदुओं के साथ यह गोचर कमज़ोर समर्थित है, इसलिए धीमे परिणामों की अपेक्षा रखें और सावधान रहें।

यह चरण ढैया (छोटी पनौती) है; इसका वर्णन साढ़ेसाती के अध्याय में है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – बुध है, और अंत तक यह शनि – शुक्र हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

शनि धीरे काम करते हैं। इनके फल प्रयास, धैर्य और ज़िम्मेदारी से मिलते हैं, दिखने में समय लगता है, और इस अवधि में जो बनता है वह लंबे समय तक टिकता है।

भाव 4 में क्या हो सकता है:

- **माता** — क्या हो सकता है: माता के स्वास्थ्य की चिंता या उनसे मतभेद। क्या सहायक है: उनके साथ समय बिताएँ, बिना बहस के सुनें और उनकी नियमित जाँच न छूटे यह देखें।
- **घर और पारिवारिक शांति** — क्या हो सकता है: बेचैनी या घर में छोटे झगड़े। क्या सहायक है: घर व्यवस्थित रखें, छोटी बातें तुरंत सुलझाएँ और रोज़ परिवार को कुछ समय दें।
- **संपत्ति और भूमि** — क्या हो सकता है: संपत्ति के काम में देरी या विवाद। क्या सहायक है: खरीदने से पहले हर कागज़ वकील से जँचवाएँ और जल्दबाज़ी के सौदों से बचें।
- **प्रारंभिक शिक्षा और सुख-सुविधाएँ** — क्या हो सकता है: घर या पढ़ाई में ध्यान भटकना और असुविधा। क्या सहायक है: पढ़ाई और आराम के लिए एक तय जगह और समय रखें।
- **वाहन** — क्या हो सकता है: मरम्मत का खर्च या छोटी दुर्घटनाएँ। क्या सहायक है: वाहन की सर्विस समय पर कराएँ, गति-सीमा में चलाएँ और बीमा चालू रखें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग काला, गहरा नीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ शनये नमः का जाप करें।

शनि मिथुन में (31/05/2032 से 13/07/2034 तक) — सावधानी चाहिए

पाँचवें भाव में शनि संतान की चिंता और मानसिक तनाव ला सकता है। सट्टे से बचें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 5 है; आपके लग्न से यह भाव 1 है।

SAMPLE

इस राशि में रहते हुए शनि आपकी जन्मकालीन सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई); शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब) पर पड़ती है।

केवल 3 बिंदुओं के साथ यह गोचर कमज़ोर समर्थित है, इसलिए धीमे परिणामों की अपेक्षा रखें और सावधान रहें।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

शनि धीरे काम करते हैं। इनके फल प्रयास, धैर्य और ज़िम्मेदारी से मिलते हैं, दिखने में समय लगता है, और इस अवधि में जो बनता है वह लंबे समय तक टिकता है।

भाव 5 में क्या हो सकता है:

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: रचनात्मक रुकावट, संदेह या अधूरे काम। क्या सहायक है: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: भ्रम या ज़्यादा सोचना। क्या सहायक है: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमियाँ या प्रेम में अनुचित निर्णय। क्या सहायक है: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग काला, गहरा नीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ शनये नमः का जाप करें।

शनि कर्क में (13/07/2034 से 27/08/2036 तक) — शुभ

छठे भाव में शनि शुभ है: आप शत्रुओं, कर्ज़ और रोग पर विजय पाते हैं। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 6 है; आपके लग्न से यह भाव 2 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत) पर पड़ती है।

4 बिंदुओं के साथ यह गोचर औसत सहारा देता है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है, और अंत तक यह शनि – चंद्र हो जाती है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

शनि धीरे काम करते हैं। इनके फल प्रयास, धैर्य और ज़िम्मेदारी से मिलते हैं, दिखने में समय लगता है, और इस अवधि में जो बनता है वह लंबे समय तक टिकता है।

भाव 6 में क्या हो सकता है:

- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।
- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।
- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के

SAMPLE

लिए: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

शनि सिंह में (27/08/2036 से 22/10/2038 तक) — सावधानी चाहिए

सातवें भाव में शनि साझेदारियों में खिंचाव और थकाने वाली यात्रा ला सकता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 7 है; आपके लग्न से यह भाव 3 है।

इस राशि में रहते हुए शनि आपकी जन्मकालीन मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव); चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क); बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

केवल 2 बिंदुओं के साथ यह गोचर कमज़ोर समर्थित है, इसलिए धीमे परिणामों की अपेक्षा रखें और सावधान रहें।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – चंद्र है, और अंत तक यह शनि – राहु हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

शनि धीरे काम करते हैं। इनके फल प्रयास, धैर्य और ज़िम्मेदारी से मिलते हैं, दिखने में समय लगता है, और इस अवधि में जो बनता है वह लंबे समय तक टिकता है।

भाव 7 में क्या हो सकता है:

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से मतभेद, दूरी या अहंकार का टकराव। क्या सहायक है: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: विवाह के निर्णय में देरी या असमंजस। क्या सहायक है: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग काला, गहरा नीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ शनये नमः का जाप करें।

शनि कन्या में (22/10/2038 से … तक) — सावधानी चाहिए

आठवें भाव में शनि (छोटी पनौती / ढैया) स्वास्थ्य और अचानक बाधाओं में सावधानी माँगता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 8 है; आपके लग्न से यह भाव 4 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य); शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब); सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) पर पड़ती है।

केवल 3 बिंदुओं के साथ यह गोचर कमज़ोर समर्थित है, इसलिए धीमे परिणामों की अपेक्षा रखें और सावधान रहें।

यह चरण ढैया (छोटी पनौती) है; इसका वर्णन साढ़ेसाती के अध्याय में है।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – राहु है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

SAMPLE

शनि धीरे काम करते हैं। इनके फल प्रयास, धैर्य और ज़िम्मेदारी से मिलते हैं, दिखने में समय लगता है, और इस अवधि में जो बनता है वह लंबे समय तक टिकता है।

भाव 8 में क्या हो सकता है:

- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत या साझा धन में देरी या विवाद। क्या सहायक है: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग काला, गहरा नीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ शनये नमः का जाप करें।

राहु: चरण-दर-चरण

राहु कुंभ में (18/05/2025 से 05/12/2026 तक) (अभी चल रही है) — सावधानी चाहिए

आपकी चंद्र राशि पर राहु भ्रम और बेचैनी ला सकता है। जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 1 है; आपके लग्न से यह भाव 9 है।

इस राशि में रहते हुए राहु आपकी जन्मकालीन चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान); मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई); राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव) पर पड़ती है।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – शनि है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 1 में क्या हो सकता है:

- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग धुएँ जैसा नीला, स्लेटी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ राहवे नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते

SAMPLE

हैं।

राहु मकर में (05/12/2026 से 23/06/2028 तक) — सावधानी चाहिए

बारहवें भाव में राहु खर्च और यात्रा ला सकता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 12 है; आपके लग्न से यह भाव 8 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – शनि है, और अंत तक यह शनि – बुध हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 12 में क्या हो सकता है:

- **खर्च** — क्या हो सकता है: अनियोजित या भारी खर्च। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: बिगड़ी नींद या रात की चिंताएँ। क्या सहायक है: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: अस्पताल जाना पड़ना या छिपी चिंताएँ। क्या सहायक है: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: लापरवाही से हानि, या छिपा विरोध। क्या सहायक है: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग धुएँ जैसा नीला, स्लेटी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ राहवे नमः का जाप करें।

राहु धनु में (23/06/2028 से 11/01/2030 तक) — शुभ

ग्यारहवें भाव में राहु लाभ और नए संपर्कों के लिए शुभ है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 11 है; आपके लग्न से यह भाव 7 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत); सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान); मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई) पर पड़ती है।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – बुध है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 11 में क्या हो सकता है:

- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।
- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।

SAMPLE

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

राहु वृश्चिक में (11/01/2030 से 31/07/2031 तक) — सावधानी चाहिए

दसवें भाव में राहु कामकाज में अचानक परिवर्तन ला सकता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 10 है; आपके लग्न से यह भाव 6 है।

इस राशि में रहते हुए राहु आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब); बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – बुध है, और अंत तक यह शनि – शुक्र हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 10 में क्या हो सकता है:

- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: ठहराव, दबाव या काम में थोपा गया बदलाव। क्या सहायक है: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: धीमा व्यापार या कड़ी प्रतिस्पर्धा। क्या सहायक है: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।
- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: किसी वरिष्ठ या अधिकारी से टकराव। क्या सहायक है: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: किसी छोटी बात पर आलोचना या मान-हानि। क्या सहायक है: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: आधिकारिक कामों में देरी। क्या सहायक है: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग धुएँ जैसा नीला, स्लेटी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ राहवे नमः का जाप करें।

राहु तुला में (31/07/2031 से 16/02/2033 तक) — सावधानी चाहिए

नौवें भाव में राहु भाग्य में बाधा और धार्मिक शंकाएँ ला सकता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 9 है; आपके लग्न से यह भाव 5 है।

इस राशि में रहते हुए राहु आपकी जन्मकालीन राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क); केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत); सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) पर पड़ती है।

इस चरण में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे

SAMPLE

नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 9 में क्या हो सकता है:

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: प्रयास के बावजूद देरी या अपेक्षा से कम परिणाम। क्या सहायक है: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा की योजनाओं में बाधा या बदलाव। क्या सहायक है: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।
- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: ऐसा दान जो ग़लत जगह जाए या जिसकी कद्र न हो। क्या सहायक है: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।
- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या बड़ों को लेकर ग़लतफ़हमी, दूरी या स्वास्थ्य की चिंता। क्या सहायक है: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: मार्गदर्शन की कमी या गुरु या बड़े से मतभेद। क्या सहायक है: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग धुएँ जैसा नीला, स्लेटी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ राहवे नमः का जाप करें।

राहु कन्या में (16/02/2033 से 05/09/2034 तक) — सावधानी चाहिए

आठवें भाव में राहु स्वास्थ्य और अचानक घटनाओं में सावधानी माँगता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 8 है; आपके लग्न से यह भाव 4 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब); बुध (आपके भाव 12 में; संवाद, व्यापार, पढ़ाई और मित्र); शुक्र (आपके भाव 12 में; संबंध, सुख-सुविधाएँ, कला और धन) पर पड़ती है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – शुक्र है, और अंत तक यह शनि – सूर्य हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 8 में क्या हो सकता है:

- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत या साझा धन में देरी या विवाद। क्या सहायक है: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग धुएँ जैसा नीला, स्लेटी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ राहवे नमः का जाप करें।

राहु सिंह में (05/09/2034 से 24/03/2036 तक) — सावधानी चाहिए

सातवें भाव में राहु साझेदारियों में गलतफ़हमियाँ ला सकता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 7 है; आपके लग्न से यह भाव 3 है।

SAMPLE

इस राशि में रहते हुए राहु आपकी जन्मकालीन मंगल (आपके भाव 3 में; ऊर्जा, साहस, संपत्ति और भाई) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क); केतु (आपके भाव 11 में; वैराग्य, आध्यात्मिक रुचि और अचानक अंत) पर पड़ती है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – सूर्य है, और अंत तक यह शनि – चंद्र हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 7 में क्या हो सकता है:

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से मतभेद, दूरी या अहंकार का टकराव। क्या सहायक है: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: विवाह के निर्णय में देरी या असमंजस। क्या सहायक है: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग धुएँ जैसा नीला, स्लेटी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ राहवे नमः का जाप करें।

राहु कर्क में (24/03/2036 से 11/10/2037 तक) — शुभ

छठे भाव में राहु शुभ है: प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और अच्छा स्वास्थ्य। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 6 है; आपके लग्न से यह भाव 2 है।

इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन गुरु (आपके भाव 6 में; ज्ञान, संतान, गुरुजन और सौभाग्य); शनि (आपके भाव 10 में; कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब) पर पड़ती है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – चंद्र है, और अंत तक यह शनि – मंगल हो जाती है। दशा इसका साथ देती है, इसलिए इस गोचर के शुभ फल जल्दी और पूर्ण रूप से मिल सकते हैं।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 6 में क्या हो सकता है:

- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।
- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।
- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी। इसे ऐसा ही बनाए रखने के

SAMPLE

लिए: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।

क्या करें: इस समय का अच्छा उपयोग करें: जिन कामों की योजना बना रखी है उन्हें शुरू करें, पर सावधान रहें और सब कुछ ठीक चलने के कारण लापरवाह न हों।

राहु मिथुन में (11/10/2037 से … तक) — सावधानी चाहिए

पाँचवें भाव में राहु संतान या सट्टे को लेकर चिंता ला सकता है। आपके चंद्र से गिनने पर यह भाव 5 है; आपके लग्न से यह भाव 1 है।

इस राशि में रहते हुए राहु आपकी जन्मकालीन सूर्य (आपके भाव 1 में; आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) के ऊपर से गुज़रता है। इसकी दृष्टि आपकी जन्मकालीन राहु (आपके भाव 5 में; महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय और अप्रत्याशित बदलाव); चंद्र (आपके भाव 9 में; मन, माता, भावनाएँ और जनसंपर्क) पर पड़ती है।

इस चरण के आरंभ में आपकी चल रही दशा शनि – मंगल है, और अंत तक यह शनि – राहु हो जाती है। दशा सहायक है, जो इस गोचर के कठिन हिस्सों को हल्का कर देती है।

राहु अचानक, असामान्य या विदेशी प्रभाव लाते हैं और महत्वाकांक्षा को बढ़ाते हैं। फल जल्दी मिल सकते हैं पर जैसे दिखते हैं वैसे नहीं भी हो सकते, इसलिए तथ्य जाँचें और शॉर्टकट से बचें।

भाव 5 में क्या हो सकता है:

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: रचनात्मक रुकावट, संदेह या अधूरे काम। क्या सहायक है: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: टिप्स, शॉर्टकट या जुए से हानि। क्या सहायक है: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: भ्रम या ज़्यादा सोचना। क्या सहायक है: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

क्या करें: शनिवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग धुएँ जैसा नीला, स्लेटी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ राहवे नमः का जाप करें।

यहाँ बताए गए उपाय पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं और उसी भाव से दिए गए हैं। स्वास्थ्य, क़ानूनी या धन संबंधी मामलों में कृपया योग्य डॉक्टर, वकील या वित्तीय सलाहकार से भी सलाह लें।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — गोचर के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — अष्टकवर्ग।

SAMPLE

मासिक भविष्यफल (गोचर)

ये भविष्यफल सूर्य, मंगल, गुरु, शनि और राहु के राशियों से गोचर पर आधारित हैं, जिसे आपकी चंद्र राशि (कुंभ) से गिना गया है, और साथ में आपकी चल रही दशा पर। गोचर हर महीने का माहौल दिखाता है; दशा मुख्य कहानी बताती है।

नवंबर 2026 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** तुला में (चंद्रमा से भाव 9): नौवें भाव में सूर्य पिता या गुरुजनों से मतभेद और भाग्य में कमी ला सकता है। विनम्र रहें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में गुरु विवाह, साझेदारी और यात्रा के लिए शुभ है।
    - **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
    - **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
    - **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **शनि** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि साढ़ेसाती का अंतिम चरण है। धन और पारिवारिक संबंधों पर ध्यान दें।
    - **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
    - **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अनियमित खान-पान या अति। क्या सहायक है: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।
    - **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति को लेकर चिंता या पारिवारिक बँटवारे में देरी। क्या सहायक है: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **राहु** कुंभ में (चंद्रमा से भाव 1): आपकी चंद्र राशि पर राहु भ्रम और बेचैनी ला सकता है। जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें।
    - **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
    - **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
    - **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।

दिसंबर 2026 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** वृश्चिक में (चंद्रमा से भाव 10): दसवें भाव में सूर्य करियर, मान-सम्मान और सरकारी कामों में सफलता के लिए बहुत शुभ है।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।

SAMPLE

- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में (चंद्रमा से भाव 12): बारहवें भाव में राहु खर्च और यात्रा ला सकता है।
    - **खर्च** — क्या हो सकता है: अनियोजित या भारी खर्च। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
    - **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
    - **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: बिगड़ी नींद या रात की चिंताएँ। क्या सहायक है: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।

जनवरी 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मकर में (चंद्रमा से भाव 12): बारहवें भाव में सूर्य खर्च, यात्रा और कम ऊर्जा ला सकता है। आराम करें और विवादों से बचें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

फ़रवरी 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** कुंभ में (चंद्रमा से भाव 1): सूर्य आपकी चंद्र राशि पर से गुज़र रहा है। ऊर्जा कम और स्वभाव में चिड़चिड़ापन रह सकता है; वरिष्ठों से टकराव टालें और पूरा आराम करें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में गुरु स्वास्थ्य की चिंता या विवाद ला सकता है। कर्ज़ के मामलों में सावधान रहें।
    - **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
    - **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।
    - **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

मार्च 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): चंद्रमा से दूसरे भाव में सूर्य अतिरिक्त खर्च और पारिवारिक बातचीत में तनाव ला सकता है। नरमी से बोलें और आँखों का ध्यान रखें।
- **मंगल** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में मंगल शुभ है। आप विरोधियों को हराते हैं और कड़ी मेहनत से लाभ पाते हैं।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।

SAMPLE

- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

अप्रैल 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): चंद्रमा से तीसरे भाव में सूर्य शुभ है। साहस, प्रयासों में सफलता और वरिष्ठों से सराहना की संभावना है।
- **मंगल** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में मंगल शुभ है। आप विरोधियों को हराते हैं और कड़ी मेहनत से लाभ पाते हैं।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

मई 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): चंद्रमा से तीसरे भाव में सूर्य शुभ है। साहस, प्रयासों में सफलता और वरिष्ठों से सराहना की संभावना है।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

जून 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** वृषभ में (चंद्रमा से भाव 4): चौथे भाव में सूर्य घर की शांति भंग कर सकता है और यात्रा या संपत्ति की चिंता ला सकता है। घर में शांत रहें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): तीसरे भाव में शनि शुभ है: मेहनत से सफलता, प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और लाभ।
    - **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
    - **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
    - **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

जुलाई 2027 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मिथुन में (चंद्रमा से भाव 5): पाँचवें भाव में सूर्य मानसिक तनाव और संतान को लेकर चिंता ला सकता है। सट्टे से बचें।
- **मंगल** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में मंगल स्वास्थ्य, चोट और अचानक खर्च के मामले में सावधानी माँगता है।
- **गुरु** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में गुरु विवाह, साझेदारी और यात्रा के लिए शुभ है।
    - **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
    - **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।

SAMPLE

    - **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

अगस्त 2027 — शुभ महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में सूर्य शुभ है। आप प्रतिद्वंद्वियों पर भारी पड़ते हैं, स्वास्थ्य सुधरता है और अधिकारियों का सहयोग मिलता है।
- **मंगल** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में मंगल स्वास्थ्य, चोट और अचानक खर्च के मामले में सावधानी माँगता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

सितंबर 2027 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में सूर्य जीवनसाथी या साझेदारों से अनबन और थकाने वाली यात्रा दे सकता है। धैर्य रखें।
- **मंगल** तुला में (चंद्रमा से भाव 9): नौवें भाव में मंगल बाधाएँ और बड़ों से मतभेद ला सकता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

अक्टूबर 2027 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में सूर्य स्वास्थ्य, खर्च और सरकारी मामलों में सावधानी माँगता है।
- **मंगल** वृश्चिक में (चंद्रमा से भाव 10): दसवें भाव में मंगल कामकाज में मिले-जुले फल देता है: काम आगे बढ़ सकता है, पर वरिष्ठों से टकराव से बचें।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

नवंबर 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** तुला में (चंद्रमा से भाव 9): नौवें भाव में सूर्य पिता या गुरुजनों से मतभेद और भाग्य में कमी ला सकता है। विनम्र रहें।
- **मंगल** वृश्चिक में (चंद्रमा से भाव 10): दसवें भाव में मंगल कामकाज में मिले-जुले फल देता है: काम आगे बढ़ सकता है, पर वरिष्ठों से टकराव से बचें।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि साढ़ेसाती का अंतिम चरण है। धन और पारिवारिक संबंधों पर ध्यान दें।
    - **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
    - **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: संभव हो

SAMPLE

तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
    - **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: कठोर शब्द या ग़लतफ़हमी। क्या सहायक है: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

दिसंबर 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** वृश्चिक में (चंद्रमा से भाव 10): दसवें भाव में सूर्य करियर, मान-सम्मान और सरकारी कामों में सफलता के लिए बहुत शुभ है।
- **मंगल** धनु में (चंद्रमा से भाव 11): ग्यारहवें भाव में मंगल लाभ, संपत्ति और योजनाओं की पूर्ति के लिए शुभ है।
- **गुरु** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में गुरु धैर्य माँगता है; बाधाओं और स्वास्थ्य की देखभाल पर ध्यान दें।
    - **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
    - **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
    - **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

जनवरी 2028 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** मकर में (चंद्रमा से भाव 12): बारहवें भाव में सूर्य खर्च, यात्रा और कम ऊर्जा ला सकता है। आराम करें और विवादों से बचें।
- **मंगल** मकर में (चंद्रमा से भाव 12): बारहवें भाव में मंगल खर्च और नींद में बाधा ला सकता है।
- **गुरु** कन्या में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 8), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

फ़रवरी 2028 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** कुंभ में (चंद्रमा से भाव 1): सूर्य आपकी चंद्र राशि पर से गुज़र रहा है। ऊर्जा कम और स्वभाव में चिड़चिड़ापन रह सकता है; वरिष्ठों से टकराव टालें और पूरा आराम करें।
- **मंगल** कुंभ में (चंद्रमा से भाव 1): आपकी चंद्र राशि पर मंगल अधीरता और दुर्घटना की आशंका बढ़ा सकता है। सावधानी से वाहन चलाएँ और क्रोध पर नियंत्रण रखें।
- **गुरु** कन्या में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 8), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

मार्च 2028 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): चंद्रमा से दूसरे भाव में सूर्य अतिरिक्त खर्च और पारिवारिक बातचीत में तनाव ला सकता है।

SAMPLE

नरमी से बोलें और आँखों का ध्यान रखें।

- **मंगल** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): दूसरे भाव में मंगल खर्च और परिवार में कड़वी बातें ला सकता है। अपनी वाणी और धन की रक्षा करें।
- **गुरु** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में गुरु विवाह, साझेदारी और यात्रा के लिए शुभ है।
    - **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
    - **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
    - **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शनि** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): तीसरे भाव में शनि शुभ है: मेहनत से सफलता, प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और लाभ।
    - **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
    - **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
    - **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

अप्रैल 2028 — शुभ महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): चंद्रमा से तीसरे भाव में सूर्य शुभ है। साहस, प्रयासों में सफलता और वरिष्ठों से सराहना की संभावना है।
- **मंगल** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): दूसरे भाव में मंगल खर्च और परिवार में कड़वी बातें ला सकता है। अपनी वाणी और धन की रक्षा करें।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

मई 2028 — शुभ महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** वृषभ में (चंद्रमा से भाव 4): चौथे भाव में सूर्य घर की शांति भंग कर सकता है और यात्रा या संपत्ति की चिंता ला सकता है। घर में शांत रहें।
- **मंगल** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): तीसरे भाव में मंगल शुभ है। साहस, प्रतिद्वंद्वियों पर सफलता और मेहनत से लाभ की संभावना है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

जून 2028 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

SAMPLE

- **सूर्य** मिथुन में (चंद्रमा से भाव 5): पाँचवें भाव में सूर्य मानसिक तनाव और संतान को लेकर चिंता ला सकता है। सट्टे से बचें।
- **मंगल** वृषभ में (चंद्रमा से भाव 4): चौथे भाव में मंगल घरेलू जीवन में अशांति और संपत्ति या वाहन से जुड़ी समस्याएँ ला सकता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

जुलाई 2028 — शुभ महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** मिथुन में (चंद्रमा से भाव 5): पाँचवें भाव में सूर्य मानसिक तनाव और संतान को लेकर चिंता ला सकता है। सट्टे से बचें।
- **मंगल** मिथुन में (चंद्रमा से भाव 5): पाँचवें भाव में मंगल संतान की चिंता और जल्दबाज़ी के निर्णय ला सकता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** धनु में (चंद्रमा से भाव 11): ग्यारहवें भाव में राहु लाभ और नए संपर्कों के लिए शुभ है।
    - **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
    - **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।
    - **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।

अगस्त 2028 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में सूर्य शुभ है। आप प्रतिद्वंद्वियों पर भारी पड़ते हैं, स्वास्थ्य सुधरता है और अधिकारियों का सहयोग मिलता है।
- **मंगल** मिथुन में (चंद्रमा से भाव 5): पाँचवें भाव में मंगल संतान की चिंता और जल्दबाज़ी के निर्णय ला सकता है।
- **गुरु** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में गुरु धैर्य माँगता है; बाधाओं और स्वास्थ्य की देखभाल पर ध्यान दें।
    - **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
    - **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत या साझा धन में देरी या विवाद। क्या सहायक है: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।
    - **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** धनु में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 11), फल ऊपर बताए अनुसार।

सितंबर 2028 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में सूर्य जीवनसाथी या साझेदारों से अनबन और थकाने वाली यात्रा दे सकता है। धैर्य रखें।
- **मंगल** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में मंगल शुभ है। आप विरोधियों को हराते हैं और कड़ी मेहनत से लाभ पाते हैं।
- **गुरु** कन्या में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 8), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।

SAMPLE

- **राहु** धनु में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 11), फल ऊपर बताए अनुसार।

अक्टूबर 2028 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में सूर्य स्वास्थ्य, खर्च और सरकारी मामलों में सावधानी माँगता है।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** कन्या में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 8), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** धनु में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 11), फल ऊपर बताए अनुसार।

आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — गोचर के फल; वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — चंद्रमा से ग्रहों का गोचर; रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — गोचर के नियम।

SAMPLE

वर्ष-दर-वर्ष: अगले 10 वर्ष

हर वर्ष का सार चार स्वतंत्र संकेतकों से निकाला गया है: चल रही दशा, आपकी चंद्र राशि से गुरु और शनि का गोचर, साढ़ेसाती या ढैया, और अंक ज्योतिष का व्यक्तिगत वर्ष। जब अधिकतर संकेत एक जैसे हों, तो वर्ष का स्वरूप स्पष्ट होता है; जब वे अलग हों, तो वर्ष अवसर और परीक्षा दोनों लाता है।

2026 — सावधानी का वर्ष (आयु 31)

- दशा: शनि – शनि (31/08/2027 तक), जो आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 6 में गुरु: धीमी प्रगति; प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग में सावधान रहें।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 2 में शनि: धन, परिवार और वाणी में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- साढ़ेसाती चल रही है (शनि मीन में)।
- व्यक्तिगत वर्ष 7: चिंतन और अध्ययन का वर्ष। आराम करें, सीखें, भीतर झाँकें और जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।

2027 — शुभ वर्ष (आयु 32)

- दशा: शनि – शनि (31/08/2027 तक), जो आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 7 में गुरु: विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार में वृद्धि, सहारा और अच्छी खबर।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 3 में शनि: साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद में मेहनत से स्थिर परिणाम।
- व्यक्तिगत वर्ष 8: उपलब्धि और धन से जुड़े विषयों का वर्ष। करियर और आर्थिक मामलों पर मेहनत करें; परिणाम अच्छे हो सकते हैं।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।

2028 — शुभ वर्ष (आयु 33)

- दशा: शनि – बुध (10/05/2030 तक), जो शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 7 में गुरु: विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार में वृद्धि, सहारा और अच्छी खबर।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 3 में शनि: साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद में मेहनत से स्थिर परिणाम।
- व्यक्तिगत वर्ष 9: पूर्णता का वर्ष। पुराने काम पूरे करें, जो अब उपयोगी नहीं उसे छोड़ें और नए चक्र की तैयारी करें।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।
- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: बेहतर ऊर्जा, सहनशक्ति और जल्दी स्वस्थ होना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने

SAMPLE

के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।

2029 — मिले-जुले फलों का वर्ष (आयु 34)

- दशा: शनि – बुध (10/05/2030 तक), जो शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 8 में गुरु: धीमी प्रगति; अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु में सावधान रहें।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 3 में शनि: साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद में मेहनत से स्थिर परिणाम।
- व्यक्तिगत वर्ष 1: नई शुरुआत का वर्ष। परियोजनाएँ शुरू करें, पहल करें और अगले नौ वर्षों के लिए बीज बोएँ।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग; कठिन पक्ष में, जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय; कठिन पक्ष में, जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

2030 — मिले-जुले फलों का वर्ष (आयु 35)

- दशा: शनि – केतु (19/06/2031 तक), जो आध्यात्मिक जीवन पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 9 में गुरु: भाग्य, पिता, गुरु में वृद्धि, सहारा और अच्छी खबर।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 4 में शनि: घर, माता, संपत्ति में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- ढैया (छोटी पनौती) चल रही है (शनि वृषभ में)।
- व्यक्तिगत वर्ष 2: धैर्य और साझेदारी का वर्ष। सहयोग करें, संबंध मज़बूत करें और योजनाओं को चुपचाप बढ़ने दें।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; कठिन पक्ष में, अपेक्षा से कम आय या भुगतान में देरी। क्या सहायक है: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।

2031 — सावधानी का वर्ष (आयु 36)

- दशा: शनि – शुक्र (19/08/2034 तक), जो संतान, यात्रा और विदेश से संबंध पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 10 में गुरु: धीमी प्रगति; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार में सावधान रहें।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 4 में शनि: घर, माता, संपत्ति में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- ढैया (छोटी पनौती) चल रही है (शनि वृषभ में)।
- व्यक्तिगत वर्ष 3: अभिव्यक्ति और सामाजिक जीवन का वर्ष। बातचीत करें, रचें और आनंद लें, पर खर्च पर नियंत्रण रखें।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना; कठिन पक्ष में, ठहराव, दबाव या काम में थोपा गया बदलाव। क्या सहायक है: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमियाँ या प्रेम में अनुचित निर्णय। क्या सहायक है: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।

2032 — मिले-जुले फलों का वर्ष (आयु 37)

- दशा: शनि – शुक्र (19/08/2034 तक), जो संतान, यात्रा और विदेश से संबंध पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 12 में गुरु: धीमी प्रगति; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद में सावधान रहें।

SAMPLE

- आपकी चंद्र राशि से भाव 5 में शनि: संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- व्यक्तिगत वर्ष 4: कड़ी मेहनत और नींव रखने का वर्ष। व्यवस्थित रहें, बचत करें और धीरे-धीरे निर्माण करें।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति; कठिन पक्ष में, अकेलेपन की भावना या अंतर्मुखी हो जाना। क्या सहायक है: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता; कठिन पक्ष में, ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

2033 — मिले-जुले फलों का वर्ष (आयु 38)

- दशा: शनि – शुक्र (19/08/2034 तक), जो संतान, यात्रा और विदेश से संबंध पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 1 में गुरु: धीमी प्रगति; स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत में सावधान रहें।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 5 में शनि: संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- व्यक्तिगत वर्ष 5: परिवर्तन और गतिशीलता का वर्ष। यात्रा, नए संपर्क और अवसर आते हैं; लचीले रहें पर सावधान भी।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि; कठिन पक्ष में, छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: सही समझ से लाभ; कठिन पक्ष में, टिप्स, शॉर्टकट या जुए से हानि। क्या सहायक है: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।

2034 — शुभ वर्ष (आयु 39)

- दशा: शनि – शुक्र (19/08/2034 तक), जो संतान, यात्रा और विदेश से संबंध पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 2 में गुरु: धन, परिवार और वाणी में वृद्धि, सहारा और अच्छी खबर।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 5 में शनि: संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- व्यक्तिगत वर्ष 6: परिवार और ज़िम्मेदारी का वर्ष। घर, विवाह और कर्तव्य आगे आते हैं; देखभाल दें और पाएँ।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।
- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: बहते विचार और ध्यान में आने वाली प्रतिभा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।

2035 — मिले-जुले फलों का वर्ष (आयु 40)

- दशा: शनि – सूर्य (01/08/2035 तक), जो स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 3 में गुरु: धीमी प्रगति; साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद में सावधान रहें।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 6 में शनि: प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग में मेहनत से स्थिर परिणाम।
- व्यक्तिगत वर्ष 7: चिंतन और अध्ययन का वर्ष। आराम करें, सीखें, भीतर झाँकें और जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें।

इस वर्ष ध्यान देने योग्य:

- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा; कठिन पक्ष में, बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में

SAMPLE

स्पष्ट रखें।

SAMPLE

अंक ज्योतिष

मूलांक 9

अंक 9 (मंगल) साहस, ऊर्जा और सेवा का प्रतीक है। आप बहादुर, उदार और रक्षा करने वाले हैं। क्रोध और जल्दबाज़ी पर नियंत्रण रखें।

भाग्यांक 3

अंक 3 (गुरु) ज्ञान, अभिव्यक्ति और आशावाद का प्रतीक है। आप मिलनसार, रचनात्मक और दूसरों का मार्गदर्शन करने में कुशल हैं। अनुशासन आपकी प्रतिभा को परिणाम में बदलता है।

जीवन पथ अंक 3

अंक 3 (गुरु) ज्ञान, अभिव्यक्ति और आशावाद का प्रतीक है। आप मिलनसार, रचनात्मक और दूसरों का मार्गदर्शन करने में कुशल हैं। अनुशासन आपकी प्रतिभा को परिणाम में बदलता है।

आने वाले व्यक्तिगत वर्ष

वर्ष	अंक	विषय
2025	6	परिवार और ज़िम्मेदारी का वर्ष। घर, विवाह और कर्तव्य आगे आते हैं; देखभाल दें और पाएँ।
2026	7	चिंतन और अध्ययन का वर्ष। आराम करें, सीखें, भीतर झाँकें और जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें।
2027	8	उपलब्धि और धन से जुड़े विषयों का वर्ष। करियर और आर्थिक मामलों पर मेहनत करें; परिणाम अच्छे हो सकते हैं।
2028	9	पूर्णता का वर्ष। पुराने काम पूरे करें, जो अब उपयोगी नहीं उसे छोड़ें और नए चक्र की तैयारी करें।
2029	1	नई शुरुआत का वर्ष। परियोजनाएँ शुरू करें, पहल करें और अगले नौ वर्षों के लिए बीज बोएँ।
2030	2	धैर्य और साझेदारी का वर्ष। सहयोग करें, संबंध मज़बूत करें और योजनाओं को चुपचाप बढ़ने दें।
2031	3	अभिव्यक्ति और सामाजिक जीवन का वर्ष। बातचीत करें, रचें और आनंद लें, पर खर्च पर नियंत्रण रखें।
2032	4	कड़ी मेहनत और नींव रखने का वर्ष। व्यवस्थित रहें, बचत करें और धीरे-धीरे निर्माण करें।
2033	5	परिवर्तन और गतिशीलता का वर्ष। यात्रा, नए संपर्क और अवसर आते हैं; लचीले रहें पर सावधान भी।
2034	6	परिवार और ज़िम्मेदारी का वर्ष। घर, विवाह और कर्तव्य आगे आते हैं; देखभाल दें और पाएँ।
2035	7	चिंतन और अध्ययन का वर्ष। आराम करें, सीखें, भीतर झाँकें और जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें।
2036	8	उपलब्धि और धन से जुड़े विषयों का वर्ष। करियर और आर्थिक मामलों पर मेहनत करें; परिणाम अच्छे हो सकते हैं।

अंक ज्योतिष शास्त्रीय वैदिक ज्योतिष का भाग नहीं है; इसे यहाँ एक लोकप्रिय सहायक पद्धति के रूप में शामिल किया गया है।

SAMPLE

उपाय और रत्न

सरल पारंपरिक उपाय

ये लाल किताब और लोक परंपराओं में हर ग्रह से जुड़े, व्यापक रूप से किए जाने वाले सरल उपाय हैं। ये उन ग्रहों के लिए दिए गए हैं जिन्हें आपकी कुंडली में सहारे की ज़रूरत है।

सूर्य (सोया हुआ, आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- उगते सूर्य को जल अर्पित करें।
- पिता और बड़ों का आदर करें।
- जहाँ तक हो सके, दूसरों से मुफ़्त उपहार लेने से बचें।
- ताँबे का एक छोटा टुकड़ा अपने पास रखें या ताँबे का सिक्का बहते पानी में प्रवाहित करें।

चंद्र

- माता का आदर और सेवा करें; महत्वपूर्ण काम से पहले उनका आशीर्वाद लें।
- रात को बिस्तर के पास चाँदी की कोई वस्तु या पानी का बर्तन रखें और सुबह वह पानी किसी पौधे में डाल दें।
- सोमवार को ज़रूरतमंदों को दूध या चावल दें।
- रात में पानी के पास बेवजह यात्रा से बचें।

मंगल (आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- हनुमान मंदिर में मिठाई (जैसे गुड़) अर्पित करें।
- भाइयों से अच्छे संबंध रखें।
- क्रोध और लापरवाही से वाहन चलाने से बचें।

बुध (लाल किताब के भाव से कमज़ोर, भाव 12 में)

- गायों को हरा चारा खिलाएँ।
- बहन, बेटी और बुआ-मौसी का आदर करें।
- दाँत और नाक साफ़ रखें।
- चुगली से बचें और वादे निभाएँ।

गुरु (भाव 6 में, आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- माथे पर केसर या हल्दी का छोटा तिलक लगाएँ।
- गुरुजनों, बड़ों और धार्मिक व्यक्तियों का आदर करें।
- पुस्तकें दान करें या शिक्षा में सहायता करें।
- अपना आचरण ईमानदार रखें।

शुक्र (भाव 12 में)

- जीवनसाथी और सामान्य रूप से स्त्रियों का आदर करें।
- शुक्रवार को चावल, दही या कपड़े जैसी सफ़ेद वस्तुएँ दान करें।
- स्वयं को और घर को साफ़ और सुगंधित रखें।
- अति-भोग से बचें।

SAMPLE

शनि

- बुज़ुर्गों और मेहनतकश लोगों की सेवा करें; गरीबों की सहायता करें।
- शनिवार को दान के रूप में सरसों का तेल चढ़ाएँ।
- शनिवार को शराब और मांसाहार से बचें।
- व्यवहार में ईमानदार रहें; किसी से धोखा न करें।

राहु

- ससुराल पक्ष से अच्छे संबंध रखें।
- ज़रूरतमंदों को जौ या सरसों दान करें।
- नीले या गहरे रंग के कपड़े बहुत अधिक न पहनें।
- पलंग के नीचे की जगह साफ़ और खाली रखें।

केतु

- कुत्तों को भोजन दें या उनकी देखभाल करें।
- ज़रूरतमंद को कंबल दान करें।
- बच्चों और मामा का आदर करें।
- गणेश मंदिर में पूजा के बाद कलाई पर धागा बाँधें।

रत्न मार्गदर्शिका

परंपरा से रत्न कुंडली के किसी सहायक ग्रह को बल देने के लिए पहने जाते हैं। रत्न केवल उसी ग्रह का पहनना चाहिए जो आपके लग्न के लिए शुभ हो; परंपरा के अनुसार अशुभ ग्रह का रत्न पहनने से उसकी कठिनाइयाँ बढ़ सकती हैं। गरुड़ पुराण में रत्नों की परीक्षा (रत्न-परीक्षा) का एक प्रसिद्ध प्रसंग है, जिसमें प्राकृतिक और दोषरहित रत्नों पर ज़ोर दिया गया है। हमेशा प्रमाणित प्राकृतिक रत्न ही खरीदें, संभव हो तो कुछ दिन आज़माकर देखें, और पहनने से पहले किसी अनुभवी ज्योतिषी से सलाह लें।

चंद्र के लिए मोती (अंक 58)

कैसे पहनें	चाँदी की अंगूठी, कनिष्ठा उँगली, सोमवार सुबह
मंत्र	ॐ सोमाय नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	4 से 7 कैरेट
क्यों	सम राशि; भाव 9 में (केंद्र/त्रिकोण)

बुध के लिए पन्ना (अंक 68)

कैसे पहनें	सोने या काँसे की अंगूठी, कनिष्ठा उँगली, बुधवार सुबह
मंत्र	ॐ बुधाय नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	3 से 6 कैरेट
क्यों	इस लग्न के लिए कारक शुभ ग्रह; मित्र राशि; भाव 12 में (दुःस्थान)

शुक्र के लिए हीरा या सफ़ेद पुखराज (अंक 75)

कैसे पहनें	चाँदी या प्लैटिनम की अंगूठी, मध्यमा या अनामिका उँगली, शुक्रवार सुबह
मंत्र	ॐ शुक्राय नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	0.5 से 1 कैरेट (हीरा)
क्यों	इस लग्न के लिए कारक शुभ ग्रह; स्वराशि; भाव 12 में (दुःस्थान)

शनि के लिए नीलम (अंक 78)

कैसे पहनें	चाँदी या पंचधातु की अंगूठी, मध्यमा उँगली, शनिवार शाम; पहले परीक्षण के रूप में पहनें

SAMPLE

मंत्र	ॐ शनये नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	3 से 5 कैरेट
क्यों	इस लग्न के लिए कारक शुभ ग्रह; सम राशि; भाव 10 में (केंद्र/त्रिकोण)

राहु के लिए गोमेद (अंक 66)

कैसे पहनें	चाँदी की अंगूठी, मध्यमा उँगली, शनिवार शाम
मंत्र	ॐ राहवे नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	5 से 8 कैरेट
क्यों	मित्र राशि; भाव 5 में (केंद्र/त्रिकोण)

केतु के लिए लहसुनिया (कैट्स आई) (अंक 60)

कैसे पहनें	चाँदी की अंगूठी, मध्यमा या कनिष्ठा उँगली, मंगलवार या गुरुवार
मंत्र	ॐ केतवे नमः, 108 बार
सामान्य वज़न	3 से 5 कैरेट
क्यों	मित्र राशि; भाव 11 में

पहनने से पहले अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल (या साफ़ पानी) से धोएँ, धूप और फूल अर्पित करें, ग्रह के मंत्र का 108 बार जाप करें, और बताए गए समय पर धारण करें। यदि लगातार असहजता महसूस हो, तो उसे उतार दें।

आधार: लाल किताब परंपरा (केवल पद्धति; उपाय सामान्य पारंपरिक उपाय हैं) — उपाय; गरुड़ पुराण (रत्न-परीक्षा प्रसंग) — रत्नों की परीक्षा।

SAMPLE

आपका व्यक्तिगत कैलेंडर

मुहूर्त परंपरा के अनुसार वे दिन शुभ माने गए हैं जब चंद्रमा आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर अनुकूल नक्षत्र में हो (तारा बल) और आपकी चंद्र राशि से गिनने पर अनुकूल भाव में हो (चंद्र बल)। महत्वपूर्ण काम की शुरुआत, यात्रा, खरीदारी और मुलाकातों के लिए इन दिनों का उपयोग करें; सावधानी वाले दिनों में कोई बड़ा काम शुरू न करें।

नवंबर 2026

शुभ दिन: 2, 4, 10, 12, 14, 18, 19, 23, 28, 30
सावधानी के दिन: 15, 20, 24

दिसंबर 2026

शुभ दिन: 9, 11, 15, 16, 17, 21, 27, 29
सावधानी के दिन: 3, 18, 22, 30

जनवरी 2027

शुभ दिन: 5, 7, 8, 11, 12, 13, 17, 22, 23, 25
सावधानी के दिन: 9, 14, 18, 26

फ़रवरी 2027

शुभ दिन: 1, 2, 4, 8, 9, 13, 20, 22, 27
सावधानी के दिन: 5, 10, 23

मार्च 2027

शुभ दिन: 1, 3, 7, 8, 13, 19, 21, 28, 30
सावधानी के दिन: 4, 10, 14, 22

अप्रैल 2027

शुभ दिन: 3, 4, 5, 9, 14, 17, 24, 27
सावधानी के दिन: 1, 6, 10, 28

मई 2027

शुभ दिन: 1, 2, 6, 13, 15, 20, 22, 24, 28, 29
सावधानी के दिन: 3, 7, 16, 25, 31

जून 2027

शुभ दिन: 3, 9, 11, 18, 20, 24, 25, 26, 30
सावधानी के दिन: 4, 12, 27

जुलाई 2027

शुभ दिन: 5, 6, 8, 15, 17, 18, 21, 22, 23, 27
सावधानी के दिन: 1, 9, 19, 24

अगस्त 2027

शुभ दिन: 3, 5, 12, 14, 18, 19, 24, 30
सावधानी के दिन: 15, 20, 21, 25

SAMPLE

सितंबर 2027

शुभ दिन: 1, 6, 8, 10, 14, 15, 20, 25, 27, 28
सावधानी के दिन: 2, 11, 17, 21

अक्टूबर 2027

शुभ दिन: 5, 7, 11, 12, 13, 17, 24, 26, 31
सावधानी के दिन: 9, 14, 18, 27

आधार: रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — तारा बल और चंद्र बल।

SAMPLE

स्रोत और अस्वीकरण

इस रिपोर्ट के फलादेश नीचे दिए शास्त्रीय ग्रंथों के सिद्धांतों के आधार पर हमारे अपने शब्दों में लिखे गए हैं। संदर्भ ग्रंथ और विषय के नाम से दिए गए हैं।

- बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है)
- वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी)
- कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी)
- मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी)
- वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी)
- कालिदास का उत्तर कालामृत
- नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि
- पृथुयशस का होरासार
- रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि
- गरुड़ पुराण (रत्न-परीक्षा प्रसंग)
- नीलकंठ की ताजिक नीलकंठी (वर्षफल)
- लाल किताब परंपरा (केवल पद्धति; उपाय सामान्य पारंपरिक उपाय हैं)

SAMPLE